हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● गुरुवार ● 19.09.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 60 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

मुख्यमंत्री ने दुमका एवं जामताड़ा जिले को लगभग 875 करोड़ की योजनाओं की दी सौगात

पिछले चार वर्षों में विकास की लम्बी लकीर खींची : हेमन्त सोरेन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जामताड़ा : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि पिछले चार वर्षों में हमारी सरकार ने हर क्षेत्र में विकास की लम्बी लकीर खींची है। कोरोना काल में देश के विभिन्न राज्यों में फंसे प्रवासी मजदूरों को लाने का कार्य हमारी सरकार ने किया था। वैश्विक महामारी कोरोना संक्रमण के समय राज्य की दीदियों ने गांव-गांव, टोला टोला में खाना बनाकर लोगों को खिलाने का काम किया था। कोरोना संक्रमण काल में हमारी दीदियों की भूमिका अहम थी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मैंने उसी समय यह संकल्प लिया था कि दीदियों को राज्य सरकार अवश्य मदद करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य की आधी आबादी के लिए 'झारखण्ड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना' ऐसी योजना है, एक ऐसा कदम है जो महिला सशक्तिकरण में इस राज्य के लिए मील का पत्थर साबित होने जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार गांव से चल रही है, रांची हेडक्वार्टर से नहीं। मुख्यमंत्री बुधवार को जामताड़ा जिला के कुंडहित प्रखंड अंतर्गत धनुकडीह मैदान में आयोजित 'आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार' कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

'आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार' कार्यक्रम में योजनाओं का उद्घाटन करते सीएम

200 यूनिट बिजली फ्री, पुराना बिजली बिल भी हुआ माफ

मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्व की सरकार द्वारा राज्य में 11 लाख राशन कार्ड डिलीट कर दिया गया। वर्तमान राज्य सरकार ने 20 लाख नया हरा राशन कार्ड बनाकर गरीबों के बीच बांटने का कार्य किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार खुले बाजार से भी अनाज खरीद कर राशन वितरण करती है। इस राज्य के गरीब लोगों को आवास देने के लिए हम लोगों ने तीन वर्ष तक केंद्र सरकार से आग्रह करते रहे, लेकिन गरीबों का आवास आवंटन नहीं हुआ अंततः हमने निर्णय लिया और राज्य के गरीब लोगों को अब हमारी सरकार अबुआ आवास देगी। आने वाले 5 वर्ष के अंदर सभी 20 लाख गरीबों को अबुआ आवास से आच्छादित किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने राज्य में बिजली उपभोक्ताओं का 200 यूनिट तक बिजली फ्री किया और 200 यूनिट तक के पुराने बकाया बिजली बिल को माफ करने का काम किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने आंगनबाड़ी सहयिका, सेविका, जल सहिया सहित राज्य सरकार के विभिन्न विभागों में कार्यरत कर्मियों समस्याओं एवं परेशानियों का समाधान करने का कार्य किया है।

सभी वर्ग-समुदाय को मिल रहा योजनाओं का लाभ

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के भीतर हर जाति, समुदाय और हर वर्ग के लोगों को योजनाओं का लाभ राज्य सरकार दे रही है। किसी जाति विशेष के लिए योजनाएं नही बनाई गई है। 'झारखण्ड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना' का लाभ भी सभी वर्ग-समुदाय की माताओं-बहनों को मिल रहा है। हमारी सरकार योजनाओं के संचालन में किसी के साथ भेदभाव नहीं करती है।

इस अवसर पर 132/33 केवी ग्रीड सब-स्टेशन कुण्डहित एवं संबंधित द्विपथ लिलो संचरण लाईन का ऊर्जान्वयन किया गया। इस ग्रीड सब-स्टेशन का निर्माण मुख्यमंत्री एवं विधानसभा अध्यक्ष रबीन्द्रनाथ महतो के संयुक्त प्रयास से हुआ है, जिसकी ऊर्जान्वित क्षमता 2 ७ 50 एमवीए (100 एमवीए), जिससे कई विद्युत शक्ति उपकेन्द्र जैसे 33 केवी नाला, कुण्डहित, बामनडीहा, फतेहपुर इत्यादि को विद्युत आपूर्ति की जानी है, जिससे लाभान्वित होने वाले प्रखंड नाला, कुण्डहित, बामनडीहा एवं फतेहपुर क्षेत्र के निवासियों को विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जा सकेगी। ये ग्रीड सब-स्टेशन आगामी 15 से 20 सालों के विद्युत भार को वहन करने में सक्षम है।

इस परियोजना के निर्माण में लगभग 82.37 करोड़ रुपये की लागत आई है। इस नवनिर्मित ग्रीड को विद्युत आपूर्ति जामताड़ा एवं मधुपुर स्थित 132/33 केवी ग्रीड सब-स्टेशन से उपलब्ध कराई जायेगी। इस ग्रीड के ऊर्जान्वयन के उपरान्त करीब 80 मेगावाट अतिरिक्त विद्युत की आपूर्ति की जा सकेगी, जिससे जामताड़ा जिला के विभिन्न क्षेत्र नाला, कुण्डहित, बामनडीहा एवं फतेहपुर इत्यादि क्षेत्र के लाखों लोग प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित होंगे एवं लोवोल्टेज की समस्या से निजात मिल जाएगी। ये ग्रीड सब-स्टेशन का निर्माण सरकार के 30 साल के विजन को देखते हुए सम्मानित निवासियों को गुणवत्तापूर्ण बिजली आपूर्ति करने के उद्देश्य से बनाया गया है।

राष्ट्रपति आज आएंगी रांची, सुरक्षा में दो हजार जवान किए गए तैनात

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के रांची के दो दिवसीय दौरे को लेकर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। राष्ट्रपति के दौरे को लेकर पुलिस प्रशासन की ओर से तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। रांची पुलिस के जरिये राष्ट्रपति की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। सुरक्षा के तौर पर छह आईपीएस सहित दो हजार जवानों की तैनाती की गई है। राष्ट्रपति का कारकेड जिन-जिन मार्गों से गुजरेगा, वहां पर स्थित ऊंची भवनों को चिन्हित किया गया है। राष्ट्रपति के आगमन से पहले ऊंचे भवनों में पुलिस फोर्स की तैनाती की जाएगी।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 19 सितंबर को अपने दो दिवसीय झारखंड दौरे पर रांची आ रही हैं। राष्ट्रपति 20 सितंबर को रांची के नामकुम स्थित इंडियन कौंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च के कार्यक्रम में शिरकत करेंगी। ऐसे में रांची एयरपोर्ट से लेकर राजभवन और राजभवन से लेकर नामकुम कार्यक्रम स्थल तक का पूरे इलाके को पुलिस छावनी में तब्दील कर दिया गया है।

राष्ट्रपति का काफिला जिस मार्ग से गुजरेगा, वहां पर तीन लेयर की सुरक्षा रहेगी। राष्ट्रपति की सुरक्षा में छह आईपीएस के अलावा दस डीएसपी, 25 इंस्पेक्टर, 20 दारोगा, दो हजार से अधिक अतिरिक्त जवानों की तैनाती की गई है। साथ ही सुरक्षा में बम निरोधक दस्ता, जैप, आईआरबी, रैफ और जगुआर की टीम को भी तैनात किया गया है। कार्यक्रम स्थल के आस-पास अवैध पार्किंग वर्जित रहेगा। कार्यक्रम स्थल में सिर्फ पास युक्त लोगों को ही प्रवेश करने दिया जाएगा।

एसएसपी चंदन सिन्हा ने राष्ट्रपति की सुरक्षा में तैनात सभी अफसरों और कर्मियों को सतर्क रहने के निर्देश दिया हैं। एसएसपी ने थानेदारों को निर्देश दिया है कि वे लगातार एंटी क्राइम चेकिंग अभियान चलाए। खास तौर पर राष्ट्रपति का जिस इलाके में कार्यक्रम है, उन जगहों पर थानेदार लगातार गश्त लगाएं। होटल और लॉज की जांच करें। एसएसपी ने कहा कि किसी भी हालत में सुरक्षा में चूक नहीं होनी चाहिए। ड्यूटी के दौरान अगर कोई लापरवाही बरतता है तो ऐसे पुलिसकर्मियों पर सीधी कार्रवाई की जाएगी।

राष्ट्रपति के आगमन को लेकर ट्रैफिक व्यवस्था में आज और कल रहेगा बदलाव

रांची : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के 19 और 20 सितंबर को रांची आगमन के मद्देनजर रांची शहर की यातायात व्यवस्था में बदलाव किया गया है। इस संबंध में ट्रैफिक एसपी ने बुधवार को रूट प्लान जारी किया है। जारी रूट प्लान के अनुसार 19 सितंबर को रांची में संध्या 05:00 बजे से रात्रि 08:30 बजे तक सभी बड़ी, छोटी मालवाहक वाहनों, बसों, सवारी वाहनों का प्रवेश परिचालन वर्जित रहेगा। आकस्मिक सेवा के वाहनों को छोड़कर। इसी प्रकार 19 सितंबर को रातू की काठीटांड की ओर जाने वाली सभी वाहन शहर से कांके की ओर से रिंग रोड होते हुए गंतव्य स्थान तक जा सकते है। साथ ही 19 सितंबर को एचईसी गेट से लेकर अरगोड़ा चौक, सहजानन्द चौक, किशोरगंज चौक, न्यू मार्केट चौक, हॉटलिप्स चौक तक के मार्ग उपयोग समय संध्या 05:00 बजे से 08:30 बजे तक कम से कम करें। आवश्यकतानुसार अन्य मार्गों को अल्प समय के लिए डाइवर्ट और बंद किया जा सकता है। 20 सितंबर को रांची शहर में सुबह 08:00 बजे से 12:30 बजे तक सभी बड़ी, छोटी मालवाहक वाहनों, बसों, सवारी वाहनों का प्रवेश, परिचालन वर्जित रहेगा। आकस्मिक सेवा के वाहनों को छोड़कर। 20 सितंबर को दिन में समय 09:00 बजे से 12:00 बजे तक अरगोड़ा चौक से कडरू पुल एवं कडरू पुल से मेकॉन चौक तक सभी प्रकार के वाहनों का प्रवेश वर्जित रहेगा। आकस्मिक सेवा के वाहनों को छोड़कर। 20 सितंबर को दुर्गा सोरेन चौक से लेकर रामपुर चौक रिंग रोड तक बड़ी वाहनों, बसों, सवारी वाहनों का प्रवेश और परिचालन वर्जित रहेगा। कार्यक्रम में भाग लेने वाले वाहनों एवं आकस्मिक वाहनों को छोड़कर। 20 सितंबर को समय 10:00 बजे से 03:00 बजे तक नामकुम चौक, सदाबहार चौक, घाघरा रोड होते हुए जैप-01 कमाण्डेन्ट आवास चौक तक सभी प्रकार के वाहनों के प्रवेश और परिचालन वर्जित रहेगा। आकस्मिक सेवा के वाहनों को छोड़कर।

एक नजर

झारखंड कैबिनेट की बैठक कल

रांची : झारखंड कैबिनेट की बैठक 20 सितंबर को होगी। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन की अध्यक्षता में होने वाली इस बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाएंगे। शाम चार से प्रोजेक्ट भवन सभागार में बैठक आयोजित की जाएगी। इस संबंध में बुधवार को मंत्रिमंडल सचिवालय एवं समन्वय विभाग ने आदेश जारी किया है।

गृह मंत्री कल साहिबगंज से भाजपा की परिवर्तन यात्रा की करेंगे शुरुआत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड में कभी भी विधानसभा चुनाव का ऐलान हो सकता है। इसके मद्देनजर भाजपा के वरिष्ठ नेता और गृह मंत्री अमित शाह 20 सितंबर को साहिबगंज के भोगनाडीह से परिवर्तन यात्रा की शुरुआत करेंगे, जो कि तीन अक्टूबर तक चलेगा। यह यात्रा पूरे प्रदेश में 200 से अधिक प्रखंडों से गुजरती हुई लगभग 5,400 किलोमीटर की दूरी तय करेगी। राज्य के सभी 81 विधानसभा क्षेत्रों से होकर यह यात्रा गुजरेगी। कार्यक्रम में पार्टी के कई राष्ट्रीय स्तर के नेता भी शामिल होंगे।

परिवर्तन यात्रा में केंद्रीय सड़क-परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, योगी आदित्यनाथ, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव, ओडिश के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी समेत कई नेता शामिल होने वाले हैं। केंद्रीय मंत्री नितिन गड़करी जहां 22 सितंबर को झारखंड आने वाले हैं, वहीं स्मृति ईरानी 23 सितंबर को, 28 सितंबर को राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और उसी दिन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी आने वाले हैं। योगी आदित्यनाथ का जहां 21, 22, 24, 26 और 30 सितंबर को दौरा है, वहीं 24 सितंबर को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव का खूंटी और विष्णुदेव साय की सिमडेगा में सभा है।

हो समाज की भाषा और संस्कृति के संरक्षण के लिए मोदी सरकार संकल्पित : हिमंता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : असम के मुख्यमंत्री और झारखंड विधानसभा चुनाव के सह प्रभारी हिमंता बिस्वा सरमा ने दो दिन पहले हो समाज के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की। मिलने वालों में आदिवासी हो समाज युवा महासभा के महासचिव गब्बर सिंह हेंब्रम, पूर्व सांसद गीता कोड़ा सहित अन्य शामिल थे। प्रतिनिधिमंडल ने एक ज्ञापन भी सौंपा।

बिस्वा सरमा ने बताया कि झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और असम में रहने वाले आदिवासी 'हो' समाज के परिवारजनों की कई वर्षों से मांग थी कि 'हो' भाषा (वारंग क्षिति लिपि) को भारतीय संविधान

की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाए। इस संदर्भ में मैंने आदिवासी 'हो' समाज युवा महासभा और अखिल भारतीय हो भाषा एक्शन कमेटी के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की।

उन्होंने कहा कि गृह मंत्री ने इस प्रतिनिधिमंडल की बात सुनी और आश्वासन दिया कि भारत सरकार उनकी इस मांग पर विचार करेगी। साथ ही यह भी कहा कि मोदी सरकार देश के हर समाज की संस्कृति को संरक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि झारखंड में 18 लाख, उड़ीसा में 14 लाख, असम में 7 लाख, छत्तीसगढ़ में 50 हजार जबकि अन्य जगहों पर लगभग 1 लाख लोग हो भाषा बोलते हैं।

उन्होंने कहा कि हो भाषा कि अपनी वारंग चिति लिपि है, अपना शब्दकोष है। इतिहास, सामाजिक विज्ञान आदि में हो भाषा में शोध प्रकाशित हुए हैं। इनके साहित्य देवनागरी, उड़िया, बंगाली, रोमन लिपि में भी प्रकाशित हुए हैं। झारखंड राज्य में हो भाषा को प्राथमिक से लेकर विश्व विद्यालय तक पढ़ाई जाती है।

जम्मू कश्मीर में पहले चरण का चुनाव खत्म, 58.11 प्रतिशत हुआ मतदान

एजेंसी

जम्मू-कश्मीर : जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव में पहले चरण के लिए बुधवार शाम 6 बजे वोटिंग खत्म हो गई। आज 7 जिलों की 24 विधानसभा सीटों के लिए मतदान हुआ। शाम 5 बजे तक का मतदान प्रतिशत 58.19 प्रतिशत रहा। फाइनल आंकड़ा आना बाकी है। चुनाव आयोग के अनुसार अब तक मतदान शांतिपूर्ण और घटना-मुक्त रहा है। जम्मू और कश्मीर के मुख्य चुनाव अधिकारी पी. के. पोल ने कहा, मतदान बड़े पैमाने पर आयोजित किया जा रहा है। जिस तरह से मतदान आगे बढ़ रहा है, उससे उच्च मतदान का संकेत मिलता है। हमें 60 प्रतिशत से अधिक मतदान की उम्मीद है।

पहले चरण में 23.27 लाख से ज्यादा मतदाता - 11.76 लाख पुरुष और 11.51 लाख महिलाएं मतदान करने के पात्र हैं। इस चरण में चिनाब घाटी के डोडा, किश्तवाड़ और रामबन जिलों के साथ-साथ दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग, पुलवामा, कुलगाम और शोपियां जिलों में 24 विधानसभा क्षेत्रों में चुनाव होंगे। इस बीच, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर के लोगों से बड़ी संख्या में मतदान करने और लोकतंत्र के उत्सव को मजबूत करने का आग्रह किया। इसी तरह, कांग्रेस महासचिव मल्लिकार्जुन खड़गे, जम्मू-कश्मीर के एलजी मनोज सिन्हा, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और अन्य नेताओं ने युवाओं, महिलाओं और पहली बार मतदान करने वालों से अपने मताधिकार का इस्तेमाल जिम्मेदारी से करने का आह्वान किया है।

एक राष्ट्र, एक चुनाव के प्रस्ताव को केन्द्रीय मंत्रिमंडल की मंजूरी

एजेंसी

नयी दिल्ली : केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने देश में लोकसभा, विधानसभाओं और स्थानीय निकायों के चुनाव एक साथ कराने के मोदी सरकार के महत्वाकांक्षी लक्ष्य 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' को लागू करने के संबंध में एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए इस बारे में रामनाथ कोविंद समिति की सिफारिशों को बुधवार को मंजूरी दे दी।

सूचना और प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुई बैठक में लिए गये निर्णयों की जानकारी देते हुए एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, मंत्रिमंडल ने बुधवार को एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है और एक राष्ट्र, एक चुनाव के संबंध में उच्चस्तरीय समिति की सिफारिशों को मंजूरी दे दी है।

श्री वैष्णव ने कहा कि सरकार इस व्यवस्था को दो चरणों में लागू करने पर विचार कर रही है। पहले

चरण में लोकसभाओं और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने का प्रस्ताव है जबकि दूसरे चरण में इनके साथ ही स्थानीय निकायों के चुनाव भी कराये जायेंगे।

उन्होंने कहा कि एक राष्ट्र,एक चुनाव के प्रस्ताव को देशभर में व्यापक समर्थन मिला है। इससे पहले संसद की कुछ समितियों तथा सामाजिक संगठनों ने भी इस प्रस्ताव की वकालत की है। उन्होंने कहा कि इससे आर्थिक वृद्धि को गति मिलेगी। उल्लेखनीय है कि कोविंद समिति ने अपनी सिफारिश में कहा है कि बार बार चुनाव के कारण आदर्श आचार चुनाव संहिता लागू होने से सरकारों के योजना संबंधी फैसले प्रभावित होते हैं और विकास के कार्यों की गति बाधित होती है।

उल्लेखनीय है कि कोविंद समिति को दिये गये ज्ञापन में भारतीय जनता पार्टी और उसके तमाम सहयोगी दलों ने इस अवधारणा का स्पष्ट समर्थन किया था जबकि कांग्रेस, आम आदमी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी तथा तृणमूल कांग्रेस जैसे दलों ने इस पर अपनी अलग अलग आपत्तियां दर्ज करायी थी।

जानकारों का कहना है कि सरकार को एक राष्ट्र एक चुनाव की व्यवस्था लागू करने के लिए संविधान में संशोधन का विधेयक लाना होगा।

'एक देश एक चुनाव' लोकतंत्र को और अधिक जीवंत बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम : पीएम

नयी दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को 'एक देश एक चुनाव' पर केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय की सराहना करते हुए कहा कि यह हमारे लोकतंत्र को और अधिक जीवंत एवं सहभागी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर पोस्ट कर कहा, कैबिनेट ने एक साथ चुनाव कराने संबंधी उच्च स्तरीय समिति की सिफारिशों को स्वीकार कर लिया है। मैं इस प्रयास का नेतृत्व करने और विभिन्न हितधारकों से परामर्श करने के लिए हमारे पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द की सराहना करता हूं। यह हमारे लोकतंत्र को और अधिक जीवंत एवं सहभागी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके अलावा प्रधानमंत्री ने केंद्रीय मंत्रिमंडल के अन्य निर्णयों को लेकर भी पोस्ट किया। उन्होंने कहा कि देशभर के जनजातीय समुदायों के उत्थान और उनके सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए हम कृतसंकल्प हैं। इसी दिशा में एक बड़ी पहल करते हुए हमने प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान को मंजूरी दी है। इससे हमारे 5 करोड़ से ज्यादा आदिवासी भाई-बहनों को लाभ होगा। उन्होंने कहा कि अपने किसान भाई-बहनों के कल्याण के लिए हम निरंतर बड़े कदम उठा रहे हैं। इसी कड़ी में आज हमारी सरकार ने प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान को स्वीकृति दी है। इससे ना केवल किसानों को अपनी फसल का लाभकारी मूल्य मिलेगा बल्कि उपभोक्ताओं को भी फायदा होगा।

पांच लाख का इनामी जेजेएमपी का सब जोनल कमांडर गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

लातेहार : लातेहार पुलिस ने गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए झारखंड जनमुक्ति परिषद (जेजेएमपी) के सब जोनल कमांडर शिवराज सिंह को गिरफ्तार कर लिया। शिवराज सिंह पांच लाख रुपए का इनामी नक्सली है। शिवराज को लातेहार सदर थाना क्षेत्र के दुबियाही फुटबॉल मैदान के पास से गिरफ्तार किया गया। नक्सली शिवराज सदर थाना क्षेत्र के भैंसमारा गांव का रहने वाला है। बुधवार को प्रेस वार्ता करते हुए डीएसपी अरविंद कुमार ने बताया कि लातेहार पुलिस अधीक्षक को गुप्त सूचना मिली थी कि सब जोनल कमांडर शिवराज सिंह अपने कुछ साथियों के साथ किसी हिंसक घटना को अंजाम देने के लिए सदर थाना क्षेत्र के कोन जंगल के आसपास भ्रमणशील है। सूचना मिलने के बाद पुलिस की टीम गठित की गई और नक्सलियों के खिलाफ छापामारी अभियान चलाई गई। इस दौरान दुबियाही खेल के मैदान के पास जब पुलिस पहुंची तो एक व्यक्ति पुलिस को देखकर जंगल की ओर भागने लगा। पुलिस ने घेराबंदी करते हुए उसे गिरफ्तार किया और जब उसकी छानबीन की गई तो पता चला कि गिरफ्तार व्यक्ति उग्रवादी संगठन जेजेएमपी का सब जोनल कमांडर शिवराज सिंह है। डीएसपी ने बताया कि गिरफ्तार नक्सली पर लातेहार जिले के विभिन्न थाना क्षेत्र में 13 से अधिक नक्सली हिंसा के मामले दर्ज हैं।

उन्होंने कहा कि शिवराज सिंह पिछले कई साल से संगठन में सक्रिय था। पांच वर्ष पूर्व यह जेल भी जा चुका था। परंतु जेल से निकलने के बाद फिर वह नक्सली संगठन के साथ जुड़ गया था। छापामारी दल में पुलिस इंस्पेक्टर प्रमोद कुमार सिन्हा समेत अन्य पुलिस अधिकारियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

एक नजर

चौपारण में होगा निःशुल्क स्वास्थ्य मेला का आयोजन

बरही/चौपारण : महालक्खी चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक सह भाजपा नेता अविनाश आर्या चंद्रवंशी द्वारा कल 19 सितंबर गुरुवार को बरही अनुमंडल स्तरीय स्वास्थ्य मेला का आयोजन किया जाएगा। यह मेला चौपारण के ब्लॉक मैदान में सुबह 8:30 बजे से शाम 6 बजे तक चलेगा। अविनाश आर्या चंद्रवंशी ने जानकारी देते हुए बताया कि इस स्वास्थ्य मेले में झारखंड के प्रमुख अस्पतालों और चिकित्सकों की टीम शामिल होगी। इनमें मेडिका हॉस्पिटल रांची, मेदांता हॉस्पिटल, राज हॉस्पिटल, कुरेसटा हॉस्पिटल, पारस हॉस्पिटल, एचईसी हॉस्पिटल, गंतव्य फाउंडेशन आई हॉस्पिटल, दृष्टि आई हॉस्पिटल, किरण आई हॉस्पिटल, हेल्थ प्वाइंट हॉस्पिटल, एचसीजी कैंसर हॉस्पिटल, और वृंदावन पॉलीडॉक हॉस्पिटल के चिकित्सक शामिल रहेंगे। साथ ही बरही अनुमंडलीय अस्पताल और चौपारण सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सक भी इस आयोजन में शामिल होंगे। यह एक दिवसीय स्वास्थ्य मेला बरही अनुमंडल और इसके आस-पास के क्षेत्रों के मरीजों को निःशुल्क इलाज, जाँच और दवा वितरण की सुविधा प्रदान करेगा। चौपारण, बरही, पदमा, चंदवारा और आसपास के क्षेत्रों के मरीज इस मेले में स्वास्थ्य लाभ ले सकते हैं।

महिला को सांप ने काटा

बरही : चौपारण प्रखंड के बच्छई गांव में राजेंद्र ठाकुर की पत्नी को सांप काटने की सूचना मिली, जिसकी सूचना मिलते ही तिलेश्वर साहू सेना के सदस्यों ने मदद की। तिलेश्वर साहू सेना के बरही प्रखंड उपाध्यक्ष सह मुखिया प्रतिनिधि छोटन ठाकुर, बरही मीडिया प्रभारी बबलू साहू, बरही प्रखंड उपाध्यक्ष प्रकाश दास, भोली पासवान और बरही प्रखंड युवाध्यक्ष सन्नी गुप्ता ने बिना समय गंवाए उन्हें तुरंत बरही अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका इलाज तुरंत शुरू किया गया। टीएसएस सेना के सदस्यों ने उनके शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना की और इस कठिन समय में परिवार को हिम्मत और ढांढ़स बंधाया।

जनमानव कल्याण फाउंडेशन ने जम्मू-कश्मीर पुलिस के एक जवान की दिल्ली में बचाई जान

हजारीबाग : जनमानव कल्याण फाउंडेशन इन दिनों अपनी कार्यों को लेकर चर्चा में देखा जा रहा है फाउंडेशन ने चंद्र शेखर जो जम्मू के रहने वाले है जो की जम्मू कश्मीर में पुलिस में कार्यरत है इनका किडनी खराब होने से इनको डॉक्टरों द्वारा किडनी ट्रांसप्लांट करने बोला गया जिसके कारण इनको ब्लड की अत्यंत जरूरत थी यह बात संस्था के कर्मठ सदस्य चंदन कुमार को जैसे पता चला तुरंत इंस्टीट्यूट ऑफ लीवर एंड बिलियरी साइंस हॉस्पिटल (दिल्ली) पहुंच कर ब्लड डोनर जैद, नासीर, जतिन और यश को अस्पताल बुलाया और रक्त दान कराया सर्जरी के दौरान, उन्हें अत्यधिक मात्रा में खून की आवश्यकता पड़ी। इसी समय, जनमानव कल्याण फाउंडेशन के सदस्यों ने आगे आकर जवान के लिए रक्तदान किया, जिससे उसकी सर्जरी सफलतापूर्वक पूरी हो सकी।

नर्सिंग होम संचालक की हत्या के मामले में पुलिस ने एक को किया गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : प्राइवेट नर्सिंग होम संचालक परशुराम प्रसाद की हत्या 6 अगस्त को मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के लाखे कब्रिस्तान के पास अपराधियों द्वारा गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। उसके बाद अपराधी वहां से फरार हो गए थे। परशुराम प्रसाद नोंनगांव थाना पथलगडा जिला चतरा के रहने वाले थे और वर्तमान में लाखे न्यू कालोनी में रहते थे। घटना के बाद मुफ्फसिल थाना में कांड संख्या 159/24 दर्ज कर घटना में शामिल अपराधियों की खोज बिन में पुलिस लग गई। घटना के लगभग डेढ़ महीने बाद 17 सितंबर को घटना को अंजाम देनेवाले एक अपराधी उमेश कुमार पांडेय को पुलिस ने हजारीबाग रोड के हुपाद के आगे जंगल के पास से धर दबोचा। उसके पास से एक लोडेड देशी पिस्टल जिसमें 7.65 एमएम का जिंदा गोली लोड था उसे भी बरामद किया। साथ ही कांड में प्रयुक्त अपाची मोटरसाइकिल और एक मोबाइल को भी बरामद किया है। बुधवार को एसपी अरविंद कुमार सिंह प्रेस वार्ता कर बताया की घटना के उद्भेदन के लिए सदर एसडीपीओ कुमार शिवाशीष के नेतृत्व में एक टीम बना कर अनुसंधान में लगाया। टीम द्वारा कांड के अनुसंधान के क्रम में लगातार छापामारी और सूचना संकलन एवम तकनीकी शाखा के सहयोग से इस कांड के उद्भेदन के लिए काम करती रही। एसपी ने बताया की इस कांड को अंजाम देने वाले एक अन्य अपराधी धनु पासवान पिता अर्जन राम दिपुगढा थाना कोर्रा को टंडवा थाना में गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। जिसे रिमांड में लेने की करवाई की जा रही है। साथ ही कांड में संलिप्त अन्य अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी जारी है। गिरफ्तार अपराधी उमेश कुमार पांडेय, पिता बासुदेव पांडेय, ग्राम - सेरेंगढ़ा, थाना बालूमाथ, जिला लातेहार का रहने वाला है ' छापेमारी दल में सदर एसडीपीओ कुमार शिवाशीष, मुफ्फसिल प्रभारी कुणाल किशोर, टाटीझरिया प्रभारी सरोज सिंह चौधरी, पुअनि जितेंद्र भगत, सत्यम, एएसआई साकेश कुमार सिंह के अलावा मुफ्फसिल थाना की पुलिस शामिल थे ।

भाजपा नेता प्रदीप प्रसाद ने बिजलीकर्मियों कों अंग वस्त्र देकर किया सम्मानित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : भाजपा नेता प्रदीप प्रसाद ने बिजली के निष्ठावान और समर्पित कमीर्यों को अपने झिंझरिया पुल स्थित कार्यालय में अंग वस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। प्रदीप प्रसाद नें कहा कि भारी बारिश में योद्धा के तरह बिजली कर्मियों ने काम किया है। श्री प्रसाद ने कहा कि जब शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों मे पिछले दो दिनों से बिजली संकट से पूरा क्षेत्र अंधेरा था। उस समय भारी बारिश मे भी लगातार काम किया है। उन्होनें कहा कि जनसेवा सदैव जारी रहेगा। बिजली कर्मी काफी उत्साहित दिखें सभी ने भाजपा नेता प्रदीप प्रसाद के इस सम्मान के लिए आभार जताया। मौके पर अवधेश कुमार, अजय कुमार, चन्द्रप्रकाश, अनूप कुमार, कृष्णा कुमार, सतीश, अधिवक्ता श्री प्रकाश झा, वीरेन्द्र कुमार वीरू, मनीष ठाकुर, रामअवतार शर्मा, अमृत पासवान, राजु महतो, पवन कुमार, सुमन राय, दीपक कुमार, पप्पु यादव, पूर्व मंडल अध्यक्ष रामचन्द्र कुशवाहा,मंजीत, विवेक, मुखिया संघ अध्यक्ष राजेश गुप्ता, उप प्रमुख विमल गुप्ता सहित दजार्नों ऊर्जा मित्र उपस्थित थे।

अनियंत्रित ट्रेलर ने प्रीतम कुमार को रौंदा, हुई मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : प्रखंड के जीटी रोड के पिलर संख्या 18 के पास दर्दनाक हादसा विश्वकर्मा पूजा के दिन हुआ। हादसे में बाइक सवार एक युवक का मौत हो गया। घटना के बाद आसपास लगे सीसीटीवी को खंगाला गया तो घटना का पूरा लाइव सामने आ गया। सीसीटीवी में युवक एक बाइक के साथ सड़क को पार करने के लिए निमार्णाधीन फ्लाई ओवर के नीचे खड़ा दिख रहा है। दो कंटेनर पास करने के बाद बरही की ओर से आ रही तीसरा कंटेनर संख्या 28 जीबी 3739 पूरी गति से सड़क के किनारे खड़े युवक की ओर अचानक मुड़ गया और युवक को रौंदते हुए एक बोलेरो को ठोकते हुए सड़क के दूसरे लाइन को पार करते हुए जीटी रोड के किनारे स्तिथ एक साइकिल दुकान में घुस गया। खैरियत यह रहा कि उस समय सड़क के दूसरे किनारे की ओर से कोई गाड़ी या बाइक या आदमी नहीं था। नहीं घटना और भी भयावह हो सकती थी।

मृतक युवक घर का था इकलौता चिराग

घटना में मृतक युवक की पहचान चौपारण चट्टी निवासी पिंटू केशरी के पुत्र प्रीतम केशरी उम्र 21 वर्ष के रूप में की जा रही है। वह अपने घर का इकलौता वारिश था। यह खबर तुरन्त ही आग की तरह पूरे क्षेत्र में फैल गई थी। इधर मृतक युवक के पहचान के बाद स्थानीय लोगों में और आक्रोश बढ़ गया। और जीटी रोड को जाम कर दिया था। आक्रोशित लोगों का कहना है कि जीटी रोड में कछुआ गति के चाल से चल रहा फ्लाई ओवर निर्माण के कारण ही आए दिन सड़क दुर्घटना में लगातार इजाफा हो रहा है। लोग मौत का कारण एनएचएआई कंस्ट्रक्शन कंपनी का लापरवाही बताया। सड़क जाम कर एनएचएआई कंस्ट्रक्शन कंपनी पर कार्रवाई और मुवाबजे कि मांग करने लगे। लगभग 5 से छह घण्टो के बाद जाम हटाने के लिए पुलीस को हल्का बल का प्रयोग करना पड़ा तब कहीं जाकर रात के साढ़े दस बजे जीटी रोड से जाम हटा।

राज प्रकाश ने मोदी सरकार के द्वारा बदले गये कानूनों का किया स्वागत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : राज प्रकाश अधिवक्ता ने मोदी सरकार के द्वारा बदले कानून व्यवस्था को काफी सराहा है राज प्रकाश अधिवक्ता ने कहा की आज देश की कानून व्यवस्था को मोदी सरकार ने बदल दिया है 1860 की अंग्रेजो के शासन काल की बनी हुई कानून व्यवस्था को बदलते हुए भारत सरकार ने भारतीय न्याय व्यवस्था को बदलते हुए जुलाई 2024 में भारतीय न्याय संहिता 2024 लायी है जो हमारे बदलते कानून के बदलाव से जनता के लिए न्याय संगत भी है और पुराने भारतीय न्याय संहिता 1860 के बदले स्वरूप से भारत के लोगो को इस नए कानून प्रक्रिया से मदद मिलेगी। सबसे अच्छी बात ये है कि सभी वर्ग के लोगो को इस नयी व्यवस्था से इन्साफ मिलेगा। इस कानून व्यवस्था से आम जनमानस को इंसाफ मिलने में काफी आसानी होगी। हम वकीलों का ये भी धरना रहता है की निर्दोष किसी भी कानूनी पचड़े में न फसे मोदी सरकार ने जो कहा की सब का साथ सब का विकास जो आज चरितार्थ होता नजर आ रहा है।

अमित सिन्हा ने रितिका तिर्की को वंदे भारत एक्सप्रेस की सहायक लोको-पायलट बनने पर दी शुभकामनाएं

हजारीबाग : हमें गर्व है झारखंड की बेटियों पर, जिन्होंने अपने साहस और समर्पण से राज्य और देश का नाम रोशन किया है। झारखंड की 27 वर्षीय रितिका तिर्की, जो गुमला जिले से हैं, वंदे भारत एक्सप्रेस की सहायक लोको-पायलट के रूप में देश की पहली आदिवासी महिला बनने का गौरव हासिल कर चुकी हैं। उनका यह कदम महिला सशक्तिकरण और आदिवासी समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत है। रितिका तिर्की ने अपने कठिन परिश्रम और संकल्प के बल पर यह उपलब्धि हासिल की है, जो न केवल उनके परिवार और झारखंड के लिए गर्व का विषय है, बल्कि पूरे देश की महिलाओं के लिए एक मिसाल है। जल, जंगल और बिरसा की धरती से उठकर उन्होंने यह साबित किया है कि यदि हिम्मत और मेहनत हो तो कोई भी मंजिल पाना असंभव नहीं है।

हर्ष अजमेरा ने विश्वकर्मा पूजा पर पंडालों का किया दौरा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : भाजपा नेता हर्ष अजमेरा ने विश्वकर्मा पूजा के पावन अवसर पर शहर तथा ग्रामीण क्षेत्रों के विभिन्न पूजा पंडालों का दौरा किया और भगवान विश्वकर्मा की पूजा-अर्चना एवं आरती की। इस अवसर पर उन्होंने भगवान विश्वकर्मा से समाज की सुख,समृद्धि एवं विकास की प्रार्थना की। इसी क्रम मे सदर विधानसभा के अंतर्गत स्थित सिलवार खुर्द ग्राम में आयोजित पूजा अर्चना में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए, आयोजन मंडली वीर बजरंग क्लब के द्वारा आत्मीयता के साथ स्वागत व अभिनंदन किया गया, क्लब के द्वारा भव्य संस्कृति कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन श्री अजमेरा के द्वारा फीता काटकर विधिवत रूप से किया गया। क्षेत्र के नन्हे नन्हे बच्चों ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से लोगों को प्रोत्साहित किया। इसके उपरांत हर्ष अजमेरा शहर के प्रसिद्ध बिल्डर समृद्धि कंस्ट्रक्शन में आयोजित पूजा अर्चना में सम्मिलित हुई। जहां के संचालक सुरेश कुमार सौरभ जैन पाटोदी के द्वारा आत्मीयता से स्वागत व अभिनंदन किया गया जिसके बाद श्री अजमेरा ने विश्वकर्मा भगवान की आरती मे शामिल होकर क्षेत्र की जनता के सुख शांति समृद्धि की मंगल कामना की। इस दौरान श्री अजमेरा ने उपस्थित भक्तों से मुलाकात कर उन्हें शुभकामनाएं दीं।

ग्रामीण खेल प्रतिभा को निखारकर उन्हें प्लेटफॉर्म प्रदान करना है : मनीष जायसवाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल द्वारा हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सभी पांचों विधानसभा क्षेत्र के सभी 22 प्रखंडों में सांसद खेल महोत्सव- 2024 के तहत नमो फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में बुधवार को हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र के दारू प्रखंड स्थित रामदेव खरिका फुटबॉल मैदान में नमो फुटबॉल टूर्नामेंट, दारू का विराट शुरूआत हुआ। यहां टूर्नामेंट का विधिवत उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल और विशिष्ट अतिथि समाजसेवी श्रद्धानंद सिंह, भाजपा जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह, भाजयुमो जिला अध्यक्ष राजकरण पांडेय, भाजपा के किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष इंद्रनारायण कुशवाहा और भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता सहित अन्य गणमान्य लोगों ने संयुक्त रूप से मशाल जलाकर, खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर और फुटबॉल में किक मारकर किया। उद्घाटन से पूर्व अतिथि मनीष जायसवाल सहित अन्य अतिथियों का झुमरा चौक से मोटरसाइकिल जाति के साथ भाजपा कार्यकताओं, युवा खिलाड़ियों और बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों ने ढोल-ताशे के गड़गड़ाहट के साथ जमकर आतिशबाजी करते हुए स्वागत करते हुए मैदान में प्रवेश कराया। टूर्नामेंट के उद्घाटन के दौरान सांसद मनीष जायसवाल द्वारा सभी खिलाड़ियों को भेंट किए गए रंग-बिरंगे आकर्षक नमो जर्सी के साथ हाथ में देश की आन- बान और शान तिरंगा झंडा और मशाल लेकर खिलाड़ियों द्वारा मार्च पास्ट किया गया। यह नयनाभिराम दृश्य देख उपस्थित लोग मंत्रमुग्ध हो गए। उद्घाटन के दौरान मैदान में सामूहिक रूप से राष्ट्रगान भी गया गया ।रू के रामदेव खरिका मैदान में आयोजित नमो फुटबॉल टूर्नामेंट में दारू प्रखंड के अलावे चुरचू, इचाक और टाटीझरिया प्रखंड क्षेत्र की कुल 56 टीमों ने रजिस्ट्रेशन कराया है और रजिस्ट्रेशन जारी है। ज्ञात हो की इस टूर्नामेंट के विजेता टीम को सांसद मनीष जायसवाल की ओर से 25 हजार रुपए का चेक और आकर्षक नमो ट्रॉफी एवं उपवेजता टीम को 15 हजार रुपया का चेक और आकर्षक नमो ट्रॉफी भेंट किया जायेगा । मौके पर हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल ने कहा की इस टूर्नामेंट के आयोजन का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र की खेल प्रतिभा को निखारकर उन्हें बेहतर प्लेटफार्म प्रदान करना है। समाजसेवी सदानंद सिंह ने कहा कि खेल युवाओं के अनुशासित बनाने के साथ उनके मानसिक और शारीरिक विकास के लिए बेहद आवश्यक है। भाजपा जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह ने कहा कि सांसद मनीष जायसवाल का खेल के प्रति यह पहला समाज में आदर्श और जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में सकारात्मक पहल है। भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने भी मनीष जायसवाल के पल की सराहना की और कहा की जीवन में एकता, अनुशासन और भाईचारगी का सामंजस स्थापित करने में यह पल मिल का पत्थर साबित होगा ।

संक्षिप्त खबरें

त्रिवेणी सैनिक व एनटीपीसी आईटीआई कॉलेज में धूमधाम से मनाया गया विश्वकर्मा पूजा

बड़कागांव : पकरी बरवाडीह कोयला खदान के के तत्वाधान में त्रिवेणी सैनिक के द्वारा कोयला खदान न्यू वर्कशॉप एवं एनटीपीसी आईटीआई कॉलेज प्रांगण में शिल्पकार भगवान विश्वकर्मा की पूजा काफी धूमधाम के साथ की गई। त्रिवेणी सैनिक में लोगों के बीच प्रसाद वितरण कराया गया वहीं एनटीपीसी आईटीआई कॉलेज में लोगों के बीच भोज कराया । त्रिवेणी सैनिक में सीएचपी, डब्ल्यूपी-03, खदान स्थित 05 एमवीए पावर स्टेशन, लेथ सेक्शन, वोल्वो सेक्शन, वेल्डिंग सेक्शन, डंपर सेक्शन, एक्सकेवेटर सेक्शन, डोजर सेक्शन, सिविल ऑफिस और अन्य स्थानों पर भी धूमधाम से पूजा हुई। सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और भगवान विश्वकर्मा से पारिवारिक सुख, शांति, समृद्धि और कंपनी की उन्नति की कामना की। पूजा में शामिल लोगों में मुख्य रूप से आईटीआई के प्राचार्य मिथिलेश उपाध्याय, उपेंद्र कुमार प्रदीप कुमार, त्रिवेणी सैनिक में पूजा के अवसर कई वरिष्ठ अधिकारी गण मौजूद रहे।

डेंटल कॉलेज में धूमधाम से मनाया गया विश्वकर्मा पूजा

हजारीबाग : हजारीबाग कॉलेज ऑफ डेंटल साइंसेस एंड होस्पिटल में दिन मंगलवार को विश्वकर्मा पूजा काफी धूमधाम व हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ भगवान विश्वकर्मा की विधि पूर्वक पूजा अर्चना हुई। इस दौरान डॉक्टर्स, छात्र- छात्राएं एवं कमीयी ने बड़ी संख्या में पूजा में शामिल होकर भगवान विश्वकर्मा को आराधना कर पूरे भक्तिभाव से पूजा में शामिल हुए। भगवान विश्वकर्मा के मंत्रों उच्चारण से कॉलेज परिसर भक्तिमय हो गया। पूजा में जुटे आस-पास के लोगों में विश्वकर्मा पूजा को लेकर काफी उत्साह भी दिखा। आकर्षक सजावट एवं विधिवत पूजा के साथ संपन्न कराया गया। सबो ने मिलकर भगवान विश्वकर्मा की पूजा कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। सुख, शांति और समृद्धि के लिए भगवान विश्वकर्मा से प्रार्थना की। मौके पर डेंटल कॉलेज के सचिव डॉ प्रवीण श्रीनिवास ने कहा कि भगवान विश्वकर्मा संपूर्ण सृष्टि के रचयिता हैं। भगवान विश्वकर्मा हमारे समाज के कारीगरों, शिल्पकारों और मजदूरों के प्रेरणास्त्रोत हैं। जो अपने परिश्रम से देश के विकास में अपना अहम योगदान देते हैं। भगवान विश्वकर्मा का आशीर्वाद से सभी का कल्याण हो और समाज में शत प्रतिशत विकास हो। मौके पर विशेष रूप से डॉ.निषाद गवली, डॉ सौम्या राज, छात्रा कृति, दीपांशु, खुशबू, शैली, सलोनी, युगल, सोनम, अन्वेषा, कर्मी राज कुमार दास एवं पुष्पा कुमारी शामिल रहे।

बरही में जन औषधि केंद्र का पूर्व विधायक ने किया शुभारंभ

बरही : पीएम मोदी के जन्म दिवस अवसर पर वीर कुंवर सिंह गली बरही में जन औषधि केन्द्र का शुभारंभ पूर्व विधायक मनोज कुमार यादव ने किया। पूर्व विधायक मनोज यादव ने कहा कि बाजार से सस्ती दर पर महंगी जेनेरिक दवाइयां मिलेगा ।जरूरतमंदों के लिए फायदेमंद होगा औषधि केंद्र। आजसू बरही विस प्रभारी सह सद्भावना विकास मंच अध्यक्ष राजसिंह चौहान ने कहा कि पीएम मोदी ने चिकित्सा के क्षेत्र में अद्भुत कर रहे है। औषधी केंद्र के नोडल ऑफिसर सुमित पांडेय ने बताया कि 90 प्रतिशत से कम रेट पर दवाई मिलेगी। शुरूवाती दौर में कम दवाइयां केंद्र को उपलब्ध कराया गया है धीरे धीरे दवाइयां उपलब्ध करवा दिया जाएगा। मौके पर संचालक सुजीत कुमार सिंह, भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमेश ठाकुर, जीप प्रतिनिधि गुरुदेव गुप्ता, मंडल अध्यक्ष भगवान केशरी, स्थानीय मुखिया शमसेर आलम, केदारुत मुखिया प्रतिनिधि विशेश्वर यादव, समिति सदस्य जीतू ठाकुर, विकास सिंह, ओबीसी मंडल अध्यक्ष मुन्ना यादव, युवा सामाजिक कार्यकर्ता अभिषेक निषाद, भाजपा नेता प्रदुमन सिंह, अजित कुमार दास, इन्द्रदेव ठाकुर, बिनोद सिंह सहित अन्य उपस्थित रहें।

प्रधानमंत्री का जन्मदिन भाजपा कार्यालय में हर्षोल्लास से मनाया गया

बरही : देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन बीतें मंगलवार को धूमधाम से मनाया गया। धनबाद रोड स्थित भगवती मंदिर के पास भाजपा कार्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में पार्टी के कार्यकर्ता और नेता शामिल हुए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बरही के पूर्व विधायक मनोज कुमार यादव उपस्थित थे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष भगवान केसरी ने की। कार्यक्रम की शुरूआत प्रधानमंत्री के सम्मान में केक काटने से हुई। इस मौके पर पूर्व विधायक मनोज कुमार यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उनके कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया है और उनके नेतृत्व में भारत ने वैश्विक मंच पर एक मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है। इसके अलावा, 24 सितंबर को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कार्यक्रम पर भी विचार-विमर्श हुआ। कार्यक्रम में अन्य प्रमुख नेताओं में भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमेश ठाकुर, पूर्व मंडल अध्यक्ष अमित साहू, मंडल अध्यक्ष भगवान केसरी, विधानसभा विस्तारक भारत दीक्षित, मंडल महामंत्री नवल किशोर सिंह, मंडल उपाध्यक्ष प्रमोद सिंह, मंडल मंत्री मनोज उपाध्याय, पंचमाधव मुखिया प्रतिनिधि हरेंद्र गोप, पंचायत समिति कामेश्वर दास, राजकुमार केसरी, जयप्रकाश केसरी, पंकज बरनवाल, अशोक यादव, मुन्ना यादव, बालेश्वर यादव, आकाश जायसवाल, बबलू कुमार, अशोक केसरी, बृजेश ठाकुर, अजीत कुमार दास, नरेश यादव, आलोक बरनवाल, पवन वर्णवाल, राजकुमार केसरी, वीरेंद्र रविदास, संजय रविदास, जैन केसरी आदि कई वरिष्ठ भाजपा के कार्यकर्ता उपस्थित हुए। कार्यक्रम के अंत में सभी ने प्रधानमंत्री के स्वस्थ और दीघार्यु जीवन की कामना की और भाजपा के आगामी कार्यक्रमों के बारे में चर्चा की।

एक नजर

रांची में आभूषण दुकान की दीवार काटकर चोरी

रांची : रांची के नामकुम थाना क्षेत्र के सिदरौल जोड़ा मंदिर के समीप मां भवानी ज्वेलर्स दुकान में चोरी का मामला बुधवार को प्रकाश में आया है। इस संबंध में गुड्डू सोनी ने नामकुम थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है। मिली जानकारी के अनुसार चोरों ने दीवार काटकर चोरी की घटना को अंजाम दिया है। चोर दुकान का दीवार काटकर लगभग एक लाख का सामान लेकर फरार हो गये है। इन सामानों में सोना और चांदी के आभूषण शामिल हैं। थाना प्रभारी ब्रह्मदेव प्रसाद ने बताया कि पूरे मामले की जांच की जा रही है। आसपास के सीसीटीवी को खंगाला जा रहा है। मामले को लेकर डॉग स्क्वायड से भी जांच पड़ताल की गई है। उल्लेखनीय है कि गत 12 सितंबर को साढ़े दस लाख के आभूषण की चोरी इसी दुकान में हुई थी।

हाई कोर्ट का लोकेश चौधरी के बॉडीगार्ड को बेल देने से इनकार

रांची : झारखंड हाई कोर्ट ने अग्रवाल बंधुओं के हत्यारे लोकेश चौधरी के बॉडीगार्ड धर्मेंद्र तिवारी को बेल देने से इनकार कर दिया है। लोकेश और धर्मेंद तिवारी को रांची सिविल कोर्ट ने पिछले वर्ष 30 जून को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी। इसके खिलाफ उसने हाई कोर्ट में अपील याचिका दाखिल की थी, जिसपर सभी पक्षों की ओर से बहस सुनने के बाद कोर्ट ने बुधवार को उसे राहत देने से इनकार करते हुए अपील याचिका खारिज कर दी। पैसों के लेन-देन में हेमंत अग्रवाल और महेंद्र अग्रवाल की हत्या गोली मारकर की गयी थी।

रांची से दिल्ली जाने वाली कई एक्सप्रेस ट्रेनें रद

रांची : जाड़े में अक्सर कोहरे के कारण कोई न कोई ट्रेन अक्सर रद्द हो जाती है या फिर देर से चलती है। इस संबंध में रांची रेल मंडल के डीसीएम ने बुधवार को बताया कि ठंड के मौसम में अक्सर कोहरे के कारण ट्रेनों के परिचालन में दिक्कतें आती हैं, जिसे देखते हुए रांची रेल मंडल से चलने वाली कई ट्रेनें रद्द रहेंगी, जिसमें खास तौर से हटिया-आनंद विहार टर्मिनल एक्सप्रेस शामिल हैं। अभी फिलहाल इसी ट्रेन को रद्द रखने का फैसला लिया गया है। ट्रेन संख्या 12873 हटिया-आनंदविहार टर्मिनल (त्रि-साप्ताहिक) ट्रेन 02 दिसंबर से 09 जनवरी, 2025 तक हटिया से रद्द रहेगी। वहीं, ट्रेन संख्या 12874 आनंदविहार टर्मिनल-हटिया (त्रि साप्ताहिक) ट्रेन 03 दिसंबर से 10 जनवरी, 2025 तक आनंदविहार से रद्द रहेगी। चक्रधरपुर रेल मंडल के आदित्यपुर स्टेशन पर विकास काम चल रहा है। इस वजह से रेलवे ने विभिन्न पैसेंजर और एक्सप्रेस ट्रेनों को 28 सितंबर तक रद्द करने का फैसला लिया है जबकि 06 एक्सप्रेस ट्रेनों को परिवर्तित मार्ग से चलाने और 04 को शॉर्ट टर्मिनेशन किया गया है।

दक्षिण पूर्व रेलवे - निविदा
निविदा सूचना संख्या: डीआरएमईएनजीजी आरएनसी-47-2024, दिनांक: 16.09.2024। भारत के राष्ट्रपति के लिए तथा उनकी ओर से मंडल रेल प्रबंधक/अभियांत्रिकी/दक्षिण पूर्व रेलवे, रांची-834003 द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। सूचना संख्या: डीआरएम ईएनजीजीआरएनसी-47-2024। कार्य का नाम: ... रांची के अधिकार क्षेत्र के अधीन हटिया-ओर्गा खंड में चल रही 25टी एक्सल लोडिंग ट्रेनों के लिए ... (84 अदद) की बेरल लम्बाई का विस्तार सहित आनुषंगिक कार्य। निविदा मूल्य: ₹ 16,47,99,239.11। जमा बयाना राशि का मूल्य: ₹ 9,74,000। निविदा बंद होने की तारीख एवं समय: 07.10.2024 को अपराह्न 3.00 बजे। ऑनलाइन निविदा के लिए निविदाता वेबसाइट www.ireps.gov.in देख सकते हैं। (PR-816)

पीएम मोदी नेशन फर्स्ट को लेकर करते हैं काम : अन्नपूर्णा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि एनडीए सरकार के 100 दिन पूरे हुए हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने टास्क दिया था। चार जून को तीसरी बार एनडीए पर देश ने विश्वास जताया। लगातार 10 वर्षों में देश के लिए प्रधानमंत्री ने युवा, महिला, किसान और गरीब को आयाम मान योजना तैयार किया। योजना को जमीन तक पहुंचने का लक्ष्य रखा गया। कई बड़े निर्णय हुए। पीएम मोदी नेशन फर्स्ट को लेकर काम करते हैं।

मंत्री अन्नपूर्णा देवी केंद्र सरकार के 100 दिन पूरे होने पर रांची के प्रेस क्लब में संवाददाता सम्मेलन में बोल रही थी। उन्होंने कहा कि 100 दिन में 15 लाख करोड़ से ज्यादा की योजनाओं का शुभारंभ और

उद्घाटन हुआ। आधारभूत संरचना पर तीन लाख करोड़ के योजना की मंजूरी दी गई है। साथ ही कहा कि पीएम ग्राम सड़क योजना 49000करोड़ लागत से 25000 गांव को मुख्य सड़क से जोड़ा जायेगा। किसान के लिए किसान सम्मान निधि दी जाएगी। 9.3 करोड़ किसान को 20000 करोड़ दी गई है। यूनिफाइड पेंशन स्कीम लागू किया गया।

मंत्री ने कहा कि युवाओं के लिए दो लाख करोड़ का पीएम पैकेज रोजगार और कौशल के लिए दिया जायेगा। एक करोड़ युवाओं को टॉप कंपनी में इंटर्नशिप का मौका मिलेगा। पीएम आवास योजना तीन करोड़ की स्वीकृति मिली। दो करोड़ ग्रामीण, एक करोड़ शहरी आबादी को मिलेगा। उन्होंने कहा कि आयुष्मान भारत 70 साल के ऊपर के आयु वर्ग के लिए मिलेगा, उसकी स्वीकृति कैबिनेट से मिली है। इसमें आय की बाध्यता नहीं होगी। घर के बुजुर्गों को इसका लाभ मिलेगा। छह करोड़ बुजुर्ग इसके दायरे में आएंगे। पीएम जन मन योजना 63000 गांव में शुरू हुई है।

अन्नपूर्णा ने कहा कि महिला सशक्तिकरण के लिए बजट में तीन लाख करोड़ से अधिक की मंजूरी दी गई है। इसके तहत दिन दयाल अंत्योदय योजना के तहत 90 लाख ग्रुप बने हैं। पर्यटन दीदी के जरिए भी महिलाओं को रोजगार दिया जा रहा। लखपति दीदी से पीएम ने स्वयं संवाद किया। साथ ही 11 लाख को लखपति दीदी का प्रमाण दिया गया है। मुद्रा योजना की सीमा भी 20 लाख किया गया है। विकसित भारत के संकल्प में अहम भूमिका महिलाओं की होंगी।

मंत्री ने कहा कि महिला की भूमिका कार्यक्षेत्रों में बढ़े इसके लिए सुरक्षित घर और पालना की व्यवस्था की जा रही। वर्किंग वुमन हॉस्टल के माध्यम से रहने का इंतजाम किया जा रहा। विभाग और कॉरपोरेट घराने मिल कर यह काम कर रहे। महिला सेक्सुअल हैरेसमेंट की शिकायत शी बॉक्स में कर सकती हैं। पोषण माह के जरिए महिलाओं के पोषण का ध्यान रखा जा रहा। देश भर में पांच कारोड़ 20 लाख से अधिक गतिविधियां देश भर में हो चुकी हैं। कुपोषण से मुक्ति और पढ़ाई की योजना चल रही है। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी को सक्षम आंगनबाड़ी केंद्र के तौर पर डेवलप किया गया है। झारखंड में ढाई हजार लघु आंगनवाड़ी केंद्र थे। उन्हें अपग्रेड किया गया है।

राहुल गांधी पर टिप्पणी को लेकर कांग्रेस ने दर्ज करायी शिकायत

रांची : केंद्रीय रेल राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ,व महाराष्ट्र के विधायक संजय गायकवाड़ द्वारा नेता विपक्ष राहुल गांधी पर की गई अमर्यादित टिप्पणी और बयानों के खिलाफ प्रदेश कांग्रेस में खासा रोष है। इसे लेकर कांग्रेस नेता कुमार राजा ने बुधवार को कोतवाली थाना में शिकायत दर्ज कराया है। गौरतलब है कि बीजेपी नेता और केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी पर विवादित टिप्पणी की थी, जिसके बाद से राजनीति गरमा गई है। केंद्रीय मंत्री रवनीत बिट्टू ने कहा था कि, राहुल गांधी देश के नंबर 1 आतंकी हैं। वह देश के सबसे बड़े दुश्मन हैं। देश की एजेंसियों को उनपर नजर रखनी चाहिए।

राज्य में बांग्लादेशी घुसपैठियों के मामले पर एचसी में हुई सुनवाई

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड हाई कोर्ट ने राज्य में बांग्लादेशी घुसपैठियों के मामले में बुधवार को सुनवाई करते हुए मौखिक कहा कि राज्य के डीसी द्वारा संथाल परगना में बांग्लादेशी घुसपैठिए नहीं होने की गलत जानकारी दिया जाना दुर्भाग्यपूर्ण है। साहिबगंज में चार बांग्लादेशी घुसपैठियों की बात कही गई है लेकिन देवघर डीसी ने किसी भी तरह के घुसपैठ होने से इनकार किया है। दूसरी ओर केंद्र सरकार कह रही है कि संथाल परगना में बांग्लादेशी घुसपैठियों ने प्रवेश किया है, जिससे वहां किसी खास समुदाय की आबादी बढ़ गई है।

गलत जानकारी देने के लिए कोर्ट डीसी के खिलाफ अवमानना की कार्रवाई भी शुरू कर सकती थी लेकिन कोर्ट का मकसद संथालपरगना में फैक्ट फाइंडिंग कमेटी के माध्यम से बांग्लादेशियों का घुसपैठ हो रहा है या नहीं इसकी

सही जानकारी प्राप्त करना है और यदि बांग्लादेशी घुसपैठिए संथाल परगना में प्रवेश पा रहे हैं, तो उसकी रोकथाम जरूरी है।

सुनवाई के दौरान वर्चुअली रूप से हाई कोर्ट की खंडपीठ में सुनवाई से जुड़े सॉलिसिटर जनरल ऑफ इंडिया तुषार मेहता ने मौखिक कहा कि केंद्र सरकार के गृह सचिव एवं झारखंड के मुख्य सचिव मिलकर संथाल परगना में बांग्लादेशी घुसपैठियों की जांच को लेकर हाई पावर कमेटी बनाने के संबंध में निर्णय लेंगे। इस हाई पावर कमेटी में कौन-कौन होंगे, इस पर भी यह दोनों सरकार के वरिष्ठ अधिकारी निर्णय लेंगे। हाई पावर कमेटी के संबंध में लिए गए निर्णय को केंद्र सरकार शपथ पत्र के माध्यम से दाखिल करेगी। मामले की अगली सुनवाई 20 सितंबर को होगी।

हाई कोर्ट की खंडपीठ ने झारखंड में बांग्लादेशी घुसपैठियों के संथाल परगना में अवैध प्रवेश को लेकर दानियल दानिश की जनहित याचिका पर सुनवाई की। हाई कोर्ट में केंद्र सरकार की ओर से शपथ दाखिल कर कहा गया है कि एनआरसी के माध्यम से संथालपरगना में बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान कर उन्हें वापस भेजा जा सकता है। संथाल परगना में ट्राइबल की आबादी 42 प्रतिशत से घटकर 28 प्रतिशत हो गई है। पाकुड़ एवं साहिबगंज में वर्ष 2011 तक मुस्लिम समुदाय की आबादी करीब 35 प्रतिशत बढ़ गई है। वहीं, पूरे संथाल परगना में मुस्लिम समुदाय की आबादी वर्ष 2011 तक 13 प्रतिशत बढ़ गई है। संविधान के तहत केंद्र सरकार ने राज्य सरकार को पावर दिया है कि वह देखे कि दूसरे देश के सिटिजन ना बसे। इसे लेकर राज्य सरकार के कमेटी भी बनी हुई है। घुसपैठ रोकने के विषय पर राज्य सरकार को मदद देने के लिए केंद्र सरकार तैयार है। बीएसएफ द्वारा दूसरे देश के घुसपैठिए को रोकने के लिए सकारात्मक पहल की जा रही है।

स्टेशन रोड के होटल में पुलिस ने की छापेमारी, दो लड़कियों को कराया मुक्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : चुटिया थाना क्षेत्र के स्टेशन रोड स्थित पटेल चौक के पास से एक होटल में पुलिस ने छापेमारी की। इस दौरान पुलिस ने एक नाबालिग सहित दो लड़कियों को पुलिस ने मुक्त कराया है। वहीं होटल संचालक को गिरफ्तार किया गया है। वरीय पुलिस अधिकारी को गुप्त सूचना मिली थी कि मानव तस्करी के लिए चुटिया इलाके की दो लड़कियों को होटल में रखा रखा गया है। कहीं बाहर ले जाने की तैयारी ही रही है। सूचना प्राप्त होते ही वरीय पुलिस अधिकारी के निर्देश पर सिटी डीएसपी केवी रमन और चुटिया थानेदार लक्ष्मीकान्त ने दलबल के साथ मंगलवार की दोपहर में छापेमारी की। जहां से एक नाबालिग सहित दो लड़कियों को बरामद किया है। पुलिस होटल संचालक अविनाश कुमार को हिरासत में लिया। उसके बाद थाना में महिला पुलिस पदाधिकारी के द्वारा दोनों लड़कियों से पूछताछ की।

होटल मालिक लड़कियों से करवाता था गलत काम

बरामद की गई दोनों लड़कियां चुटिया इलाके की हैं। पूछताछ में लड़कियों ने पुलिस को बताया कि उन्हें काम करने के बहाने लाया गया था, लेकिन होटल में उससे गलत काम करवाने लगा। लड़कियों ने पुलिस को बताया कि होटल मालिक देह-व्यापार का धंधा करवाता था। बताया जाता है कि दोनों लड़कियों को होटल में रखा गया था। इसी बीच किसी ने पुलिस को सूचना दे दी। उसके बाद कार्रवाई हुई है।

कांग्रेस ने की जिला वार पर्यवेक्षकों की नियुक्ति

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के निदेर्शानुसार प्रत्येक जिला के अंतर्गत पड़ने वाले विधानसभा क्षेत्र के लिए पांच नामो की अनुशंसा प्राप्त करने के लिए जिला वार पर्यवेक्षकों की नियुक्ति की गई है।

इस संबंध में बुधवार को प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सोनाल शांति ने बताया कि जिला अध्यक्षों को निर्देश दिया गया है कि विधानसभा चुनाव में उम्मीदवारी के लिए दिए गए आवेदकों का प्रखंड कांग्रेस के जरिये अनुशंसा अपेक्षित है इसलिए अपने जिला में पड़ने वाले प्रखंडों में 21 सितंबर तक बैठक आयोजित करेंगे। उक्त बैठक में प्रखंड के अग्रणी संगठन, संबंधित प्रखंड के प्रदेश प्रतिनिधि, प्रदेश पदाधिकारी, विधायक, पूर्व विधायक, सांसद, पूर्व सांसद एवं मंत्री को आमंत्रित करेंगे। साथ ही बैठक के लिए जिला कांग्रेस से एक पर्यवेक्षक की नियुक्ति करेंगे। उन्होंने बताया कि जिला वार नियुक्त पर्यवेक्षकों को 25 सितंबर तक जिला कांग्रेस की बैठक आयोजित कर पांच नामो की अनुशंसा प्राप्त कर प्रदेश कांग्रेस को समर्पित करने का निर्देश दिया गया है।

जिला वार नियुक्त पर्यवेक्षकों में रांची से शिवकुमार भगत, रांची ग्रामीण से सुरेंद्र यादव, खूंटी से आभा सिन्हा पश्चिमी सिंहभूम से रमा खलको, सरायकेला खरसावां से रामाश्रय प्रसाद, पूर्वी सिंहभूम से बलजीत सिंह बेदी, बोकारो से अशोक कुमार चौधरी, धनबाद से संजय मुन्नम, गिरिडीह से सुल्तान अहमद देवघर से रविंद्र झा, गोड्डा से अनुकूल मिश्रा, साहिबगंज से उदय लखमानी पाकुड़ से श्यामल किशोर सिंह, दुमका से राजेंद्र दास, जामताड़ा से फैयाज कैसर, रामगढ़ से सुरेंद्र सिंह, हजारीबाग से नरेश वर्मा, कोडरमा से अवधेश कुमार सिंह, चतरा से विजय यादव, लातेहार से आशिक अंसारी, पलामू से विनय सिन्हा दीपू, गढ़वा से चंद्रशेखर शुक्ला, लोहरदगा से भीम कुमार गुमला से आलोक कुमार दुबे और सिमडेगा से डॉक्टर अजय शाहदेव शामिल है।

झारखंड में महिलाओं एवं बच्चों के यौन उत्पीड़न की घटनाओं पर पुलिस प्रशासन सख्त कार्रवाई करे : हाई कोर्ट

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड हाई कोर्ट ने बुधवार को सुनवाई करते हुए मौखिक कहा कि राज्य सरकार को हर हाल में महिलाओं और नाबालिग बच्चों के साथ यौन उत्पीड़न रोकने के लिए विशेष पहल करनी होगी। हाई कोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद और जस्टिस अरुण कुमार राय की खंडपीठ में मामले की सुनवाई हुई।

कोर्ट ने कहा कि पुलिस प्रशासन इसपर सख्त कार्रवाई करे। स्कूली बच्चों के बसों में लेडी टीचर रहें, ताकि बच्चे सुरक्षित रहें। बस की कंडक्टर महिला हो तो और भी अच्छा होगा। राज्य सरकार की ओर से कोर्ट को बताया गया महिलाओं और नाबालिग बच्चों के खिलाफ यौन

उत्पीड़न को नियंत्रित करने के लिए सरकार स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (एसओपी) बनाएगी। सिर्फ रांची ही नहीं, बल्कि पूरे राज्य के जिलों में महिलाएं एवं नाबालिग बच्चे सुरक्षित रहें, इसे लेकर राज्य सरकार कारगर योजना बनाएगी।

सरकार की ओर से विभिन्न विभागों से बातचीत कर कोर्ट को एक सुझाव भी दिया गया, जिस पर खंडपीठ ने इसे शपथ पत्र के माध्यम से प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। राज्य सरकार की ओर से अपर अधिवक्ता सचिन कुमार ने पैरवी की। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता भारती कुमारी ने पैरवी की। भारती कुमारी ने झारखंड में महिलाओं एवं नाबालिगों के साथ यौन उत्पीड़न की घटनाओं में वृद्धि को लेकर जनहित याचिका दाखिल की है। हाई कोर्ट की खंडपीठ में सुनवाई के दौरान गृह सचिव, नगर विकास सचिव, रांची डीसी और एसएसपी, चाइल्ड वेलफेयर एंड वूमेन डिपार्टमेंट के सचिव एवं नगर आयुक्त सशरीर उपस्थित थे। हाई कोर्ट की खंडपीठ ने सरकार के आला अधिकारियों से मौखिक कहा कि जब तक समाज में महिलाओं के खिलाफ अपराध की घटना कम नहीं होगी, तब तक असुरक्षा की भावना महिलाओं एवं बच्चियों को डराती रहेगी। रांची शहर में आए दिन महिलाओं के गले से चेन छीनने की घटनाओं को कोर्ट ने गंभीरता से लेते हुए मौखिक कहा कि रांची एसएसपी इस अपराध पर नियंत्रण रखें, यह जिला प्रशासन की असफलता मानी जाएगी। कोर्ट ने कहा कि आए दिन समाचार पत्रों में महिलाओं के घर के सामने से या मार्केट परिसर से चेन छिनतई हो जाती है। कभी-कभी कुछ आरोपी पकड़े भी जाते है लेकिन इनके रैकेट को पकड़ना जरूरी है। डर से महिलाएं नकली जेवर भी पहनने लगी हैं लेकिन छिनतई करने वाले नकली जेवर देखकर उनकी पिटाई करने लग जाते है। रांची एसएसपी लॉ एंड ऑर्डर को दुरुस्त रखे। रांची एसएसपी को रात में जगह-जगह पर औचक निरीक्षण करना चाहिए। कोई यदि मुसीबत में हो तो हेल्पलाइन का नंबर हर समय उपलब्ध रहना चाहिए, ताकि उसे तुरंत सुरक्षा मिल सके। रांची शहर में सभी जगह पर सीसीटीवी कैमरा हो, ताकि आपराधिक घटना पर नियंत्रण लगाया जा सके। मामले की अगली सुनवाई 30 सितंबर निर्धारित की है।

संक्षिप्त खबरें

जेबीवीएनएल ने शुरू की बिजली बिल माफ करने की प्रक्रिया

रांची : झारखंड बिजली वितरण निगम (जेबीवीएनएल) ने बिजली बिल माफ करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इसके तहत जेबीवीएनएल ने योजना का प्रचार-प्रसार भी करना शुरू कर दिया है। जेबीवीएनएल के एमडी के अनुसार मुख्यमंत्री ऊर्जा खुशहाल योजना के तहत लोगों का बिजली बिल माफ किया जा रहा है। इसके तहत उपभोक्ताओं का बिजली बिल माफ किया जायेगा। उपभोक्ताओं को इस योजना का लाभ उठाने के लिये किसी तरह का आवेदन नहीं भरना है। सिर्फ उपभोक्ताओं को अपने नजदीकी बिजली कार्यालय में जाकर संबंधित अधिकारी से मिल कर इसकी जानकारी देनी होगी। जेबीवीएनएल ने लोगों से अपील की है कि इस योजना का लाभ लेने के लिये लोगों को किसी भी दलाल के चक्कर या आवेदन भरने की जरूरत नहीं है। बिजली कार्यालय के माध्यम से लोग इसकी जानकारी ले सकते है। वहीं, निगम की ओर से जारी व्हाट्सएप नंबर 9431135503 में संपर्क कर इसकी जानकारी ले सकते है। इस योजना के लागू होने के साथ ही लोगों को दो सौ यूनिट फ्री बिजली मिलने लगी है। जेबीवीएनएल ने इस योजना को भी लागू कर दिया है।

हाई कोर्ट में भूमि अधिग्रहण विस्थापन एवं पुनर्वास किसान समिति ने जनहित याचिका दायर की

रांची : झारखंड हाई कोर्ट में भूमि अधिग्रहण विस्थापन एवं पुनर्वास किसान समिति ने बुधवार को एक जनहित याचिका दायर की है, जिसमें कहा गया है कि पलामू जिले के पड़वा राजहरा में कोल कंपनी फेयर माइंस को खनन के लिए दी गयी करीब 272 एकड़ भूमि में 26 एकड़ भूमि जंगल-झाड़ नेचर की है। फेयर माइंस कॉल ब्लॉक को राजहरा स्थित जिस भूमि की माइंस अलॉट हुई है। इस 26 एकड जंगल झाड़ी जमीन का खतियान फटा हुआ है जबकि बंदोबस्त अभिलेख में प्लॉट की किस्म जंगल झाड़ी दर्ज है। इससे संबंधित सभी दस्तावेज अदालत में सौंपते हुए यह मांग की गयी है कि जंगल-झाड़ की भूमि की पूरी तरह जांच की जाये, उसके बाद ही कॉल माइंस को खनन करने की इजाजत दी जाये।

एसडीओ ने जागरूकता वाहन को किया रवाना

रांची : विधानसभा चुनाव को लेकर मतदाताओं को विभिन्न माध्यमों से मतदान प्रक्रिया की जानकारी दी जा रही है। इसी कड़ी में बुधवार को ईवीएम मोबाइल प्रदर्शन वैन द्वारा जागरूकता कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। रांची के मोरहाबादी स्थित फुटबॉल स्टेडियम के वेयर हाउस से अनुमंडल पदाधिकारी सदर-सह-निवार्ची पदाधिकारी उत्कर्ष कुमार सहित अन्य अधिकारियों ने संयुक्त रूप से झंडी दिखाकर जागरूकता वाहन को रवाना किया। इसके माध्यम से रांची जिला अंतर्गत सभी सात विधानसभा क्षेत्र में जागरूकता वाहन से लोगों को मतदान प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी जाएगी। प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र के लिए दो-दो कुल 14 जागरूकता वाहन रवाना किया गया है। जागरूकता वाहन में एलईडी के माध्यम से मतदान प्रक्रिया और वीवीपैट से अपने मतदान की पुष्टि के संबंध में लोगों को जानकारी प्रदान की जाएगी। मौके पर अनुमंडल पदाधिकारी सदर-सह-निवार्ची पदाधिकारी उत्कर्ष कुमार ने आम लोगों से अपील करते हुए कहा कि जागरूकता वाहन के माध्यम से मतदान प्रक्रिया की पूरी जानकारी हासिल करें और अपनी आशंकाओं को दूर करें। उन्होंने संबंधित क्षेत्र के बीएलओ एवं बीएलओ सुपरवाइजर से भी प्रमुख स्थानों पर जागरूकता वाहन के माध्यम से लोगों तक मतदान प्रक्रिया की जानकारी पहुंचाने को कहा।

भारत पर्यटन कोलकाता फील्ड ऑफिस झारखंड ने स्वच्छता अभियान चलाया

रांची : भारत पर्यटन कोलकाता फील्ड ऑफिस- झारखंड ने स्वच्छता ही सेवा-2024 अभियान के तहत रांची रेलवे स्टेशन रोड पर बुधवार को सफाई अभियान चलाया। स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता थीम के तहत स्वच्छता अभियान झारखंड के टूर एंड ट्रैवल एजेंट एसोसिएशन और स्टेशन पर स्थानीय लोगों और ऑटो चालक समुदाय की मुख्य भागीदारी के साथ सफलतापूर्वक चलाया गया। इस अवसर पर पर्यटन मंत्रालय की ओर से सहायक प्रबंधक देविका मंडल, टूर एंड ट्रेवल एजेंट स्टेशन ऑफ झारखंड के अध्यक्ष अमरदीप सहाय समेत अन्य लोग मौजूद थे।

झारखंड प्रशासनिक सेवा संघ के सैकड़ों पदाधिकारियों ने दिखाई एकजुटता

रांची : झारखंड प्रशासनिक सेवा संघ (झासा) की विशेष आम सभा की बैठक स्थानीय ताना भगत स्टेडियम खेल गांव में आयोजित हुई। बैठक में झारखंड प्रशासनिक सेवा के पुनर्गठन, समयबद्ध प्रोन्नति, झारखंड नॉन एससीएस की उप समाहर्ता की समतुल्यता आदि विषयों पर गहन मंथन हुआ। विषय प्रवेश के क्रम में झासा की अध्यक्ष रंजीता हेंब्रम ने संघ द्वारा अब तक किए गए प्रयासों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संघ की शक्ति एकता में ही निहित है। इसलिए बड़ा कैडर होने के चलते स्वाभाविक मतभिन्नता के बावजूद हमें हर परिस्थिति में एकता प्रदर्शित करनी होगी। उन्होंने राज्य प्रशासनिक सेवा के पुनर्गठन, समयबद्ध प्रोन्नति, किसी भी पदाधिकारी के विरुद्ध विभागीय कार्रवाई को एक वर्ष के अंदर पूर्ण करने जैसे अन्य लंबित विषयों को सरकार के समक्ष मजबूती से रखने के अपने संकल्प को दोहराया। प्रस्तावित राज्य प्रशासनिक सेवा के पुनर्गठन को लेकर सदस्यों के बीच उठ रही शंकाओं को लेकर उन्होंने स्पष्ट किया कि बिहार की तर्ज पर झारखंड प्रशासनिक सेवा के पुनर्गठन के मॉडल को झासा स्वीकार्य नहीं करेगा। बैठक में जिलों की कार्यकारिणी के सदस्यों ने भी अपने-अपने विचार रखे। पदाधिकारियों ने झारखंड प्रशासनिक सेवा के पुनर्गठन की वकालत तो की किंतु सदस्यों द्वारा यह भी दोहराया गया कि बिहार मॉडल की तर्ज पर सेवा पुनर्गठन न किया जाए। क्योंकि, बिहार में राज्य सिविल सेवा को प्रीमियर सेवा बनाने के बाद वहां जो समस्याएं आईं उन्हें देखते हुये झारखंड के पदाधिकारी उस माडल से सशंकित हैं। झासा के सदस्यों ने मत रखते हुए कहा कि सरकार यदि झारखंड प्रशासनिक सेवा के पुनर्गठन की सोच रही है तो यह बहुत ही सकारात्मक बात है लेकिन झाप्रसे पुनर्गठन प्रस्ताव का जो ड्राफ्ट है उसे सार्वजनिक करते हुए झाप्रसे के पदाधिकारियों से मंतव्य लेना चाहिए, झाप्रसे कैडर के हित-अनहित पर सम्यक विमर्श उपरांत ही प्रीमियर सेवा को अंतिम स्वरूप दिया जाना चाहिए। गैर राज्य प्रशासनिक सेवा के पदाधिकारियों के भारतीय प्रशासनिक सेवा में इंडक्शन को लेकर निर्धारित अधिकतम 15 प्रतिशत की सीमा को ही नियमित कोटा मान लेने की चल रही परंपरा का सर्वसम्मति से विरोध किया गया। पिछले दिनों झारखंड के गैर प्रशासनिक सेवा के पदाधिकारियों के उपसमाहर्ता की समतुल्यता के संबंध में सरकार द्वारा जो निर्णय लिया गया उसको लेकर भी संघ ने नाराजगी जतायी।

एक नजर

बोनस एवं 39 माह का बकाया वेतन को लेकर धरना कल

बोकारो : इस्पात मजदूर मोर्चा के संयुक्त महामंत्री बी.डी. प्रसाद ने विज्ञप्ति जारी कर कहा है कि एन.जे.सी.एस.- वेतन समझौता के इतिहास में यह एक अभूतपूर्व, अद्भुत और अनोखी घटना है कि सेल के मजदूरों का वेतन समझौता 7 वर्ष 9 महीने से लम्बित है। 1 जनवरी 2017 से मार्च 2020तक कुल 39 माह का मजदूरों का एरियर बाकी है।पर्क का एरियर बाकी है।
अच्छा उत्पादन-उत्पादकता, श्रेष्ठतम टर्नओवर और लगातार मुनाफा अर्जित करने के वावजूद स्थाई मजदूरों-ठेका मजदूरों को दूगार्पूजा के पूर्व सम्मानजनक बोनस देने के बारे में प्रबंधन उदासीन दिख रही है।
मृत कर्मचारियों के आश्रित बोकारो स्टील प्लांट में स्थाई नियोजन के लिए वर्षों से संघर्षरत है पर नियोजन से बंचित है।बी.एस.एल.से अप्रेंटिसशिप परीक्षा पास विस्थापित युवाओं की स्थिति भी ऐसी ही है।
बी.जी.एच.में मेडिकल चेकअप के बहाने ठेका मजदूरों को अनफिट कर छंटनी करने की प्रबंधन की नीति से ठेका मजदूर आक्रोशित है। ठेका मजदूरों को ग्रैच्युटी देने के अलावे मजदूरों की मजदूरी-भत्ता आदि मांगें लम्बित है। नगर सेवा विभाग की मिलिभगत से क्वार्टरों का अतिक्रमण के कारण सेक्टरों की स्थिति बद्तर है। उपरोक्त ज्वलंत मुद्दों और अन्य लम्बित मांगों को लेकर इस्पात मजदूर मोर्चा (सीटू) द्वारा 20 सितम्बर को महात्मा गांधी गोलम्बर सेक्टर 4 के पास महा धरना का आयोजन किया गया है।

ओबीसी एकता अधिकार मंच ने मनायी विश्वकर्मा जयंती

मेदिनीनगर(पलामू) :
ओ.बी.सी. एकता अधिकार मंच के बिश्रामपुर कार्यालय में मंगलवार को विश्वकर्मा जयंती धूमधाम से मनायी गई। इस अवसर पर देवाधिदेव विश्वकर्मा भगवान की पूजा-अर्चना मंच के केंद्रीय सदस्य अमर प्रसाद ने की। इसके अलावा मंच के कार्यकताओं में मुख्य रूप से प्रदीप प्रसाद, सुरेंद्र कुमार, ऋषि कुमार, आकाश गुप्ता, बिट्टू कुमार, अतुल कुमार व कार्यालय के सभी कर्मचारी भी उपस्थित थे।

विधान सभा में झारखंड के गरीब गुरबों की आवाज बनेगें शैलेश चंद्रवंशी

मेदिनीनगर (पलामू): भारी बारीस के बिच चैनपुर प्रखंड़ के चैनपुर, चट्टीपार,भड़गांवा मे काँग्रेस पार्टी का जन संपर्क अभीयान, शैलेश चंद्रवंशी, भावी प्रत्याशी ड़ालटनगंज विधान सभा ,के नेतृत्व में चलाया गया लोगों का भारी जन समर्थन मिल रहा है ,पहले भी इस क्षेत्र मे 2010 के जिला परिषद में मुझे सबसे ज्यादा वोट मिला था। इस बार भी अपार समर्थन मिल रहा है, साथ में विजय चंद्रवंशी, धिरज वर्मा , अरविन्द कुमार, रणविजय कुमार, काँग्रेस सेवा दल के छोटु चन्द्रवंशी, भरत चंद्रवंशी, ओम प्रकाश चंद्रवंशी, दिपक प्रसाद, संजय पासवान, संतोष चंद्रवंशी आदी सैकड़ो लोग साथ थें।

इस्पात कर्मचारियों द्वारा धूमधाम से मनाया गया विश्वकर्मा पूजा

बोकारो : स्टील प्लांट में धूम धाम से मनाया गया विश्वकर्मा पूजा। मुसलेधार बारिश की वजह से कर्मचारियों को काफी परेशानी आई लेकिन मां काव्या डेकोरेटर्स द्वारा हिम्मत न हारते हुए पूजा पंडाल को भव्य रूप से सजाया गया । प्रथम स्थान मे ब्लास्ट फर्नेस दूसरे अस्थान पे आर एम एच पी तीसरे पे मशीन शॉप चौथे पे स्ट्रक्चर शॉप सभी शॉप पे डायरेक्टर इंचार्ज और सभी ई डी ने नारियल फोड़ के बाबा विश्वकर्मा से प्रार्थना की और मांगा सभी कर्मचारी स्वस्थ रहे और उत्पाद बढ़े वही कर्मचारियों ने मांगा उनका इंक्रीमेंट हो, जल्द से जल्द एरियल और बोनस जादा मिले।

उपायुक्त ने ईवीएम मोबाइल डेमोंसट्रेशन वैन को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

ईवीएम डेमोंसट्रेशन सेंटर का हुआ उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी सुश्री माधवी मिश्रा ने बुधवार को कलेक्ट्रेट परिसर से 12 ईवीएम मोबाइल डेमोंसट्रेशन वैन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर उपायुक्त ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर मतदाताओं को जागरूक करने के उद्देश्य से 12 ईवीएम डेमोंसट्रेशन वैन को रवाना किया है। धनबाद संसदीय क्षेत्र के धनबाद, झरिया, निरसा, सिंदरी, बाघमारा और टुंडी विधानसभा में दो-दो वैन विधानसभा चुनाव की घोषणा होने तक भ्रमण करेंगे।
उन्होंने कहा कि इसके साथ ही कलेक्ट्रेट तथा अनुमंडल कार्यालय में ईवीएम डेमोंसट्रेशन सेंटर बनाए गए हैं। ईवीएम मोबाइल डेमोंसट्रेशन वैन और ईवीएम डेमोंसट्रेशन सेंटर पर कोई भी मतदाता चुनाव की पारदर्शी प्रक्रिया से रूबरू हो सकते हैं। मतदाता, मतदान की प्रक्रिया को समझ सकते हैं। डमी वोट देकर चुनाव प्रक्रिया की जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ ही उपायुक्त ने युवा वोटरों से लोकतंत्र के महापर्व में अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर मतदान करने की अपील की।
मौके पर उपायुक्त सुश्री माधवी मिश्रा, वरीय पदाधिकारी सह जिला आपूर्ति पदाधिकारी प्रदीप कुमार शुक्ला, उप निर्वाचन पदाधिकारी कालिदास मुंडा, विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी जियाउल अंसारी, सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा नियाज अहमद, निर्वाचन शाखा के प्रधान लिपिक अरूण धारी, सागर कुमार (भजोहरि) के अलावा अन्य लोग मौजूद थे।

बैंक ऑफ इंडिया में 30 एवं 1 अक्टूबर को हड़ताल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : फेडरेशन ऑफ बैंक ऑफ इंडिया स्टाफ यूनियन के आवाहन पर आहूत आंदोलनात्मक कार्यक्रम के तहत दिनांक 18.9.24 को बैंक ऑफ इंडिया इम्पलाइज यूनियन झारखंड स्टेट, बोकारो की ओर से आज शाम 5:30 बजे से प्ले कार्ड के साथ बोकारो आंचलिक कार्यालय के समक्ष सामूहिक प्रदर्शन किया गया। जिसमें चास बोकारो एवं आसपास के शाखाओं के सैकड़ो सदस्यों ने भाग लिया। मुख्य मांगों में था सभी कर्मचारी संवर्गों में अभिलंब बहाली करने, पूर्व में हुए समझौता का उल्लंघन बंद करने, 27.12.2021 के समझौते को अभिलंब मूर्त रूप देने, स्थाई प्रकृति के कार्यों में आउटसोर्सिंग बंद करने, श्रमिक विरोधी मानसिकता से बाहर आने आदि मांगों के साथ प्ले कार्ड प्रदर्शन किया गया। तत्पश्चात सामूहिक रूप से आंचलिक कार्यालय में वह उप आंचलिक प्रबंधक को मौखिक ज्ञापन दिया गया। इस अवसर पर प्रदर्शन को संबोधित करते हुए संगठन के संगठन मंत्री एस एन दास ने सभी से एकजुट होकर संघर्ष को धारदार बनाने का आह्वान किया एवं 30 सितंबर एवं 1 अक्टूबर के हड़ताल को पूर्ण सफल करने का भी आह्वान किया।
इस अवसर पर प्रमुख रूप से प्रदीप झा, राकेश मिश्रा, इंद्रजीत चौधरी, विनय कुमार सुजीत झा, प्रशांत मंडल, सुजाता कुमारी, शोभा कुमारी, खुशबू कुमारी, नेहा कुमारी, पूनम देवी उपस्थित रहे।

पीएसटी ग्राउंड में मेमोरियल प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : पीएसटी ग्राउंड में स्व अशोक कुमार निषाद व स्व द्वारिका प्रसाद मेमोरियल प्रतियोगिता का शुभारंभ मैच में ब्लैक फायटर क्लब ने जय हिंद क्लब को 4 - 2 से पराजित कर अगले चक्र में प्रवेश किया ।
प्रतियोगिता में ब्लैक फाइटर क्लब धनबाद
जय हिंद क्लब के बीच उद्घाटन मैच खेला गया। निर्धारित समय तक खेले गये मैच में दोनों टीम 2-2 के बराबरी पर रही, बाद में दोनों टीम ने 10 मिनट का एक्स्ट्रा खेल के दौरान ब्लैक फाइटर क्लब ने अपने प्रतिद्वंद्वी टीम के खिलाफ 2 गोल करके प्रतियोगिता में 4- 2 से बढ़त बनाया। उद्घाटन के दौरान सिजुआ क्षेत्र के ए जी एम के के सिंह,गिरिडीह लोकसभा प्रत्याशी पप्पू निषाद,जिला परिषद सदस्य मो इसराफिल उर्फ लाला, एलपीपी के जीएम राहुल राज, तेतुलमारी कोलियरी के प्रबंधक संतोष चौधरी, तेतुलमारी थाना प्रभारी सत्येन्द्र यादव, बीजेकेएमएस के वरीय नेता रमेश सिंह, पूर्व पार्षद बिरजू बाउरी, मनोज शर्मा,सत्येन्द्र सिंह, कांग्रेस नेता मो शाहजादा हामिद हुसैन, मो ताहिर, दिवाकर सिंह, झा नि संघ के जिला अध्यक्ष अनिल कुमार केवट, सुरेन्द्र दास, अनिल सिंह, महेश साव, शंकर मल्लाह, राजू रौशन, रंजीत प्रसाद, अनिल सिंह, कृष्णा सिंह,जगदीश प्रसाद आदि उपस्थित थे। खेल के दौरान आयोजन समिति के राजू मल्लाह, चक्रधारी महतो, दिलीप निषाद, प्रेमन कुमार, मनोज निषाद, मिथुन कुमार, लखपति मल्लाह, अनिल कुमार, नागेंद्र कुमार, अशोक कुमार, प्रेम कुमार, सूरज कुमार, कृष्णा कुमार, आयुष कुमार, दिनेश कुमार, बबलू कुमार, गणेश निषाद, संतोष कुमार,सुनील निषाद, उत्तम कुमार, महेश कुमार,बिजय बर्णवाल सहित आयोजन समिति के अन्य सदस्यों को सक्रिय देखे गये।

मजदूर समाज एवं सखा सहयोग सुरक्षा समिति कार्यालय में विश्वकर्मा पूजा मनाया गया

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : जय झारखण्ड मजदूर समाज एवं सखा सहयोग सुरक्षा समिति ₹ के संयुक्त तत्वावधान में प्रत्येक वर्षो की भांति इस वर्ष भी यूनियन के महामंत्री एवं समिति के संरक्षक सह महामंत्री आदरणीय बी के चौधरी जी के नेतृत्व पर श्री श्री विश्वकर्मा पूजा महोत्सव बड़े ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ पूजा अर्चना एवं संस्कृतिक कार्यक्रम विधिवत रूप के साथ मनाया गया। इस अवसर पर महामंत्री ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने संबोधन में कहा कि बाबा विश्वकर्मा के कृपा से समस्त बोकारो वासियों एवं बोकारो स्टील प्लांट में कार्यरत अधिकारियों, इस्पात कर्मियों, ठेका कर्मियों के सुरक्षित घर वापसी एवं उज्जवल भविष्य के लिए कामना किया गया । श्री श्री विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर मुख्य अतिथि बोकारो स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी माननीय बी के तिवारी ने पूजा अर्चना करते हुए कहा कि इस प्रकार का आयोजन बोकारो में देखने सुनने को नहीं के बराबर मिलता है, उन्होंने अपने वाणी में इस प्रकार का आयोजन कर लोगों को स्नेह सूत्र में एक साथ जोड़ने का काम करते हैं, उन्होंने दुर्घटना रहित रिकार्ड उत्पादन करने के लिए कामना किया, उसके उपरांत महाप्रसाद खिचड़ी का आंनद अपने सहयोगियों के साथ काफी लुत्फ उठाया। इस वर्ष दो हजार से अधिक लोगों ने महाप्रसाद खिचड़ी का आनंद उठाया। संध्या 5 बजे, स्थानीय कूलिंग पौंड सेक्टर - 9 में श्री श्री विश्वकर्मा बाबा का मूर्ति सेंकड़ों की संख्या में ढोल नगाड़े और आपस में रंग अबीर, गुलाल खेलते हुए विसर्जित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से अधिशासी निदेशक, एच आर, राजन प्रसाद, अधिशासी निदेशक, एस आर यु, पी के रथ, निदेशक, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं, बी जी एच, डॉ बी बी करुणामय, पूर्व अधिशासी निदेशक, बी जी एच, डॉ ए के सिंह, पूर्व अधिशासी निदेशक का एवं प्र, सी एस सिन्हा, निदेशक बी जी एच, डॉ आनंद कुमार, डॉ अनिंदो मंडल, डॉ श्रवण कुमार, चिकित्सा प्रशासन, संतोष कुमार, डॉ जी एन साहु मुख्य महाप्रबंधक, हरि मोहन झा, राजीव धवन,पीताम्बर चौधरी, कुन्दन कुमार, बोकारो स्टील ऑफिसर एसोसिएशन के अध्यक्ष, ए के सिंह मुख्य महाप्रबंधक, एम पी सिंह, आर आर सिन्हा, निरंजन कुमार, प्रभाकर कुमार, मनीष कुमार, राजेश कुमार, मुकेश कुमार, धनंजय कुमार, डी मधुकर, नीरज कुमार, एल के पूर्ति, एम के नस्कार, दीपक कुमार विशेष रूप से उपस्थित थे।

सघन जांच अभियान के दौरान कई वाहनों के खिलाफ हुई कार्रवाई

मेदिनीनगर (पलामू): छः मोहान चौक पर सघन जॉच अभियान चलाया गया चार पहिया वाहन एवं दोपहिया का जांच किया गया जिसमें दो पहिया वाहन के कुछ गाड़ियो के चालक बगैर हेलमेट एवं ट्रिपल लोड थे और कुछ बिना लाइसेंस के गाड़ी चला रहे थे । जिनके वहान को जप्त कर सुरक्षार्थ हेतु शहर थाना में रखा गया है । जिसमे 22वाहन मोटरसाइकिल गाड़ीयो एवं 01 टेंपो सवारी गाड़ीको सीजीएम कार्यालय डाल्टनगंज चलान फाइन हेतु भेजा गया है ।

राहुल गांधी के खिलाफ अमर्यादित भाषा को लेकर कांग्रेस ने संजय गायकवाड़ का किया पुतला दहन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष उमेश प्रसाद गुप्ता जी के नेतृत्व में बिरसा चौक नया मोड़ बोकारो में जननायक नेता प्रतिपक्ष आदरणीय राहुल गाँधी जी के खिलाफ अमर्यादित भाषा का प्रयोग करने वाले मोदी सरकार के मंत्री रवनीत सिंह बिटटू एवं महाराष्ट्र शिव सेना विधायक संजय गायकवाड का पुतला दहन कर उनकी बर्खास्ती मांग करते हुऐ जमकर विरोध प्रदर्शन किया गया।मौके पर गुप्ता ने विरोध प्रदर्शन करते हुऐ कहाँ कि प्रधानमंत्री एवं गृह मंत्री के इशारे और संरक्षण में जननायक नेता प्रतिपक्ष आदरणीय राहुल गांधी जी के खिलाफ बेहद आपत्तिजनक, हिंसक ओर असिष्ट बयानों प्रयोग किया गया हैं। रवनीत सिंह बिटटू के बयान कि बोकारो जिला कांग्रेस कमिटी कड़ी शब्दों में निंदा करते हैं। साथ ही उन्होंने मांग करते हुए कहा कि देश के प्रधानमंत्री से रवनीत सिंह बिट्टू जो मानसिक संतुलन खो बैठे हैं उन्हें मेंटल हॉस्पिटल में सख्त इलाज की जरूरत है। त्वरित केंद्र सरकार बर्खास्त करें ऐसे व्यक्तित्व पर टिप्पणी करना बीजेपी के गिरते स्तर का प्रमाण है। कहा कि इससे पहले भी कई बार बीजेपी के नेताओं के द्वारा अमर्यादित आपत्तिजनक भाषा टिप्पणी संसद के अंदर और संसद के बाहर करते आए हैं जिसके तहत जो जितना अपतिजनक विपक्ष पर करेगा उसे उतनी बड़ी पदोन्नति और मंत्री परिषद मिलता है ऐसी टिप्पणी कतई कांग्रेस पार्टी बर्दाश्त नहीं करेगी। कहा कि जननायक राहुल गांधी जी का परिवार ने देश को जोड़ने के लिए त्याग तपस्या और बलिदान दिया है रवनीत सिंह बिट्टू को राहुल गांधी ने यूथ कांग्रेस का पजांब प्रदेश का अध्यक्ष ही नहीं बनाया बल्कि तीन बार सांसद भी बनाया। मोदी सरकार में मंत्री बनने के लिए खास तौर पर न्यूनतम योग्यता एवं निचले स्तर के व्यक्तिगत हमले करना तथा विपक्ष से कितनी नफरत और तिरस्कार करना पदोन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। भाजपा में अगर थोड़ी सी भी नैतिकता है तो अभिलंब उनके रेल राज्य मंत्री के विवादित बयान पर माफी मांगे और उन्हें पद मुक्त करते हुए बर्खास्त करें । कांग्रेस के करोड़ों कार्यकर्ता और नेता इस बात को लेकर बहुत उद्वेलित और चिंतित हैं।

संक्षिप्त खबरें

कतरास में निकली आदिनाथ भगवान की पालकी शोभा यात्रा

धनबाद : दिगंबर जैन समाज के जैन धर्मावलंबी द्वारा विगत 10 दिनों से चल रहे पयुर्षण पर्व को धूमधाम से मनाया गया। बुधवार को भव्य शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें महिला व पुरुष सभी पारंपरिक वेशभूषा में सुसज्जित होकर बाबा आदिनाथ भगवान की प्रतिमा पालकी में लेकर चल रहे थे। जैन धर्मावलंबी के लोगों ने नित्य जैन मंदिर में सामूहिक पूजन कालशाभिषेक किया गया। रात्रि में भगवान महावीर की मूर्ति के समक्ष आरती की गई। समाज के कई लोगों ने एक दिन तीन दिन तक का उपवास किया गया। पयुर्षण पर्व के अंतिम दिन अनंत चतुर्दशी के दिन समाज के सभी पुरुषों। ने भगवान आदिनाथ की मूर्ति का कालशाभिषेक करने के पश्चात पूजन किया गया। अनंत चतुर्दशी के दिन समाज के सभी सदस्यों ने एक दिन का उपवास किया गया जिसमे बहुत से बच्चों ने भी भाग लिया।

पंखे पर लटका सांप, बच्चे और शिक्षक क्लास छोड़कर मैदान में भागे

धनबाद: मोहलीडीह स्थित सरस्वती विद्या निकेतन विद्यालय के क्लास रूम में पंखे में लटकता एक सांप को देखते ही बच्चे और शिक्षक बाहर भागे और प्राचार्या रेखा देवी को सूचित किए। संस्था बीइंग काइंड एंड हैप्पी के अध्यक्ष डॉ स्वतंत्र कुमार को सांप होने की सूचना दिया गया। वनविभाग को सूचित कर वाइल्ड लाइफ रेस्क्यू एक्सपर्ट राणा प्रताप सिंह को मौके पर भेजा गया। सांप को सुरक्षित रेस्क्यू कर बच्चों के बीच बहुत सारी जानकारी दिया गया। राणा प्रताप सिंह ने बताया ये अर्ध विषैला साँप है,जिससे इंसानो को कोई खतरा नहीं होता,इसका जहर इसके शिकार को ही मारता है जैसे चूहे, छिपकलियां ,मेंढक आदि। इसे इंग्लिश में कॉमन कैट स्नेक और हिंदी मे बिल्ली सांप, गामा सांप या मंजरा सांप कहते है। आँखों का रंग और बनावट बिल्ली के जैसा होने के कारण इसका नाम कैट स्नेक पड़ा। सांप को सुरक्षित जंगल में रिलीज कर दिया गया । मौके पर विद्यालय के निर्देशक प्रदीप कुमार व स्थानीय लोग मौजूद थे।

विधानसभा क्षेत्र में धूमधाम के साथ मनाया गया विश्वकर्मा पूजा

धनबाद: सृष्टि के महान शिल्पकार, निर्माण कार्यों के देवता भगवान विश्वकर्मा की जयंती मंगलवार 17 सितंबर को धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर कल-कारखाने व विभिन्न प्रकार के वाहनों को सजाया गया और पूरे विधि-विधान के साथ भगवान की पूजा-अर्चना की गई। विधानसभा क्षेत्र के भटमुरना बस्ती, निचितपुर-1 के अलकडीहा बस्ती में भी उत्साहपूर्वक पूजा का आयोजन किया गया। इन आयोजनों में बाघमारा विधानसभा क्षेत्र के विधायक प्रत्याशी सूरज महतो बतौर अतिथि शामिल हुए। महतो ने भगवान विश्वाकर्मा की अराधना की तथा सभी को शुभकामनाएं देते हुए बधाई दी। इससे पूर्व आयोजकों ने महतो को पुष्पगुच्छ भेंटकर स्वागत किया। मौके पर उन्होंने भगवान विश्वकर्मा के विशेषताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विश्वकर्मा पूजा का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व बहुत बड़ा है। यह पर्व विशेष रूप से उन लोगों द्वारा मनाया जाता है जो किसी प्रकार की निर्माण, शिल्प या तकनीकी कार्यों से जुड़े होते हैं। मशीनों और यंत्रों का पूजा इस पर्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है, क्योंकि भगवान विश्वकर्मा को यंत्रों और उपकरणों के देवता माना जाता है। उन्होंने कहा कि भगवान विश्वकर्मा को सृजन का प्रतीक माना जाता है, और वह वास्तुकला, यंत्र, और उपकरणों के निमार्ता माने जाते हैं।

सोन नदी में फंसे 10 लोगों को पुलिस व स्थानीय नाविकों के सहयोग से बचाया गया

हुसैनाबाद (पलामू): सोन नदी के डीला पर फंसे कुल 10 लोगों गीता देवी पति स्व सुरेंद्र चौधरी मालती देवी पति सुरेश पाल (कबरा निवासी) , सीमा देवी पति बलराम चौधरी, पूनम देवी पति बीरेंद्र चौधरी , गुलाबी देवी पति विश्वनाथ चौधरी, विनोद चौधरी, कबूतरी देवी पति जितन चौधरी, विश्वनाथ चौधरी, दो बच्चों में राजू कुमार पिता स्व सुरेंद्र चौधरी सात वर्ष, शिवानी कुमारी 5 वर्ष पिता स्व० सुरेंद्र चौधरी सभी साकीन देवरीकला थाना हुसैनाबाद (देवरी ओपी) को देवरी ओपी पुलिस एवम स्थानीय नाविकों के सहयोग से सुरक्षित रेस्क्यू कर निकाल लिया गया है ।

बोकारो स्टील में विश्वकर्मा पूजा धूमधाम से संपन्न

बोकारो : संयंत्रों और उपकरणों के देवता भगवान विश्वकर्मा की पूजा-अर्चना 17 सितम्बर को बोकारो स्टील प्लांट में परम्परानुसार पूरी श्रद्धा और उत्साह से की गयी। विभिन्न विभागों में कर्मचारियों ने पूरे उत्साह से मशीनों की पूजा की और प्लांट के सुरक्षित और सफल परिचालन की कामना की। बीएसएल के निदेशक प्रभारी श्री बीरेंद्र कुमार तिवारी, अधिशासी निदेशक सुरेश रंगानी, अधिशासी निदेशक राजन प्रसाद, अधिशासी निदेशक जे दासगुप्ता, बोकारो जनरल हॉस्पिटल के प्रभारी डॉ बी बी करुणामय ने अपने अन्य वरिष्ठ सहयोगियों के साथ नगर और प्लांट परिसर के विभिन्न विभागों के आयोजनों में शामिल होकर पूजा अर्चना की। गैर-संकार्य विभागों में एविएशन, वॉटर टावर सेक्टर-3, बीजीएच, मानव संसाधन विकास केन्द्र की कर्मशाला, वित्त एवं लेखा, अंतिम निपटारा प्रकोष्ठ शामिल थे। प्लांट परिसर में मुख्य अग्निशमन केन्द्र, आरएमपी, कोक अवन्स, आरएमएचपी, सिन्टर प्लांट, भारी अनुरक्षण यांत्रिक (लौह क्षेत्र), सामान्य अनुरक्षण यांत्रिक (लौह क्षेत्र), केन्द्रीय भंडार, यातायात, पीईबी, एसएमएस-न्यू, आइएमएफ, भारी अनुरक्षण यांत्रिक (स्टील जोन), कैपिटल रिपेयर (यांत्रिक), ब्लास्ट फर्नेस, बीपीएससीएल, टीबीएस, ऑक्सिजन प्लांट, एसएमएस-2 एवं सीसीएस, डीएनडब्ल्यू, मशीन शॉप, भारी अनुरक्षण यांत्रिक मिल (जोन), हॉट स्ट्रिप मिल, कोल्ड रोलिंग मिल, आरजीबीएस, एमआरडी, सीआरएम-3 तथा एचआरसीएफ शामिल थे, जहाँ निकटस्थ विभागों के सदस्य भी एकत्र हुए। विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर बीएसएल के प्रशासनिक भवन में निदेशक प्रभारी श्री बीरेंद्र कुमार तिवारी द्वारा झारखण्ड ग्रुप ऑफ माइंस के नए कार्यालय का उद्घाटन भी किया गया। अधिशासी निदेशकों ने अपने वरिष्ठ सहयोगियों के साथ विभिन्न विभागों के विश्वकर्मा पूजनोत्सव में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

राष्ट्रीय एसटी आयोग ने डीसी, एसपी और डीएफओ को जारी किया समन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू): राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की सदस्य आशा लकड़ा ने मंगलवार को पलामू समाहरणालय में आदिवासी समाज की समस्याओं पर एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की। इस बैठक का उद्देश्य जनजातीय समाज से जुड़ी समस्याओं के समाधान पर चर्चा करना था। हालांकि, इस बैठक में जिला उपायुक्त (डीसी), पुलिस अधीक्षक (एसपी) और जिला वन अधिकारी (डीएफओ) की अनुपस्थिति ने आयोग की नाराजगी को बढ़ा दिया है। आशा लकड़ा ने बताया कि न केवल यह तीनों वरिष्ठ अधिकारी बैठक में उपस्थित नहीं हुए, बल्कि उनके स्थान पर अंचल अधिकारी, बीडीओ ने केवल कंप्यूटर ऑपरेटर एवं अन्य कर्मियों को भेजा, जो कि इस मुद्दे की गंभीरता को कम कर दशार्ता है। उन्होंने इसे एक गंभीर मामला बताते हुए इसे प्रशासन की लापरवाही माना है। लकड़ा ने बताया कि डीसी, एसपी और डीएफओ को इस संदर्भ में समन जारी किया गया है और उन्हें 20 सितंबर को आयोग के समक्ष पेश होने का निर्देश दिया गया है। अधिकारियों से यह भी कहा गया है कि वे दोपहर 2 बजे तक अपनी अनुपस्थिति का संतोषजनक जवाब प्रस्तुत करें। आयोग ने अधिकारियों द्वारा कोई पूर्व सूचना न देने और बैठक को गंभीरता से न लेने पर कड़ा रुख अपनाया है। इस घटनाक्रम से स्पष्ट है कि आदिवासी समाज की समस्याओं को नजरअंदाज करने के आरोपों के बीच प्रशासनिक अधिकारियों की अनुपस्थिति ने सरकार की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े कर दिए हैं। अब यह देखना बाकी है कि 20 सितंबर को अधिकारियों का क्या जवाब होता है और आयोग इस पर क्या कदम उठाता है।

करम पूजा महोत्सव सह मिलन समारोह का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : रांची ओरमांझी प्रखंड के गुंजा में बुधवार को करम महोत्सव सह मिलन समारोह का भव्य आयोजन सरना आदिवासी समिति हेंदेबीली के सौजन्य से आयोजित किया गया, समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में स्थानीय खिजरी विधायक राजेश कच्छप मुख्य रूप से शामिल रहें. करम महोत्सव में तिरला पुरनाडीह, जवाबेड़ा, गुंजा, हेंदीबिल्ली, मंदरो, जवाबेड़ा चरखीडूमर, हेंदीबिली सागरटोली, हेंदीबिली गढ़टोली, हेंदीबिली सिमरा कोचा, तिरला मंझाटोला सहित अन्य जगहों से खोड़ा की सकल में महिलाएं पुरुष ढोल नगाड़ों के साथ पारंपरिक वेशभूषा में नाच-गान करते हुए हर्षोल्लास के साथ करमा मिलन समारोह में मेला शामिल हुए।नाचते गाते मेला स्थल पहुंचे थे। कार्यक्रम की शुरूआत करम डाली की पूजा से की गई,मिलन समारोह में झुमर गीत के साथ महिलाओं ने खूब नाचे गए, वहीं मुख्य अतिथि विधायक राजेश कच्छप ने भी मांदर बजाकर और नृत्य कर मनमोहक प्रस्तु दिखाए। वहीं उन्होंने लोगों को संबोधित में सामाज को संगठित होकर संस्कृति को बचाने की बात कही। मौके पर मुख्य रूप से समुन्द्र पहान,तुलसी खरवार, रमेश उरांव, मुखिया दशमी मिंज, जूलीता देवी, सहित सैकड़ो का गणमान्य लोग उपस्थित थे।

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER DRINKING WATER AND SANITATION DIVISION, HATIA PROJECT, RANCHI

VERY SHORT TENDER
E-Request For Proposal Short Notice
1st Call

e-Tender Notice No. LAB/DWSD/07/2024-25 Dated- 13.09.2024

Sl.	कार्य का नाम	EXPRESSION OF INTEREST FROM TECHNICAL MANPOWER PROVIDING AGENCIES FOR PROVIDING HUMAN RESOURCES IN ZONE 2 (GARHWA, MEDININAGAR, CHATRA LATEHAR, LOHARDAGA, GUMLA AND SIMDEGA) WATER TESTING LABORATORIES OF JHARKHAND UNDER DRINKING WATER AND SANITATION DEPARTMENT, JHARKHAND.
2.	परिमाण विपत्र मूल्य एवं अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र मूल्य (₹ 0,000) एवं अग्रधन की राशि (₹ 0,10,000)
3	वेबसाइट में निविदा प्रकाशन की तिथि एवं समय	20.09.2024 at 1:00 PM से।
4	प्री बीड बैठक की तिथि एवं समय	23.09.2024 in the Office of the Chief Engineer-cum-Executive Director, Programme Management Unit, DWSD, Jharkhand, Doranda, Ranchi at 3:00PM
5	ई–निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय	30.09.2024 at 5:00PM
6	ई–निविदा खोलने की तिथि एवं समय	01.10.2024 at 2:00PM से।
7	ई–निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का पदनाम एवं पता	Executive Engineer, Drinking Water and Sanitation Division, Hatia Project, Ranchi - 834002
8	ई–मेल	dwsdhatiaproject@gmail.com
9	ई–निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष संख्या	9204931325

N.B:- For Details 1. निविदा अन्तर्गत परिमाण विपत्र का मूल्य एवं अग्रधन की राशि ई–गवर्नेंस विभाग झारखण्ड मंत्रालय, धुर्वा, रांची के आदेश सह ज्ञापांक 120 दिनांक 03.10.2023 के अनुरूप प्राप्त की जाएगी।
2. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई–भुगतान सम्वेदक द्वारा जिस बैंक खाता से किया जाएगा। उसी खाते में अग्रधन की राशि वापस होगी। अगर बैंक खाता को बन्द कर दिया जाता है तो उसकी सारी जवाबदेही सम्वेदक की होगी।
3. प्राक्कलित राशि घट अथवा बढ़ सकती है उसी प्रकार से अग्रधन एवं परिमाण विपत्र की राशि भी देय होगी है।
4. विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट http//:jharkhandtenders.gov.in पर देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता
पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल हटिया योजना, रांची।

PR.NO.335951 Drinking Water and Sanitation(24-25):D

दो दिनों की भारी बारिश में हेसल में गिरे कुल 18 घर

अनगड़ा : प्रखंड हेसल पंचायत में मूसलधार बारिश से कुल 18 लोगो का घर गिर गया है हेसल पंचायत मुखिया कविता देवी दिव्यांग अध्यक्ष तबरेज अंसारी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल मिला और जितने लोगो का बारिश में घर गिर गया सभी लोगो को प्रखंड विकास पदाधिकारी से मिलाया और सभी लोगो ने अपना अपना आवेदन दिया और कहा कि हम लोगो का बहुत पुराना घर था किसी तरह अपना जीवन यापन करते आ रहे है एसे में हम सब लोग रहने को बेवश है बी डी ओ ने आश्वासन दिया है कहा जांच पड़ताल कर लोगो को आबुआ आवास मुहाया कराया जाएगा।

मालगाड़ी हुई दुर्घटनाग्रस्त, एक इंजन पलटा और एक हुई बेपटरी

सिल्ली/मुरी : मुरी जंक्शन से करीब डेढ़ किलोमीटर आगे दक्षिणी छोर लगाम गांव के पास मंगलवार के दिन 58 डिब्बे की मालगाड़ी लोहरदगा से बॉक्साइट लोड कर मुरी स्थित हिंडालको आई थी। इसी क्रम में वजन घर के समीप मालगाड़ी मूवमेंट के क्रम में रेलवे पटरी के अंतिम छोर (डेड इण्ड) में जा घुसा जिसके कारण मौके पर ही एक इंजन जमीन पर पलट गया और दूसरा इंजन बेपटरी डीरेल हो गया। खबर मिलते ही रेलवे के अधिकारी एवं मुरी पुलिस भी मौके पर पहुंची तथा घटना का जायजा लिया। इधर प्राप्त सूत्रों के अनुसार मालगाड़ी की मूवमेंट कर रहे शंटर और ऑपरेटिंग विभाग के 2 पॉइंट्समैन जो इंजन में मौजूद थे बाल बाल बच गए। किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। घटना के बाद इंजन में मौजूद तीनों रेल कर्मियों का रेलवे अस्पताल में ब्लड सैंपल लिया गया और जांच हेतु लैब भेज दिया गया। घटना को लेकर अधिकारियों ने बताया की इसमें किसी तरह का कोई नुकसान नहीं हुआ है हालांकि घटना कैसे घटी इसकी विभागीय जांच चल रही है।

डिग्री कॉलेज में ओबीसी मोर्चा जिला अध्यक्ष नरेश साहू की अध्यक्षता में हुई बैठक

अनगड़ा : भारतीय जनता पार्टी रांची जिला ओबीसी मोर्चा की बैठक जिला अध्यक्ष नरेश साहू की आध्यचता में एक अहम बैठक रांची जिला ग्रामीण ओबीसी मोर्चा प्रभारी संजू कुशवाहा कि उपस्थित में महिला डिग्री कॉलेज गोंदली पोखर अनगडा में की गई बैठक में आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर चर्चा परिचर्चा किया गया और बूथ कमिटी कैसे मजबूत हो इन सभी मुद्दों पर कार्यकताओं ने बारी बारी से अपनी बातों को रखा मौके पर उपाध्यक्ष सुकर साहू महामंत्री इंदरजीत महतो कोषाध्यच रविन्द्र कुमार वर्मा मिलेश प्रजा पति नंदलाल साहू कुलेश्वर महतो फलिंद्र गोप संदीप कुमार साहू दूबराज यादव गणेश गोप प्रदीप कुमार अभिषेक कुमार एवम कार्यकर्ता गण शामिल थे।

कृषि मंत्री दीपिका पांडे ने केशव महतो कमलेश का किया स्वागत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : अनगडा अंचल समीप प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश माननीय झारखण्ड सरकार कृषि मंत्री दीपिका पाण्डेय सिंह जी का भव्य स्वागत किया गया आपको बता दें कि अध्यक्ष का पहली बार अनगड़ा दौरा था अध्यक्ष, माननीय मंत्री ने भगवान बिरसा मुण्डा के आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर नमन किया कार्यकताओं ने गर्मजोशी के साथ भव्य स्वागत किया ।

आपको बता दें कि अध्यक्ष, माननीय मंत्री

सिल्ली प्रखण्ड कांग्रेस कमिटी के एक दिवसीय बैठक में शामिल होने निकाले थें उन्होंने भव्य स्वागत हेतू हृदय पूर्वक धन्यवाद किया है । सिल्ली प्रखंड कांग्रेस कमिटी की बैठक संपन्न होने पश्चात सिल्ली में कृषि विभाग के उद्यान केन्द्रों का निरीक्षण भी किए।मौके पर प्रमुख दीपा उरांव विधायक प्रतिनिधि राजेन्द्र मुण्डा प्रखण्ड अध्यक्ष एतवा उरांव श्रद्धा सरना समिति गेतलसूद अध्यक्ष अजय तिर्की विधायक प्रतिनिधि मत्स्य विभाग सचिन नायक जिला सचिव शिवदास गोस्वामी प्रखण्ड अध्यक्षा सरिता देवी पूर्व अध्यक्ष युवा खिजरी जितेन्द्र महतो अजा प्रखण्ड अध्यक्ष संजय नायक सहित यूनूस अंसारी, हिरदू उरांव, रोहित नायक, समीम खान, दशरत पहान, बिहारी मुण्डा, सोहन करमाली, आशिष मुण्डा, बिट्ठू उरांव, मुनेश करमाली, मुन्ना मुण्डा, छोटेलाल महतो, अब्बास अंसारी, राम जी, रब्बानी राज, शाहनाज खातुन, अनीता देवी, संगीता कैथा, ममता कुमारी, फूलो देवी, शांति देवी सहित अन्य कांग्रेस नेत्री उपस्थित रही ।

सोलर प्लेट चोरी के मामले में एक युवक गिरफ्तार

मेदिनीनगर (पलामू) : ग्राम–महुअरी में 03 अदद सोलर प्लेट एवं स्टार्टर चोरी होने के संबंध में हुसैनाबाद थाना कांड सं0– 188/2024 दिनांक– 21.08.2024 धारा (303 (2) बी0एन0 एस 10 के तहत अज्ञात चोरो के विरूद्ध कांड अंकित किया गया था साथ ही पूर्व एवं वर्तमान में कृषि कार्य हेतू ग्रामीण क्षेत्र में लगाये गये सोलर प्लेट चोरी होने के संबंध में पुलिस अधीक्षक महोदया, पलामू के निदेर्शानुसार अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी हुसैनाबाद के नेतृत्व में एक छापामारी दल का गठन किया गया था। छापामारी दल के द्वारा छापामारी के दौरान कुन्दन कुमार पे0– दिलीप मेहता ग्राम– हसनपुर थाना नवीनगर जिला– औरंगाबाद को एक सोलर प्लेट के साथ गिरफ्तार किया गया, जिसे स्वीकारोक्ति बयान के आधार पर चोरी का 09 सोलर प्लेट एवं 02 ट्रैक्टर का बैट्री बरामद किया गया है।

कृषि मंत्री दीपिका पांडेय पहुंचीं सिल्ली

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : झारखंड सरकार के कृषि मंत्री दीपिका पांडेय 18 सितंबर को सिल्ली पहुंची जहां कांग्रेस कार्यकर्ताओं के द्वारा प्रेम वाटिका सिल्ली में एक बैठक रखा गया था। जिसमें मुख्य अतिथि कृषि मंत्री दीपिका पांडेय उपस्थिति रही। बैठक में महिलाओं को संबोधित करते हुए दीपिका पांडेय ने कहा कि झारखंड सरकार के द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ महिलाओं को सीधी तौर पर मिल रही है। महिला का सम्मान सरकार जानती है तभी उनके खाते में 1000 हजार प्रतिमाह भेज रही है। कृषि उत्थान के लिए किसानो का किसान ऋण 2 लाख तक माफ करने का सरकार ने निर्णय लिया है। वही झारखंड मोड़ में कृषि उद्यान केंद्र का निरीक्षण किया जहां आम के पौधे एवं अमरूद लगे हुए थे। उसको सुरक्षित बचाव के लिए चहरदीवारी करने को लेकर अधिकारी को निर्देश दिया। दूसरी और केशव महतो कमलेश ने भी महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी सब का सम्मान करती है इसे आगे बढ़ाने के लिए हम लोग एकजुट होकर कार्यकर्ता गण सरकार की योजनाओं को लोगों तक पहुंचाएं साथ ही साथ कृषि उद्यान के बारे में बताते हुए कहा कि यह उद्यान बिहार सरकार के समय से ही है। यहां से बिहार आम का नर्सरी जाता था जिसका बिहार में राजस्व मिलता था।हमलोगों का प्रयास रहेगा कि फिर से एक बार यह सिस्टम बहाल हो पाए ताकि राजस्व की प्राप्ति सरकार को पुनः मिल सके। कार्यक्रम के अंत में अंत में डॉक्टर राकेश किरण महतो ने सभा का धन्यवाद ज्ञापन देकर समापन किया।

13 करोड़ 18 लाख की लागत से बनेगा बागोडीह बाजारटांड़ से बराकर नदी भाया छतरबाद पथ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरिया(गिरिडीह): सरिया प्रखण्ड क्षेत्र के बागोडीह बाजारटांड़ से अनुमंडल कार्यालय, छतरबाद, अनुमंडलीय अस्पताल होते हुए बराकर पुल तक 13 करोड़ 18 लाख 36 हजार की लागत से सडक बनेगा ।इस सडक की कुल लम्बाई लगभग छह किलोमीटर होगा । इसका शिलान्यास मंगलवार की शाम स्थानीय बिधायक विनोद कुमार सिंह ने शिलापट्ट का अनावरण कर व नारियल फोडकर किया। इस दौरान उपस्थित ग्रामीणों को सम्बोधित करते हुए बिधायक विनोद कुमार सिंह ने कहा कि इस सड़क की मांग वर्षों से हो रही थी जिसे हमने अथक प्रयास कर पीडब्ल्यूडी से इसे स्वीकृत करवाकर धरातल पर उतारा । इस सडक के बन जाने से छतरबाद, झरहा उर्रो,बागोडीह के ग्रामीणों को तो लाभ होगा ही साथ ही अनुमंडल कार्यालय व अनुमंडलीय अस्पताल आने जाने में क्षेत्र के लोगों को सुविधा होगी । आगे कहा कि क्षेत्र के विकास के लिए हम लगातार प्रयासरत हैं। सडक, पुल, पुलिया ,स्वास्थ्य व शिक्षा के क्षेत्र में लगातार कार्य हो रहे हैं । साथ ही महिलाओं, बुजुर्गों को पेंशन व 18 से 25 वर्ष उम्र की महिलाओं को म ईया सम्मान योजना के तहत 1 हजार रुपया झारखंड सरकार दे रही है । इन्होंने कहा कि शीघ्र ही अनुमंडल कार्यालय मोड से फकिरापहरी होते हुए सरिया बिरनी तक पथ का निर्माण, नावाडीह पंचायत भवन जाने वाली सडक का निर्माण समेत अन्य योजनाओं का भी शिलान्यास शीघ्र किया जायेगा । इस दौरान विभाग के जेई आफताब आलम ने उक्त सडक की तकनीकी जानकारी दिया ।

Govt. of Jharkhaud
URBAN DEVELOPMENT & HOUSING DEPARTMENT GARHWA NAGAR PARISHAD

E-Procurement Notice
Short E-Tender Reference No. : GNP-03/2024-25, Date- 13.09.2024

1.	Name of the Work	Construction Of Gateway At Entrance/Exit Side And Providing/Fixing Of Main Signage - External Of Bus Stand Under Ward No.-06
2.	Estimated Cost (Rs.)	52,97,600.00 (Fifty Two Lakh Ninty Seven Thousand Six Hundred Sixty Rupees) Only
3.	Tender Fee	Rs. 10000.00 (Ten Thousand Only) (Online Mode)
4.	Earnest Money (Rs.)	105952.00 (One Lakh Five Thousand Nine Hundred Fifty Two Rupees) (Online Mode)
5.	Time of Completion	3 Months
6.	Date of Publication of Tender on Website	18.09.2024 up to 11:00 AM
7.	Last Date/Time for receipt of E-Tender on Website	28.09.2024 up to 5:00 PM
8.	Date of Opening E-Tender	30.09.2024, Time: 11:00 AM
9.	Name & Address of office Inviting Tender	Executive Officer, Nagar Parishad Garhwa - 822114
10.	Contact No of E-Procurement officer	9431141644, 8409053313
11.	Helpline Number of E-Procurement cell	8409053313

Note : 1. Only e-Tender will be accepted.
2. Any change in BOQ can be seen on website http://jharkhandtenders.gov.in
3. Further details can be seen on website http://jharkhandtenders.gov.in 4.
4. संवेदक द्वारा 10% से कम दर देने पर एकरारनामा के समय अतिरिक्त जमानत की राशि देनी होगी
(i) 10% से 20% Below की राशि का 20% तथा
(ii) 20% से अधिक Below की राशि का 30% अतिरिक्त जमानत का प्रावधान लागू रहेगा।
(iii) पथ निर्माण विभाग के संकल्प संख्या 2148(S) दिनांक 08.09.2020 के सभी प्रावधान लागू रहेंगे।

Sd/- Executive Officer
Nagar Parishad Garhwa

PR 335888 Urban Development (24-25)_D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
पेयजल एवं स्वच्छता यॉन्त्रिक प्रमण्डल, गुमला

e-procurement
Very Short e-Procurement Notice Inviting Tender No :- 02/2024-25 Date :- 18.09.2024

S. N.	Name of Work	Estimated Cost (in Rs)	Earnest money (In Rs)	Cost of Tender Document. Non-Refundable. (in Rs.)	Time of Completion
1	Supply, Installation and Commissioning of Motor pump sets, stabilizers with all accessories and allied works for the Rural Water Supply Pumping Plant Basis for the year 2024-25 under D.W.&S. Mechanical Division, Gumla	29,05,107.00	58,200.00	5000.00	3 Months
2	Date of publication of e-tender on website	23.09.2024 at 2:00 PM			
3	Last date of submission of Bid (Online)	30.09.2024 up to 5.00 PM			
4	Last date/Time for submission of tender Fees & EMD (Online)	30.09.2024 up to 5.00 PM			
5	Date and time of opening of e tender	01.10.2024 at 4:00 PM. at office of Superintending Engineer. D.W. & S. Mech. Circle, Ranchi			
6	Name of office of Inviting Tender	Executive Engineer. D.W. & S. Mech. Division, Gumla			
7	Contact No. of e-procurement Officer: - email ID of e-procurement Officer :-	9471163627 eemechgumla@gmail.com			

Note: - Only e-tenders will be accepted. Further details can be seen & downloaded on website http://jharkhandtenders.gov.in

कार्यपालक अभियन्ता
पेयजल एवं स्वच्छता यॉन्त्रिक प्रमंडल,गुमला

PR 335906 Drinking Water and Sanitation(24-25).D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, लघु सिंचाई प्रमंडल,गुमला

ई० निविदा आमंत्रण सूचना
ई० निविदा संख्या MID/GUMLA/ F_2-28/2024-25 दिनांक – 18.09.2024

1. ई– निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी के कार्यालय का नाम एवं पता– कार्यपालक अभियंता, लघु सिंचाई प्रमण्डल, गुमला ।
2. ई निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का मोबाईल नं0 :– 0651–2214784 मो0 8986890345
3. वेबसाईट में ई–निविदा प्रकाशन की तिथि एवं समय :– 20.09.2024 (अपराह्न 02:00 बजे से)
4. वेबसाईट में ई–निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय :– 26.09.2024 (अपराह्न 05:00 बजे तक)
5. ई–निविदा खोलने की तिथि एवं समय :– 28.09.2024 (अपराह्न 02:00 बजे)

क्र0	योजना का नाम	मद	प्राक्कलित राशि (रूपये में)	अग्रधन की राशि (रूपये में)	परिमाण विपत्र का मूल्य (रूपये में)	कार्य समाप्ति की अवधी
1	2	3	4	5	6	7
1	Construction of Bituminous Road From Thana Chowk to Kanhar Toli Cheter Gumla.	Untied Fund	2495450.00	50000.00	5000.00	03 माह

नोट:–
(1) केवल ई० निविदा ही स्वीकार की जायेगी।
(2) निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल Online Mode द्वारा ही स्वीकार्य होगी।
(3) निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई भुगतान जिस खाता से किया जायेगा, उसी खाते में अग्रधन की राशि वापस होगी। अगर खाता को बंद कर दिया जाता है तो सारी जवाबदेही संबंधित निविदादाता की होगी ।
(4) प्राक्कलित राशि घट बढ़ सकती है। अग्रधन की राशि परिमाण विपत्र की राशि के अनुसार होगी ।
(5) राज्य सरकार के द्वारा निर्गत सभी अद्यतन आदेश/परिपत्र लागू होंगे ।
(6) विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट– http://jharkhandtenders.gov.in में देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियन्ता,
लघु सिंचाई प्रमंडल,गुमला।

PR 335977 (Minor Irrigation) 24-25 (D)

झारखण्ड सरकार
कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग (पशुपालनप्रभाग)
जिला पशुपालन पदाधिकारी, गुमला का कार्यालय
राष्ट्रीय पशुधन मिशन से सम्बंधित जानकारी

सूचना

राष्ट्रीय पशुधन मिशन का उद्देश्य छोटे जुगाली करने वाले पशुओं, मुर्गीपालन और सूअरपालन क्षेत्र तथा चारा क्षेत्र में उद्यमिता विकास के माध्यम से रोजगार सृजन, नस्ल सुधार के माध्यम से प्रति पशु उत्पादकता में वृद्धि के उद्देश्यों को प्राप्त करना है। इस योजना में कोई भी गुमला जिला के व्यक्ति, स्वयं सहायता समूह (SHGs), कृषक उत्पादक संघ (FPOs), कृषक सहकारिता संगठन (FCOs), Joint Liability Groups (JLGs) तथा धारा 8 के अन्तर्गत पंजीकृत कम्पनियॉं आवेदन कर सकते है।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन (एनएलएम) पशुधन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों के लिए 50% पूंजी सब्सिडी प्रदान करता है ।
- ग्रामीण पोल्ट्री में नस्ल सुधार फार्म : रु0 तक 25 लाख
- भेड़ और बकरी प्रजनन फार्म : रु0 तक 50 लाख
- सुअर प्रजनन फार्म : रु0 तक 30 लाख
- चारा मूल्य संवर्धन इकाइयॉं : रु0 तक 50 लाख
- चारा भंडारण इकाइयॉं : रु0 तक 50 लाख

इस योजना में सिर्फ ऑनलाईन आवेदन ही किया जा सकता है। पोर्टल से संबंधित प्रश्नों के लिए एनएलएम पोर्टल हेलप डेस्क से www.dahd.nic.in अथवा nlm.support@sidbi.in पर संपर्क किया जा सकता है। विशेष जानकारी के लिए अपने निकटतम प्रखण्ड पशुपालन पदाधिकारी अथवा जिला पशुपालन पदाधिकारी से संपर्क करें। आप https://nlm.udyamimitra.in पर अपने आवेदन अपलोड कर सकते है।

निवेदक
जिला पशुपालन पदाधिकारी,
गुमला

PR 335864 (Agriculture,Animal Husbandry And Co-opretive Department)24-25*D

कार्यालय जिला परिषद, हजारीबाग

अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना संख्या :– 20/2024–25

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं नाम :– जिला अभियंता, जिला परिषद, हजारीबाग।
2. परिमाण विपत्र की बिक्री की तिथि :– 27.09.24 को 10:00 पूर्वाह्न से 3:00 बजे अपराह्न तक।
3. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय :– दिनांक 28.09.24 को 3:00 बजे अपराह्न तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय :– दिनांक 28.09..24 को 4:00 बजे अपराह्न से
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान :– जिला अभियंता, जिला परिषद, हजारीबाग।
6. निविदा प्राप्ति का स्थान :– नियंत्रण कक्ष, हजारीबाग एवं जिला परिषद, हजारीबाग।
7. निविदा खोलने का स्थान :– जिला परिषद कार्यालय, हजारीबाग।
8. मद का नाम :– 15वें वित्त आयोग मद।

क्र0	प्रखण्ड	पंचायत	ग्राम	योजना का नाम	प्राक्कलित राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य	अग्रधन की राशि	योजना पूर्ण करने की तिथि
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	कटकमसांडी	कंडसार	नवादा	ग्राम नवादा में तालाब के समीप श्मशान शेड का निर्माण।	624700	1250	12500	छः माह
2	बड़कागांव	नापोखुर्द	नापोखुर्द	ग्राम नापोखुर्द में शिव मंदिर के सामने खाता न0 75, प्लाट न0 1591 रकबा 3.50 में हाट बजार का निर्माण।	989800	1250	20000	छः माह
3	सदर	सदर	सदर	सुशील कॉलोनी संख्या 1 में आवास संख्या 1 से 6 तक पी0सी0सी0 पथ मरम्मती एवं पेवर ब्लॉक कार्य।	989400	1250	20000	छः माह
4	सदर	सदर	सदर	सुशील कॉलोनी संख्या 2 में आवास संख्या 0 से 8 तक पेवर ब्लॉक कार्य।	989400	1250	20000	छः माह
5	सदर	सदर	सदर	सुशील कॉलोनी संख्या 2 में आवास संख्या 9 से 12 तक पेवर ब्लॉक एवं अन्य कार्य।	999400	1250	20000	छः माह

नोट :– 1. अद्यतन UCAN प्रमाण पत्र निविदा के साथ समर्पित करना अनिवार्य है अन्यथा कार्य आवंटित नहीं किया जायेगा।
2. निविदा की शर्तें कार्यालय के सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

जिला अभियंता,
जिला परिषद, हजारीबाग।

PR.NO.335934 District(24-25):D

'एक देश एक चुनाव' अमृतकाल की अमृत उपलब्धि बने

ललित गर्ग

जब दुनिया के अनेक देशों में 'एक राष्ट्र-एक चुनाव' की परम्परा सफलतापूर्वक संचालित हो रही है तो भारत में इसे लागू करने में इतने किन्तु-परन्तु क्यों है? देश में इसे लागू करने से सरकार कुछ-कुछ समय बाद चुनावी मोड में रहने के बजाय शासन यानी विकास योजना पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकती है। इससे समय एवं संसाधनों की भी बचत होगी।

नरेन्द्र मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल के 100 दिन पूरे होने के मौके पर भारतीय जनता पार्टी ने 'एक देश एक चुनाव' के अपने चुनौतीपूर्ण संकल्प को लागू करने की बात कहकर राजनीतिक चर्चा को गरमा दिया है। भारत के लोकतंत्र की मजबूती एवं चुनावी प्रक्रिया को अधिक प्रासंगिक एवं कम खचीर्ला बनाने के लिये 'एक देश एक चुनाव' पर चर्चा होती रही है। इसको लेकर भाजपा जिस तरह बेझिझक होकर तेजी से आगे बढ़ रही है, उससे अंदाजा लगाया जा रहा कि केंद्र को सहयोगी दलों का पूरा समर्थन मिल रहा। दो बड़े दलों में से एक जेडीयू ने मोदी के 'एक देश एक चुनाव' वाले इरादे पर सहमति जता दी है। कहा गया कि राजग सरकार अपने वर्तमान कार्यकाल के भीतर इस महत्वपूर्ण चुनाव सुधार को लागू कराने को लेकर आशावादी है और उसके इस आशावाद में देश को एक नई दिशा मिल सकेगी। भारत की वर्तमान चुनावी प्रणाली में निहित कई चुनौतियों का समाधान करने के लिए 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' की अवधारणा एक संभावित समाधान के रूप में उभरी है। शासन के सभी स्तरों- पंचायत, नगरपालिका, राज्य और राष्ट्रीय- में एक साथ चुनाव कराने से लागत (खर्च)-प्रभावशीलता और प्रशासनिक दक्षता से लेकर बेहतर शासन और नीति निरंतरता तक कई लाभ मिल सकते हैं। यह नये भारत, सशक्त भारत एवं विकसित भारत के संकल्प को आकार देने का मुख्य आधार बन सकता है एवं आजादी के अमृतकाल की एक अमृत उपलब्धि बनकर सामने आ सकता है।

भले ही स्पष्ट बहुमत के अभाव में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राजग की तीसरी पारी में बदलावकारी फैसले लेना उतना सहज नहीं रह गया है, जितना पहली-दूसरी पारी में नजर आता था। लेकिन भाजपा की सरकार इतनी भी कमजोर नहीं है कि अपने चुनावी वायदों एवं विकासमूलक कार्ययोजनाओं को लागू न कर सके। नरेन्द्र मोदी जैसा साहसी एवं करिश्माई नेतृत्व है तो उसके द्वारा देशहित की योजनाओं में आने वाले अवरोध वह दूर कर ही लेंगे। एक दशक की विकासमूलक कार्यशैली के बाद अब भी भाजपा अपने सहयोगी दलों के साथ मिलकर अपनी योजनाओं को अंजाम तक पहुंचाने में जुटी है। भले ही भाजपा-सरकार कई मुद्दों पर यू टर्न लेते हुए भी नजर आई। बहरहाल, लोकसभा में पहले के मुकाबले कमजोर स्थिति होने के बावजूद खुद को साहसिक निर्णय लेने वाली पार्टी के रूप में एक बार फिर अपने एक मुख्य एजेंडे 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' को आकार देने के लिये तत्पर हो गयी है। इसके लिए सरकार ने पक्ष-विपक्ष के सभी नेताओं से एक साथ आने का अनुरोध किया था। निस्संदेह, एक राष्ट्र, एक चुनाव के लिये भाजपा द्वारा नई पहल किए जाने के निहितार्थ राजनीति से ज्यादा राष्ट्रहित में है।

निश्चिय ही 'एक देश एक चुनाव' की योजना को लागू करना राजग के लिये बड़ी चुनौती होगी क्योंकि इस बार विपक्ष पहले के मुकाबले मजबूत भी है और एकजुट भी है। इसमें दो राय नहीं कि यह बात तार्किक है कि एक राष्ट्र, एक चुनाव का प्रयास शासन में सुनिश्चितता लाएगा। वहीं बार-बार के चुनाव खचीर्ले होते हैं। दूसरे राज्य-दर-राज्य लंबी आचार संहिता लागू होने से विकास कार्य भी बाधित होते हैं। साथ ही साथ शासन-प्रशासन व सुरक्षा बलों की ऊर्जा के क्षय के अलावा जनशक्ति का अनावश्यक व्यय होता है। विगत लोकसभा चुनावों में कुल सरकारी खर्च 6600 करोड़ रुपये आया था जो भारत जैसे विविधतापूर्ण विशाल देश को देखते हुए भले ही जायज कहा जावे, लेकिन बार-बार होने वाले चुनावों से होने वाले ऐसे भारी-भरकम खर्चे देश की अर्थ-व्यवस्था पर बोझ तो डालते ही है। भारत में भ्रष्टाचार की जड़ भी महंगी होती चुनाव व्यवस्था है क्योंकि जब करोड़ों रुपये खर्च करके कोई विधानसभा या लोकसभा का प्रत्याशी जनप्रतिनिधि बनेगा तो वह विजयी होने के बाद सबसे पहले अपने भारी खर्च की भरपाई करने की कोशिश करेगा। अतः असल में बात सम्पूर्ण चुनावी व्यवस्था के सुधार की होनी चाहिए। मगर इसकी बात करने पर सभी राजनैतिक दलों में एक सन्नाटा पसर जाता है। लेकिन पक्ष एवं विपक्ष को अपने राजनीतिक हितों की बजाय देशहित को सामने रखकर इस मुद्दे पर आम सहमति बनानी चाहिए। पारदर्शी व निष्पक्ष चुनाव के लिये एक साथ चुनावी मशीनरी तथा सुरक्षा बलों की उपलब्धता के यक्ष प्रश्न को भी सामने रखकर इस पर सकारात्मक रूख अपनाना चाहिए और इसके सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए आम सहमति बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में, भारत हमेशा से राजनीतिक विचारधाराओं, विविध संस्कृतियों और विशाल आबादी का मिश्रण रहा है। हर गुजरते चुनाव चक्र के साथ, राष्ट्र लोकतांत्रिक उत्साह का महाकुंभ देखता है, जहाँ लाखों लोग अपने वोट के अधिकार का प्रयोग करते हैं और अपने प्रतिनिधियों को चुनते हैं। हालाँकि, इस जीवंत लोकतांत्रिक प्रक्रिया के बीच, विभिन्न स्तरों-स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय-पर चुनावों के समन्वय को लेकर बहस ने हाल के वर्षों में काफी जोर पकड़ा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने एक दशक के शासन एवं पिछले महीने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से किए गए अपने संबोधन में 'एक देश, एक चुनाव' की जोरदार वकालत की थी और कहा था कि बार-बार चुनाव होने से देश की प्रगति में बाधा उत्पन्न हो रही है। उन्होंने राजनीतिक दलों से लाल किले से और राष्ट्रीय तिरंगे को साक्षी मानकर राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित करने का आग्रह किया था। हाल में संपन्न लोकसभा चुनाव से पहले भाजपा द्वारा जारी चुनाव घोषणापत्र में उसने 'एक देश, एक चुनाव' को प्रमुख वादों के रूप में शामिल किया था।

पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में गठित एक उच्च स्तरीय समिति ने इस साल मार्च में पहले कदम के रूप में लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के लिए एक साथ चुनाव कराने की सिफारिश की। समिति ने राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय राजनीतिक दलों के साथ परामर्श किया और संभावित अनुशंसाओं के साथ आम लोगो एवं न्यायविदों के विचार आर्मंत्रित किये। समिति ने लोकसभा और विधानसभा चुनाव के 100 दिनों के भीतर स्थानीय निकाय चुनाव कराए जाने की भी सिफारिश की। इसके अलावा, विधि आयोग भी 2029 से एक साथ चुनाव कराने की सिफारिश कर सकता है। असल में बात सम्पूर्ण चुनावी व्यवस्था के सुधार की होनी चाहिए। मगर इसकी बात करते हुए सभी राजनैतिक दलों के सामने निजी हित एवं चुनाव जीतने का गणित सामने आ जाता है। भारत की असली विडम्बना यही है। जब भी सरकारी खर्चे से चुनाव कराने की बात होती है तो इस राह को अव्यावहारिक बता दिया जाता है। जबकि जर्मनी जैसे लोकतन्त्र में यह प्रणाली सफलतापूर्वक काम कर रही है। दक्षिण अफ्रीका में राष्ट्रीय और प्रांतीय विधानमंडलों के चुनाव एक साथ प्रत्येक पाँच वर्ष पर आयोजित किये जाते हैं, जबकि नगर निकाय चुनाव प्रत्येक दो वर्ष पर आयोजित किये जाते हैं। स्वीडन में राष्ट्रीय विधानमंडल, प्रांतीय विधानमंडल/काउंटी कौंसिल और स्थानीय निकायों/नगर निकाय सभाओं के चुनाव एक निश्चित तिथि, यानी हर चौथे वर्ष सितंबर के दूसरे रविवार को आयोजित किये जाते हैं। ब्रिटेन में ब्रिटिश संसद और उसके कार्यकाल को स्थिरता एवं पूर्वानुमेयता की भावना प्रदान करने के लिये निश्चित अवधि संसद अधिनियम, 2011 पारित किया गया था। इसमें प्रावधान किया गया कि प्रथम चुनाव 7 मई 2015 को और उसके बाद हर पाँचवें वर्ष मई माह के पहले गुरुवार को आयोजित किया जाएगा। जब दुनिया के अनेक देशों में 'एक राष्ट्र-एक चुनाव' की परम्परा सफलतापूर्वक संचालित हो रही है तो भारत में इसे लागू करने में इतने किन्तु-परन्तु क्यों है? देश में इसे लागू करने से सरकार कुछ-कुछ समय बाद चुनावी मोड में रहने के बजाय शासन यानी विकास योजना पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकती है। इससे समय एवं संसाधनों की भी बचत होगी। एक साथ चुनाव कराने से मतदान प्रतिशत भी बढ़ेगा, क्योंकि लोगों के लिए एक साथ कई मत डालना आसान हो जाएगा। इन सब स्थितियों के साथ-साथ एक साथ चुनाव कराये जाने पर क्षेत्रीय पार्टियों को होने वाले नुकसान एवं अन्य स्थितियों पर भी ध्यान देना होगा। क्योंकि एक आदर्श एवं सशक्त लोकतंत्र में सभी राजनीतिक दलों के लिये समान अवसर उपलब्ध होना भी जरूरी है।

संपादकीय

युगांतकारी फैसला

सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक और विद्वतापूर्ण फैसले के बाद जम्मू-कश्मीर की भारतीय संविधान में खास हैसियत पर पूर्ण विराम लग गया है। न्यायालय ने विशिष्ट स्थिति बनाए रखने वाले अनुच्छेद 370 को केंद्र सरकार द्वारा संसद से रद्द कराने और इसे खत्म करने की अधिसूचना के राष्ट्रपति के अधिकार को अंतिम माना है। न्यायालय ने भारतीय संविधान के अनुच्छेदों एवं जम्मू-कश्मीर के संविधान के विभिन्न अनुच्छेदों से बिंदुवार मिलान कर निष्कर्ष निकाला कि भारत राष्ट्र में उसके विलय के बाद यह देश के अन्य राज्यों की तरह उसका अभिन्न अंग बन गया। वह आंतरिक रूप से संप्रभु नहीं रहा। स्पष्ट है कि यह निर्णय 'ऐसी तैसी डेमोक्रेसी' वाले देश की न्यायपालिका का नहीं है, जहां उसका धर्म संसद से पारित प्रस्ताव पर विचार किए बिना बस मुहर लगाने का है। इस मसले पर पूरे 16 दिन संविधान पीठ ने सुनवाई की। केंद्र से भी कुछ बिंदुओं पर स्पष्टीकरण मांगा गया। विधिवत प्रक्रिया का पालन करते हुए बाकायदा पक्ष-प्रतिपक्ष ने अपनी दलीलें रखीं। यह सब सीधी सुनवाई के तहत हुआ जिसका लाइव प्रसारण देश के नागरिकों से लेकर विदेश तक ने देखा। इन सबके के दौरान ही पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने सर्वसम्मति से माना कि अनुच्छेद 370 भारतीय संविधान में एक अस्थायी प्रावधान था। इसको रद्द करने का अधिकार संप्रभु भारत के पास था। अलबत्ता, उसने कहा कि जम्मू-कश्मीर को केंद्रशासित प्रदेश के तहत नहीं रखा जा सकता। इसलिए न्यायालय ने नौ महीने के भीतर उसे राज्य का दर्जा बहाल कर वहां चुनाव कराने का आदेश दिया। पूरी संभावना है कि यहां चुनाव लोक सभा के साथ कराए जाएं। इस निर्णय के बाद से जम्मू-कश्मीर में हालात को और बेहतर करने के मौके मिलेंगे। सत्ताधारी दलीलों से इतर सामान्य नागरिकों को भी जम्मू-कश्मीर की खास हैसियत समाप्त करने से कोई बड़ा फर्क नहीं पड़ा है। इसके विपरीत, रोजगार, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का उपभोग बढ़ा है। सबसे बड़ी बात, अलगाववादी व आतंकवादी गतिविधियों में उल्लेखनीय गिरावट आई है। इसे महसूस किया जाता रहा है। इनके बावजूद, यहां बलात यथास्थितिवादी बनाए रखने वाले राजनीतिकों को न्यायालय का निर्णय नागवार गुजरा है। पाकिस्तान की प्रतिक्रिया भी नैराश्यपूर्ण रही है, बल्कि एक तरह से भारत के आंतरिक मामलों में दखल है। इसके विपरीत, जम्मू-कश्मीर एक नये बदलाव के मुहाने पर है।

चिंतन-मनन

अनमोल हैं कड़वे बोले

किसी ने कहा है कि अंधेरे में माचिस तलाशता हुआ हाथ, अंधेरे में होते हुए भी अंधेरे में नहीं होता, इस तलाश को अपने भीतर निरंतर जीवित रखना कोई साधारण बात नहीं है, परंतु जो लोग सफर की हदों को पहचानते हैं, जिन्हें हर मंजिल के बाद किसी नए सफर पर चल पड़ने की लत है, उनके भीतर से यह खोज कभी खत्म नहीं होती। अचूक शैली में, अपने क्रांतिकारी विचारों से लोगों को अपनी ही खोज के तौर तरीके बताने वाले राष्ट्रसंत मुनि तरुणसागर जी महाराज की वाणी सहज आकर्षण का विषय बन गई है। ऐसे समय में जब अपने हक में हर खुशी बटोर लेने की अदम्य लालसा लोगों को दुनिया के दु?ख दर्द से कोसों दूर ले जा रही है। मुनि श्री दुनिया को खुशी और गम की सही परिभाषा बता रहे हैं। यह सिर्फ संयोग नहीं है कि वे जहां भी पहुंचते हैं, सबसे पहले वही कहते हैं कि मैं कथा सुनाने नहीं जीवन की व्यथा सुनाने आया हूं। यह व्यथा घर-घर की कहानी है, जिसे एक बड़े आईने की शक्ल में सामने रखकर मुनि तरूण सागर जी पुकार कर कह उठते हैं कि इसे न तो ठुकराओ, न ही झुठलाने की कोशिश करो, बेहतर यही है कि इस व्यथा के बीच से ही जीवन का रस हासिल कर लो। मुनि तरुण सागर जी के बोल, सुनने वाले को भावित-प्रभावित तो करते ही हैं, उसे झकझोर कर भी रख देते हैं। उन्हें सुनते समय या पढ़ते समय आप अनुभव करते हैं कि आपकी अपनी जिंदगी एक धारावाहिक के रूप में आपकी आंखों के सामने तैरने लगी है। उनकी वाणी अतीत की जड़ता से उबारने और वर्तमान की लापरवाही के प्रति सचेत करने का काम करती है। वह आपके जख्मों को सहलाने के बदले यदि अधिक कुरदने की मुद्रा में दिख भी रही हो तो भी यह नहीं भूलना चाहिए कि मुनि श्री आपको स्थाई रूप से तंदुरूस्त बनाने का उद्यम कर रहे हैं। सूत्र शैली में संदेश देने वाले मुनि तरूण सागर जी को अपनी वाणी को कड़वे प्रवचन कहने पर इत्मीनान यदि है तो सिर्फ इसलिए कि वे जानते हैं, इंसान की प्रवृत्ति और कभी न बदलने की उसकी जिद इतनी कठिन और जटिल है कि सीधी उंगली से घी निकालना मुमकिन नहीं है।

विचार मंथनः पेजर धमाके अर्थात इजराइल-हमास युद्ध का विस्तार

डॉ. हिदायत अहमद खान

रूस और यूक्रेन के बीच जारी जंग युद्धबंदियों की अदला-बदली से थमती नजर तो आई है, लेकिन इजरायल और हमास के बीच जारी जंग किसी सूरत खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। दरअसल 07 अक्टूबर 2023 को हमास के द्वारा किए गए इजराइल पर हमले के बाद से यह जंग बराबर जारी है। गाजा पट्टी और उसके आस-पास युद्ध का भयावह मंजर लगातार देखने को मिल रहा है। मानवता को मानों जमींदोज कर युद्ध के तमाम नियमों को ताक पर रख, एक-दूसरे पर हमले किए जा रहे हैं। इन हमलों में कौन मर रहा और कौन हताहत हो रहा, इससे भी किसी को मानों कोई सरोकार नहीं रह गया है। युद्ध की विभीषिका में शांति के कपोत भी मारे जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की अपील के बावजूद कहीं से कोई हमलों की कमी होती नजर नहीं आ रही है। हद तो यह है कि हमले ऐसी जगहों पर भी किए गए, जिन्हें बच्चे, बूढ़ों और महिलाओं के रहने और इलाज के लिए चिंहित किया गया था। इन हमलों में संयुक्त राष्ट्र की टीम के साथ काम करने वाले भी अपनी जान गंवाते नजर आए हैं। गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक इजराइली हमलों में अब तक करीब 42 हजार 957 लोगों की मौत हो चुकी है। मरने वालों में 80फीसदी फिलस्तीनी नागरिक बताए गए हैं। इस युद्ध में सबसे अधिक फिलस्तीन को नुक्सान उठाना पड़ रहा है। ऐसे अंधे युद्ध की चारों ओर निंदा तो हो रही है, लेकिन इस युद्ध को रोका कैसे जाए और किस तरह से न्याय करते हुए कानून का राज लाया जाए कहना मुश्किल हो रहा है। खासतौर पर तब जबकि इजराइल-हमास युद्ध को विस्तार देने वाली ताकतें लगातार सफल होती जा रही हैं। इस कारण गाजा पट्टी व अन्य आस-पास के इलाकों को भी निशाना बनाया जा रहा है। हमले का तरीका नया है, जिससे इस युद्ध में अन्य देशों के शामिल होने के पुख्ता सुबूत भी मिलने लगे हैं। यहां बताते चलें कि लेबनान और उसके हिजबुल्लाह लड़ाकों पर एक नए तरह से पेजर धमाकों से हमला किया गया है। इसके तहत लेबनान और सीरिया के अनेक शहरों में इस्तेमाल हो रहे हजारों पेजर अचानक धमाकों के साथ फट गए। इसमें एक दर्जन के करीब लोगों की मौत हो गई जबकि हजारों की तादाद में लोग जख्मी हुए हैं। इससे साफ हो गया है कि इजराइल और लेबनान सीमा पर अब हमले और तेज हो जाएंगे। यहां गौर करने वाली बात यह भी है कि बम की तरह इस्तेमाल किए जाने वाले पेजर बनाने वाली कंपनी को आखिर दुश्मन देश के रणनीतिकारों ने कैसे साध लिया, जो हिजबुल्लाह को धूल चटाने के लिए एक बड़ा हमला करने में कामयाब हो गए। कहा तो यही जा रहा है कि इस हमले के पीछे इजराइल की खुफिया एजेंसी मोसाद का हाथ हो सकता है। इसकी पुख्ता वजह भी है, क्योंकि मोसाद पर हमास के हमले के बाद लगातार फेल होने के दाग लगते रहे हैं। इलेक्ट्रॉनिक दुनिया के विशेषज्ञों की मानें तो पेजर एक साधारण रेडियो डिवाइसेस है, जिसे संक्षिप्त संदेश या सिग्नल हासिल करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। रेडियो फ्रिक्वेंसी के जरिए कार्य करने वाले इन पेजरों पर एक्सप्लोसिव का इस्तेमाल करते हुए रिमोट से उड़ाया जा सकता है। इसी आधार पर पेजर को एक हथियार की तरह इस्तेमाल किया गया है। सवाल यह है कि पेजर बनाने वाली कंपनी ने इसे हथियार का रुप दिया या किसी और ने ऐसा करके बड़े हमले को अंजाम दिया, यह देखने वाली बात है। वैसे तो शांतिप्रिय विश्व के लिए यह अपनी तरह की पहली विभत्स घटना मानी जा रही है, लेकिन दावा यह भी है कि इजराइल ने इससे पहले भी कंपनियों के प्रोडक्शन लाइन को प्रभावित करने का काम किया है।

दरअसल ईरान को मिसाइल देने वाली कंपनी के मिसाइलों में यूं ही स्टक्सनेट का इस्तेमाल सितंबर 2023 में किया गया था। यह भी सॉफ्टवेयर को प्रभावित करता है और एक बड़ा विस्फोट करने का कारण बनता है। मतलब साफ था कि ईरान मिसाइलें बनाता और जब वह सैन्य डिपो में रखता, तो ये वहीं फट जातीं। तब ईरान ऐसे हमले से खुद को बचाने में कामयाब रहा, लेकिन पेजर मामले में हिजबुल्लाह फंस गया। सेलफोन में आईईडी लगाकर विस्फोट करने के मामले पहले भी हुए हैं, लेकिन पेजर हमला पहली बार हुआ है। इसके दूरगामी परिणामों को देखते हुए ही सबसे पहले पेंटागन ने ऐसे किसी हमले में उसके हाथ होने से साफ इंकार कर दिया है। दरअसल अमेरिका यह बात बहुत अच्छी तरह समझ चुका है कि इस युद्ध की आग अब उसे भी किसी भी पल झुलसा सकती है। इससे पहले कि युद्ध का विस्तार अन्य देशों की शांति को भंग करे, इसे रोकने के पर्याप्त और ईमानदार प्रयास होने ही चाहिए। अंततः युद्ध किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता है।

यमुना नदीः नारों से नहीं इरादों से बचेगी

पंकज चतुर्वेदी

यमुना दिल्ली में अभी दो महीने बाढ़ के हालात से लबालब थी, सरकारी दस्तावेज के मुताबिक, अब उसमें प्राण वायु ही नहीं बची। इस बीच नया शिगूफा उछल गया कि नदी के किनारे करीब 20 बायोडायवर्सिटी पार्क विकसित कर दिए जाएं तो नदी साफ हो जाएगी। इस रिपोर्ट को नागरिक समाज के कुछ लोगों ने तैयार किया है।

यमुना के नाम पर यह कोई पहला शिगूफा नहीं है। इसी साल ऐसे ही नागरिक समाज ने विश्व पर्यावरण दिवस पर दिल्ली में यमुना के किनारे 22 किमी. लंबी मानव श्रृंखला बनाई थी जिसमें लगभग एक लाख लोग शामिल हुए। मार्च, 2016 में दिल्ली में यमुना तट पर आर्ट ऑफ लीविंग श्रीरविशंकर ने एक बड़ा आयोजन किया था और उसके बाद राष्ट्रीय हरित अभिकरण (एनजीटी) ने उस पर पांच करोड़ रुपये का जुमार्ना लगा कर बताया था कि यमुना के कछार, वह भूमि जो कम पानी के कारण गर्मी में रीती रह गई, पर लाखों लोगों की चहलकदमी से वहां के पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान हुआ। इस हानि को ठीक करने में दस साल का समय और 42 करोड़ रोपये का खर्च आएगा। एक बार फिर एक लाख से अधिक लोग, गाड़ियां, तमाशा जोड़ कर वही गलती दोहरा दी गई।

एक बात समझनी होगी कि यमुना सुधार को लेकर हमारा नजरिया ठीक उस तरह है जैसे ऊपर से नल खुला छोड़ दो और नीचे पोंछा मारो। जरूरी है कि नदी में दूषित जल-मल न जाए। विडम्बना है कि पिछले महीनों में नवरात्रि के बाद चाहे निगम बोध घाट का पुल हो या राजघाट के पीछे या फिर निजामुद्दीन या कालिंदी कुंज, आईटीओ-जहां भी यमुना पर ब्रिज हैं और एनजीटी के आदेश के बाद लोहे की ऊंची जालियां वहां लगाई गई थीं ताकि लोग पूजा सामग्री नदी में न फेंकें, पर सड़क तक पर इस्तेमाल की गई पूजा सामग्री पड़ी थी। इन्हें फेंकने वाले बड़ी-बड़ी कारों में आ रहे थे। कोई तीन दशक तक अदालती निगरानी के बावजूद दिल्ली में यमुना के हालात नहीं बदले। 2010 में राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी से पहले राजधानी में यमुना नदी को टेम्स की तरह चमका देने के वादे के बाद आम आदमी पार्टी के चुनावी घोषणा पत्र की बात हो या केंद्र सरकार के दावे की, महज 42 किमी. के दिल्ली प्रवास में यह पावनधारा हांफ जाती है, कई करोड़ रुपये इसकी बदतर हालत सुधार नहीं पाए क्योंकि नदी धन से नहीं मन और आस्था से पवित्र बनती है। दिल्ली प्रदूषण कंट्रोल कमिटी (डीपीसीसी) की नवम्बर की रिपोर्ट बताती है कि यमुना के पानी में अधिकांश स्थानों पर ऑक्सिजन है ही नहीं। रिपोर्ट के मुताबिक ओखला बैराज पर यमुना में कोई बहाव नहीं है। यमुना एक बार फिर पानी की कमी से इस स्थिति में पहुंच गई है, जबकि बरसात अभी कम से कम आठ महीने दूर है।

अब तक यमुना में 30 फीसद सीवेज का पानी बिना ट्रीट किए गिरता है। यमुना में गिरने वाले 100 फीसद सीवेज को ट्रीट करने के लिए ट्रीटमेंट प्लांट बन रहे हैं, लेकिन इनमें से अधिकतर का कार्य तय वक्त से पीछे चल रहा है। 1993 से अभी तक दिल्ली में यमुना के हालात सुधारने के नाम पर दिल्ली सरकार ने 5400 करोड़ रोपये खर्च किए। इसमें से 700 करोड़ की राशि 2015 के बाद खर्च की गई। विडंबना यह है कि संसदीय और अदालती चेतावनियां, रपटें न तो सरकार के और न ही समाज को जागरूक कर पा रही हैं। यमुना की पावनधारा दिल्ली में आकर नाला बन जाती है। आंकडों और कागजों पर तो इस नदी की हालत सुधारने को इतना पैसा खर्च हो चुका है कि यदि उसका ईमानदारी से इस्तेमाल किया जाता तो उससे एक समानांतर धारा की खुदाई हो सकती थी।

दिल्ली में यमुना को साफ-सुथरा बनाने की कागजी कवायद कोई 40 सालों से चल रही है। अस्सी के दशक में एक योजना नौ सौ करोड़ की बनाई गई थी। दिसम्बर, 1992 में भारत सरकार ने यमुना को बचाने के लिए जापानी संस्था ओवरसीज इकोनॉमिक कॉरपोरेशन फंड ऑफ जापान से 403 करोड़ की मदद ली और 1997 तक कार्य पूरा करने का लक्ष्य रखा था लेकिन कागजी लहरें ही उफनती रहीं। 14 साल पहले तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निर्देश पर यमुना नदी विकास प्राधिकरण (वाईआरडीए) का गठन किया गया था, जिसमें दिल्ली के उपराज्यपाल की अध्यक्षता में दिल्ली जल बोर्ड, प्रदूषण बोर्ड सहित कई सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों को साथ लेकर तकनीकी सलाहकार समूह का गठन हुआ था। उस समय सरकार की मंशा थी कि कानून बना कर यमुना में प्रदुषण को अपराध घोषित कर राज्यों और स्थानीय निकायों को इसका जिम्मेदार बना दिया जाए। लेकिन सब कुछ कागजों से आगे बढ़ा ही नहीं। हरियाणा सरकार इस्त्राइल के साथ मिल कर यमुना के कायाकल्प की योजना बना रही है, और इस दिशा में हरियाणा सिंचाई विभाग ने अपने सर्वे में पाया है कि यमुना में गंदगी के चलते दिल्ली में सात माह पानी की किल्लत रहती है। दिल्ली में यमुना, गंगा और भूजल से 1900 क्यूसेक पानी प्रति दिन प्रयोग में लाया जाता है। यमुना में इस इसके पानी का 60 फीसद यानी करीब 1100 क्यूसेक सीवरेज का पानी एकत्र होता है। यदि यह पानी शोधित कर यमुना में डाला जाए तो यमुना निर्मल रहेगी और दिल्ली में पेयजल की किल्लत भी दूर होगी।

एक नजर

प्लस टू दर्जा को लेकर छात्र-छात्राओं ने किया भूख हड़ताल

साहिबगंज: जिला अंतर्गत बरहेट प्रखंड मुख्यालय परिसर में उत्क्रमित उच्च विद्यालय फूलभंगा के स्कूली छात्रों ने बुधवार को भूख हड़ताल कर धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान स्कूली छात्रों ने हमारी मांगे पूरी करो, उत्क्रमित उच्च विद्यालय फूलभंगा को प्लस टू का दर्जा देना होगा, तख्तीया लेकर नारे लगे। विद्यालय के दर्जनों छात्र अनिश्चितकालीन हड़ताल पर ब्लॉक परिसर समीप धरना पर बैठ गए। विद्यालय के छात्र अंशु ठाकुर ने बताया कि उत्क्रमित उच्च विद्यालय फूलभंगा को प्लस टू दर्ज को लेकर 3 सालों से लगातार मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री, को पत्राचार करने के बाद भी प्लस टू का दर्जा नहीं मिला। तत्पश्चात जिले के वरीय अधिकारियों को भी इसकी सूचना पूर्व में दी गई है लेकिन कोई पहल नहीं किया गया। प्लस टू दर्जा को लेकर छात्रों में आक्रोश है। जब तक हमारी मांगे पूरी नहीं होती है हम विद्यालय के छात्र अनिश्चितकालीन हड़ताल पर बैठेंगे। इस संबंध में जिला शिक्षा पदाधिकारी शुभम प्रकाश ने बताया कि मामले की जानकारी मिली है। विद्यालय को प्लस टू का दर्जा को लेकर प्रखंड क्षेत्र शिक्षा प्रसार पदाधिकारी, प्रखंड शिक्षा अधिकारी, को जांच करने का आदेश दिया गया है। वही विद्यालय को प्लस टू दर्जा मापदंड नियमों पूरा हो जाने के बाद रिपोर्ट वरीय अधिकारी को भेज दिया जाएगा। वहीं छात्र बीडीओ अंशु कुमार पांडे के आश्वासन पर अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल समाप्त कर दिए।

कालाजार प्रभावित गांवों में कीटनाशक का हुआ छिड़काव

साहिबगंज: बुधवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बोरियों अंतर्गत कालाजार प्रभावित गाँव बोरियों संथाली में आईआरएस द्वितीय चक्र कीटनाशी छिड़काव का उद्घाटन डॉ प्रवीण कुमार संथालिया सिविल सर्जन साहिबगंज एवं डॉ सालखु चन्द्र हांसदा प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी बोरियों के द्वारा संयुक्त रूप से फीता काट कर एवं रैली निकाल कर किया गया। जहां पुरे गाँव मे ग्रामीणों को रैली के माध्यम से छिड़काव से सम्बंधित जागरूक करते हुए लोगों को घर के सभी कमरों, गौशाला, बरामदा आदि जगहों मे छिड़काव करवाने का संदेश दिए। साथ ही छिड़काव कार्य का निरक्षण किए एवं उपस्थित सभी एमपीडबल्यू एवं छिड़काव कर्मियों को आवश्यक दिशा- निर्देश देते हुए सभी घरों मे गुणवत्तापूर्ण छिड़काव कराने को कहा गया। मौके पर डॉ सती बाबू डाबडा जिला वीबीडी सलाहकार, सुमन कुमार डबल्यूएचओ मॉनिटर, सभी एमपीडबल्यू, सहिया साथी एवं सहिया आदि स्वास्थ्यकर्मी मौजूद थे।

आजसू नेता हरेलाल महतो ने चांडिल डैम के बाढ़ पीड़ित विस्थापितों में बांटी राशन सामग्री

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : एक सोची समझी साजिश के तहत विस्थापित गांवों में चांडिल डैम का पानी घुसाकर ग्रामीणों को बेघर किया गया है। मौसम विभाग के पहले ही अलर्ट जारी कर दिया था। जल संसाधन विभाग को अच्छी तरह से इस बात की जानकारी है कि डैम का जलस्तर बढ़ने से विस्थापित गांव जलमग्न हो जाते हैं। ऐसे में बारिश से पहले ही यदि डैम का जलस्तर कम कर दिया गया होता तो आज विस्थापितों के घर बाड़ी डूबने से बच जाते। उक्त बातें आजसू पार्टी के केंद्रीय महासचिव हरेलाल महतो ने कहा है। हरेलाल महतो ने कहा कि साजिश के तहत विस्थापितों को बेघर किया गया है, इस मामले की उच्चस्तरीय जांच होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आपदा प्रबंधन की बैठक में भी यह निर्णय लिया गया था कि चांडिल डैम का जलस्तर 179 मीटर से अधिक भंडारण नहीं किया जाएगा, फिर किन परिस्थितियों में 183.5 मीटर तक जल भंडारण किया गया। हरेलाल महतो ने कहा कि हेमंत सरकार और उसके विधायक विस्थापन आयोग गठन करने का झूठा वादा करके हमारे चांडिल डैम के विस्थापितों को छलने का काम किया है, इसका खामियाजा हेमंत सरकार को भुगतना पड़ेगा। बुधवार को आजसू महासचिव हरेलाल महतो ने बाढ़ प्रभावित विस्थापित ग्राम काली चामदा तथा मैसड़ा का दौरा किया तथा पीड़ित विस्थापितों की जानकारी ली। इस दौरान हरेलाल महतो ने निजी स्तर से काली चामदा में 44 परिवार तथा मैसड़ा के तीन परिवार को राशन सामग्री उपलब्ध कराया।

बिनोद राय ने जलमग्न क्षेत्रों का किया दौरा पीड़ितों को सहायता का दिया आश्वासन

ईचागढ़ : विधानसभा क्षेत्र में भारी बारिश के कारण दर्जनों गांव बाढ़ में डूब गई है। कई गांव विस्थापित हो चुके हैं, जबकि ऊदल, बाबू चंदा, कालीचंददा, उगडीह, कुडुख टोपा, लोपसोदिह, ईचागढ़, बतुहतु, कड़का, बाँधडीह जैसे दर्जनों गांव पूरी तरह से जलमग्न हो गए हैं। ऐसे कठिन समय में भाजपा नेता सह युवा मोर्चा के प्रदेश प्रवक्ता बिनोद राय स्थानीय लोगों की सहायता के लिए तत्पर नजर आ रहे हैं। सूचना मिलते ही बिनोद राय अपने सहयोगियों आकाश महतो और भाजपा कार्यकताओं के साथ प्रभावित गांवों का दौरा करने पहुंचे। उन्होंने स्थिति का जायजा लिया और स्थानीय लोगों को सूखा खाद्य सामग्री तथा त्रिपाल देने का आश्वासन दिया।

केशव महतो कमलेश के आगमन को लेकर पूर्व मंत्री के आवास में हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरहरवा : झारखंड प्रदेश महासचिव सह पाकुड़ जिला प्रभारी तनवीर आलम के उपस्थिति में पूर्व मंत्री आलमगीर आलम के इस्लामपुर स्थित आवास में झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश का पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र में आगमन को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक आहूत की गई। जिसका मुख्य उद्देश झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश का पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र में आगमन को कैसे यादगार बनाया जाए। इसी के लिए क्षेत्र से आए हुए पदाधिकारी एवं ग्रामीणों को टास्क दिया गया कि वह क्षेत्र में जाकर लोगों को जानकारी दें की हमारे प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश आ रहे हैं उनका स्वागत पूरी जोर शोर से किया जाए ताकी हमारे पूर्व मंत्री आलमगीर आलम की कमी महसूस ना हों। क्योंकि आलमगीर आलम ने कहा था कि हमारा हर एक कार्यकर्ता आलमगीर आलम है, तो हमें उनके अनुपस्थिति में उनके सारे प्रोग्राम को हमें ही सफल बनाकर हर एक कार्यकर्ता को आलमगीर आलम कार्य करना है। सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता ने जोरो शोर से हामी भरी की हम तैयार हैं हर एक लड़ाई के लिए हर एक कार्यक्रम के लिए और कांग्रेस के लिए एवं हमारे गार्जियन पूर्व मंत्री आलमगीर आलम के लिए। मौके पर जिला अध्यक्ष सह विधायक प्रतिनिधि बरकत खान, प्रखंड बीस सूत्री अध्यक्ष अशोक कुमार दास, प्रखंड अध्यक्ष रंजीत टुडू, वरिष्ठ कांग्रेसी गुलाब रब्बानी, पंचायत अध्यक्ष, सहित हजारों कार्यकर्ता मौजूद थे।

आरपीएफ ने किया ट्रेन से 130 पाउच अवैध शराब जब्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरहरवा : मालदह रेल डिविजनल अंतर्गत बरहरवा आरपीएफ को मंगलवार की सुबह गुप्त सूचना मिली की ट्रेन नंबर 15658 अप के जनरल कंपार्टमेंट में अवैध शराब तस्करी कर ले जा रहा है। सूचना के आधार पर त्वरित कार्यवाही करते हुए बरहरवा आरपीएफ इंस्पेक्टर संजीव कुमार के नेतृत्व में, सीपीडीएस टीम सहायक उपनिरीक्षक आर के तिवारी, हेड कंस्टेबल धर्मेंद्र कुमार, कांस्टेबल के प्रल्यांकर, कांस्टेबल सुमन कुमार और आरपीएफ टीम बरहरवा सहायक उपनिरीक्षक जे के दुबे के साथ मिलकर संयुक्त रूप से छापेमारी की। जब ट्रेन नंबर 15658 बरहरवा स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर झ01 पर आई तो बताए गए जनरल कंपार्टमेंटझएनएफआर/227554 को चेक किया गया तो देखा कि एक काले रंग का पिट्ठू बैग सीट के नीचे पड़ा था। ट्रेन में बैठे पैसेंजर से पूछ ताछ किया गया तो किसी ने भी अपना होना नही बताया और न ही कीसी ने उक्त बैग की जिम्मेवारी ली। तत्पश्चात बाद बैग को खोल कर चेक किया गया तो उसमे देखा की 180एमएल के 130 पीस ऑफिसर्स चॉइस का फॉरेन लिकर्स पाउच मिला। जिसकी प्रत्येक पाउच की कीमत 150/झ रुपए थी। उसके बाद इसे जब्त कर आरपीएफ ऑफिस बरहरवा लाया गया और एक्साइज डिपार्टमेंट साहिबगंज को अग्रिम कार्यवाही हेतु सुपुर्द कर दिया गया। कुल 130 पीस ऑफिसर्स चॉइस की कीमत 19,500/झ है। ज्ञात हो कि इन दिनों अवैध शराब की तस्करी बिहार के लिए ट्रेनों के माध्यम से चोरी छिपे की जा रही है,जिसपर रेलवे सुरक्षा बल द्वारा लगातार तस्करों के खिलाफ कार्यवाही तस्करों के मंसूबो पर पानी फेर रही है।बरहरवा आरपीएफ इंस्पेक्टर संजीव कुमार ने कहा कि रेलवे परिसर में किसी भी प्रकार की अवैध गतिविधियों को बर्दास्त नहीं किया जाएगा,पकड़े जाने पर दोषियों पर कड़ी कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

दंपती के साथ लूटपाट मामले में एक अभियुक्त को पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : साहिबगंज-राजमहल एनएच 80 पर बांसकोला के पास बीते कुछ दिन पहले ई-रिक्शा पर सवार होकर साहेबगंज से शादी समारोह से घर लौट रहे दंपति के साथ लूटपाट की घटना को लेकर पुलिस ने मामले का उद्भेदन कर एक अभियुक्त को किया गिरफ्तार जिसकी जानकारी राजमहल अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी विमलेश कुमार त्रिपाठी ने मंगलवार को अपने कार्यालय कक्ष में प्रेस वार्ता कर दी। उन्होंने कहा की विगत 7 सितंबर की रात्रि करीब 10:40 बजे बांसकोला गांव के पास एक ई रिक्शा में सवार दंपति से कुछ अज्ञात अपराधकर्मियों के द्वारा लूटपाट की घटना को अंजाम दिया गया था। इस मामले में तालझारी थाना कांड संख्या 59/24 के तहत धारा-309 (4) बी०एन०एस० के अन्तर्गत कांड दर्ज किया गया था। उन्होंने बताया कि पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह ने घटना के उद्भेदन व अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए राजमहल एसडीपीओ विमलेश कुमार त्रिपाठी के नेतृत्त्व में स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम का गठन किया गया था। गुप्त सूचना के आधार पर सोमवार को एसआईटी टीम ने महाराजपुर के डाकबंगला से सकरीगली के रामपुर दियारा के संजीव चौधरी उर्फ संदीप नामक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया। तलाशी के दौरान उनके पास से लूटा हुआ वीवो,रियलमी एवं वनप्लस इन तीन कंपनियों का तीन मोबाइल एवं एक होंडा शाइन मोटरसाइकिल को जब्त किया गया।

ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को खेल में मिले बेहतर प्लेटफार्म : सहिस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पटमदा : विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर बोड़ाम प्रखंड अंतर्गत बोंटा पंचायत के जीराडुंगरी टोला में मंगलवार को आयोजित एक दिवसीय फुटबॉल प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि आजसू पार्टी के प्रधान महासचिव सह पूर्व मंत्री रामचंद्र सहिस शामिल हुए। एमबीएमएमसी की ओर से आयोजित फुटबॉल टूर्नामेंट में कुल 16 टीमों ने हिस्सा लिया। खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने फुटबॉल में किक मारकर मैच का उद्घाटन किया।टूर्नामेंट में पुर्व मंत्री रामचंद्र सहिस ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं के लिए खेल के क्षेत्र में बेहतर प्लेटफार्म देने की जरूरत है।ग्रामीण युवाओं में फुटबॉल के प्रति रुचि अधिक है। उन्होंने खिलाड़ियों से कहा स्वास्थ्य तन में ही स्वास्थ्य मस्तिष्क का निवास है और बेहतर प्रदर्शन करने वाले इसे अपना करियर निर्माण भी कर सकते हैं। मौके पर मुख्य रूप से आजसू के केंद्रीय सचिव आदित्य महतो, बोड़ाम प्रखंड की पूर्व प्रमुख सह आजसू नेत्री मेनका किस्कू, सहदेव मंडल, दशरथ सिंह, रवि महतो, रवि किस्कू, कुसुम बास्के, चैतन मुर्मू, आंदोलनकारी लवकिशोर हांसदा आदि मौजूद थे।

ठेकेदार द्वारा आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण में घटिया किस्म की सामग्री लगाने का आरोप

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : तालझारी प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत बांस पहाड़ पहला टोला में आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण कार्य कराया जा रहा है जिसमें झारखंड सरकार मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन या जिले का प्रशासन धरातल पर सरकारी योजना पर भ्रष्टाचार मुक्त कराने का लाख कोशिश करले। वहीं ताजा मामला तालझारी प्रखंड के बांस पहाड़ में आंगनबाड़ी केंद्र का निर्माण ठेकेदार द्वारा मनमानी ढंग से काम को किया जा रहा है। जिसमें घटिया किस्म का मटेरियल में डस्ट, मिट्टी दार बालू, चार नम्बर ईंट का प्रयोग किया जा रहा है ईट इतना घटिया है कि पानी लगने से ईट को छूने के बाद टूटने लगता है। इससे यह सब पता चलता है कि बिल्डिंग बनने के बाद बहुत ज्यादा दिनों तक नहीं टिक पाएगा कारण बिल्डिंग में दरार एवं फटने लगेंगे जिससे पहाड़ के ग्रामीण के बच्चे पढ़ने जाएंगे जिससे बच्चों का खतरा बना रहेगा। इस तरह का घटिया मैटेरियल बिल्डिंग में प्रयोग हो रहा है तो सरकारी पदाधिकारी इसे संज्ञान में क्यों नहीं ले रहे हैं जबकि निर्माण कार्य शुरू होने से पहले कार्यस्थल में निर्माण किस योजना से हो रहा है और कितने राशि का है परंतु कार्यस्थल पर निर्माण कार्य का कोई बोर्ड नहीं लगाया गया है ठेकेदार से पूछे जाने पर इस बात का जिक्र करता है कि हमने इस कार्य को 24 परसेंट बिलों में लिए हैं तो कार्य किस तरह से कराएंगे।

दोषी थाना प्रभारी पर नहीं हुई कार्रवाई तो हाई कोर्ट में करेंगे केस : कमल भगत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरहरवा : साहिबगंज जिले के पतना स्थित प्रशिद्ध मां विंध्यवासिनी मंदिर में कथित आभूषण चोरी मामला अब तूल पकड़ता जा रहा है। पुलिस द्वारा बिना मामले की छानबीन और लिखित शिकायत के अनुराग आनंद की बेरहमी से पिटाई एवं मंदिर के सेवक गंगानंद गिरी को पूछताछ के नाम पर प्रताड़ित करने के विरोध में स्थानीय लोगों ने बुधवार को सड़क जाम कर बरहरवा बाजार पूरी तरह से बंद करवा दिया। बरहरवा बाजार की लगभग सभी दुकानें सुबह 8 से लेकर दोपहर 1 बजे तक बंद रहीं। वहीं शहर के रेलवे फाटक, स्टेशन चौक, मस्जिद चौक, लोहा पुल, रतनपुर, कुशवाहा टोला व पतना चौक में प्रदर्शनकारियों ने बांस बल्ला लगाकर सड़क मार्ग को अवरुद्ध किया। जिस कारण सुबह से ही आवागमन पूरी तरह बाधित रहा। बरहरवा बंद के समर्थन में सैकड़ों लोगों ने स्टेशन चौक व पतना चौक में इकठ्ठा होकर धरना प्रदर्शन किया और पुलिस प्रशासन के खिलाफ जमकर नारे बाजी की।

क्या है पुरा मामला

बिंदुधाम मंदिर के सेवक गंगानंद गिरी बाबा और बरहरवा आरएसएस के नगर कार्यवाहक अनुराग आनंद पर कथित आभूषण चोरी के लगे आरोप में बिना किसी लिखित शिकायत के रांगा थाना पुलिस ने अनुराग की बेरहमी से पिटाई कर दी थी। जिससे अनुराग की तबियत ज्यादा बिगड़ गयी और आनन-फानन में पुलिस रांगा अस्पताल लेकर गयी। जहां से उसे सदर अस्पताल साहिबगंज रेफर कर दिया गया। मरीज की गंभीर हालत को देख सदर अस्पताल ने भी उसे हायर सेंटर रेफर कर दिया। जिसके बाद से मालदा के एक निजी अस्पताल में अनुराग का इलाज चल रहा है।

लीपापोती करने के लिए मंदिर कमेटी 15 सितंबर को करती है आवेदन प्रेषित

स्थानीय लोगों की माने तो रांगा थाना पुलिस ने राजनीतिक दबाव के कारण ऐसा बर्बरता पुर्वक कार्य किया है। केवल दूरभाष में मिली सुचना के अधार पर पुलिस किसी को भी उठाकर ऐसे बेरहमी से कैसे पिटाई कर सकती है पुलिस मंदिर के मुख्य सेवक गंगानंद गिरी बाबा को जबरन मंदिर से उठाकर थाना ले जाती है और पूछताछ के नाम पर दिनभर बिठाकर फिर शाम को छोड़ देती है।

संक्षिप्त खबरें

पौधरोपण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

साहिबगंज: 17 सितंबर को भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद मोदी के 74 वां जन्मदिवस के शुभ अवसर पर पंचायती विभाग द्वारा जिला के सभी प्रखण्डों में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री के द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 17 सितंबर को एक पेड़ मां के नाम के तहत पंचायती राज विभाग को पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान देने का आग्रह किया गया था। इसी के तहत आज सभी प्रखण्डों में पंचायती राज विभाग द्वारा हर घर वृक्षारोपण किया जा रहा है। साथ ही वृक्षारोपण के लिए सभी लोगों को जागरूक भी किया गया ताकि हर घर वृक्षारोपण किया जा सके। इस कार्यक्रम में सभी प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, सभी अंचलाधिकारी, प्रखण्ड एवं अंचल के कर्मी उपस्थित थे।

स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत जिला स्तरीय स्वच्छता अभियान का हुआ शुभारंभ

साहिबगंज: पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल साहिबगंज, नगर परिषद साहिबगंज एवं नमामि गंगे के संयुक्त तत्वावधान में आज टाउन हॉल, पोखरिया में दिनांक 17 सितंबर, 2024 से 02 अक्टूबर, 2024 तक आयोजित स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत जिला स्तरीय स्वच्छता अभियान का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक, राजमहल विधानसभा क्षेत्र, अनंत कुमार ओझा उपस्थित थे। स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत श्रमदान, वृक्षारोपण एवं स्वच्छता शपथ कार्यक्रम एवं लोगों के बीच विभिन्न प्रकार के पौधों का वितरण किया गया। मुख्य अतिथि विधायक ने अपने संबोधन में नगर वासियों एवं जिले वासियों से अपील किया की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्म दिवस से लेकर महात्मा गांधी के जन्म दिवस तक सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस अवसर पर आयोजित होने वाले स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत जन भागीदारी, श्रमदान से सम्पूर्ण स्वच्छता की ओर और एक पेड़ मां के नाम इस कार्यक्रम का सभी लोग हिस्सा बने ताकि एक प्रकार के जन आंदोलन का स्वरूप बने। इस कार्यक्रम में वन प्रमंडल पदाधिकारी प्रबल गर्ग, नगर परिषद प्रशासक अभिषेक कुमार सिंह, सिटी मैनेजर बृजेश कुमार, मॉडल कॉलेज राजमहल के प्राचार्य डॉ रंजीत कुमार सिंह, परियोजना पदाधिकारी यूआईडी संदीप कुमार, सभी कनीय अभियंता, सभी जिला समन्वयक एवं सभी ब्लॉक वाश कोर्डिनेटर, पतंजलि गंगा विचार मंच के सदस्य एवं अन्य सभी कर्मियों ने भाग लिया।

पीड़ित पति ने मंत्री दीपिका से मिलकर न्याय की लगाई गुहार

मंडरो: मिजाचौकी थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम-पंचायत कौड़ी खुटाना गांव निवासी जाहिद नामक युवक ने अपनी न्याय की मांग को लेकर मंगलवार को प्रदेश की कृषि मंत्री सह महागामा विधायक दीपिका पांडेय सिंह से मिलकर घटना से अवगत कराया। पीड़ित पति ने मंत्री को बताया कि पड़ोस के तीन व्यक्ति और बिहार छोटी मेहदी पोखर का एक व्यक्ति ने मिलकर उनकी चार बच्चे की पत्नी को बहला-फुसला कर लेकर भाग गया है। वही पुलिस ने आरोपी एक युवक और उसकी पत्नी को पुलिस हिरासत में ले ली है। इसके बावजूद समझौता के लिए दबाव बनाया जा रहा है। इधर पीड़ित पति को मंत्री ने आश्वासन देते हुए बताया कि मिजाचौकी थाना प्रभारी से मोबाइल फोन पर बात हुई है उन्हें आवश्यक निर्देश दिया गया है। मामले में उचित न्याय मिलेगा दोषियों के विरुद्ध आवश्यक कार्रवाई होगी।

गृह मंत्री के प्रस्तावित दौरे को लेकर डीसी-एसपी ने कार्यक्रम स्थल का किया निरीक्षण

साहिबगंज: जिला दंडाधिकारी- सह-उपायुक्त हेमंत सती एवं पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से आज केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री का जिला साहेबगंज में प्रस्तावित कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया गया। दिनांक 20 सितंबर 2024 को केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली का साहेबगंज में कार्यक्रम प्रस्तावित हैं। इसी संदर्भ में उपायुक्त ने कार्यक्रम स्थल, पुलिस लाईन स्थित मोदी मैदान का निरीक्षण किया एवं संबंधित कार्यरत पदाधिकारी व कर्मियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण स्थल पर उपस्थित, उप विकास आयुक्त सतीश चंद्रा, मुख्यालय डीएसपी विजय कुशवाहा, सदर एसडीपीओ, थाना प्रभारी, राजनीतिक पार्टी में प्रतिनिधि गण उपस्थित थे।

विधायक ने षाड़ंगीडीह में किया उप स्वास्थ्य केंद्र के निर्माण कार्य का शिलान्यास

पटमदा : पटमदा प्रखंड के षाड़ंगीडीह गांव में बुधवार को एनएचएम (स्वास्थ्य विभाग) से स्वीकृत उप स्वास्थ्य केंद्र निर्माण कार्य का शिलान्यास विधायक मंगल कालिंदी ने नारियल फोड़कर किया। 46 लाख 58 हजार रुपये से बनने वाली निर्माण कार्य का ठेका मां बिंदु बासिनी एंटरप्राइजेज जमशेदपुर को मिला है। विधायक ने संवेदक को गुणवत्तापूर्ण निर्माण कार्य पूरा करने का निर्देश दिया है। इस दौरान ग्रामीणों ने विधायक के समक्ष स्कूल में शिक्षकों की संख्या कम होने की जानकारी देते हुए जल्द से जल्द शिक्षकों की पदस्थापना करवाने की मांग की है। विधायक ने एक सप्ताह के अंदर मांग को पूरा करने का आश्वासन दिया है। मौके पर पटमदा सीओ बिजय कुमार महतो, विधायक प्रतिनिधि चंद्रशेखर टुडू, झामुमो नेता सुभाष कर्मकार, अश्विनी महतो, तपन बोस समेत अन्य कई ग्रामीण मौजूद थे।

रिलायंस पावर ने वीआईपीएल को लेकर किया ऐलान....शेयर बने रॉकेट

मुंबई ।

रिलायंस पावर ने 17 सितंबर को अपनी पूर्व सहायक कंपनी विदर्भ इंडस्ट्रीज पावर लिमिटेड (वीआईपीएल) से जुड़े 3,872.04 करोड़ के बड़े कर्ज के निपटान की घोषणा की है। इस घोषणा के बाद कंपनी के शेयरों में बड़ा उछाल दिखाई दिया है। रिलायंस पावर का शेयर 18 सितंबर को सुबह 9:30 बजे एनएसई (एनएसई) पर 5 प्रतिशत बढ़कर 32.97 पर कारोबार कर रहा था। एनएसई के अनुसार, रिलायंस पावर के शेयर की कीमत 28 अगस्त, 2024 को 38.11 पर 52-सप्ताह के हाई लेवल पर पहुंच गई। वहीं, रिलायंस पावर का शेयर 17 सितंबर को बीएसई (बीएसई) पर हरे निशान में 1 प्रतिशत बढ़कर 31.41 पर बंद हुआ था। एक्सचेंज फाईलिंग के अनुसार, वीआईपीएल, जिसने आरपावर के समेकित राजस्व में मात्र 0.11 प्रतिशत (8.73 करोड़) का योगदान दिया और पिछले वित्त वर्ष में 3,086.29 करोड़ की नकारात्मक शुद्ध संपत्ति रखी, 19 सितंबर, 2024 से आर पावर की सहायक कंपनी नहीं रहेगी।

बता दें कि रिलायंस पावर लिमिटेड ने देश के अक्षय ऊर्जा और भंडारण क्षेत्र में बड़ा कदम उठाया है और 500 मेगावॉट/1,000 मेगावॉट प्रति घंटा बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली के लिए कांट्रैक्ट हासिल किया है। बिजली उत्पादन कंपनी ने कहा कि उसने सोलर एनर्जी कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एसईसीआई) से ऑर्डर हासिल किया है, जिसने देश की ऊर्जा भंडारण क्षमताओं को बढ़ाने के लिए किए जा रहे अपने प्रयासों के तहत ई-रिवर्स नीलामी (ईआरए) आयोजित की थी। यह देश में इस तरह के सबसे बड़े कांट्रैक्ट में से एक है जो 1,000 मेगावॉट/2,000 मेगावॉट प्रति घंटे के लिए बीईएसएस की एकल इकाइयों की व्यापक निविदा का हिस्सा है। विज्ञप्ति में कहा गया है कि ये इकाइयां बिल्ड, ऑन और ऑपरेट (बीओओ) मॉडल के तहत परिचालित होंगी और इन्हें मांग के आधार पर इस्तेमाल के लिए तैयार किया गया है।

कीट और रोगों के प्रकोप से फसल खराब, अभी और बढ़ेंगे टमाटर के दाम

नई दिल्ली।

प्याज और खाद्य तेल के बाद अब टमाटर की कीमतें घर का बजट बिगाड़ रही हैं। टमाटर के भाव और बढ़ सकते हैं वजह है नासिक में टमाटर की फसल कीटों और रोगों के प्रकोप से खराब हो रही है। निफाड क्षेत्र के किसान सरपेन्टाइन लीफ माइनर नामक कीट से परेशान हैं, जो टमाटर के साथ अन्य सब्जियों को भी नुकसान पहुंचा रहा है। यह कीट लिरियोमाइजा ब्रासिका मक्खी का लार्वा है, जो पत्तियों को खाकर पौधों को कमजोर कर देता है।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की ओर से जारी रिपोर्ट के मुताबिक नासिक जिले के टमाटर के खेतों में कीटों और रोगों का प्रकोप बढ़ गया है। यह आर्थिक नुकसान की स्थिति तक पहुंच गया है। इस स्थिति को इकनॉमिक थ्रेशहोल्ड लेवल कहा जाता है, जहां फसलों को बचाने के लिए तुरंत कदम उठाने की जरुरत होती है लेकिन पर्याप्त प्रयास नहीं किए जा रहे हैं। महाराष्ट्र अब टमाटर की बुवाई में भी पिछड़ गया है। नासिक में टमाटर की औसत खेती करीब 21 हजार हेक्टेयर में होती है, जिसमें प्रति हेक्टेयर 30 टन का उत्पादन होता है। पिंपलगांव से दिल्ली, मध्य प्रदेश, असम और हरियाणा समेत कई बाजारों में टमाटर की सप्लाई की जाती है, जबकि कुछ मात्रा बांग्लादेश और पाकिस्तान को निर्यात किया जाता है।

मध्य प्रदेश के भिंड जिले में धान की फसल लीफ फोल्डर कीट से प्रभावित है। वहीं यूपी के सीतापुर जिले में गन्ने में लाल सड़न यानी गन्ने का कैंसर की समस्या देखी गई है। रिपोर्ट में बताया गया है कि इस साल आलू और प्याज की बुवाई कम हो रही है। 2.89 लाख हेक्टेयर के लक्षित क्षेत्र में से केवल 1.55 लाख हेक्टेयर में टमाटर बोया गया है, जबकि आलू की बुवाई 0.41 लाख हेक्टेयर के लक्षित क्षेत्र में से सिर्फ 0.30 लाख हेक्टेयर में हुई है। वहीं, प्याज की बुवाई भी अपेक्षाकृत कम है।

शेयर बाजार में तेजी से आईपीओ लिस्टिंग में भारत की कंपनियों की हिस्सेदारी बढ़ी

नई दिल्ली।

दुनिया में आरंभिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ) लाने में भारतीय कंपनियां सबसे आगे हैं। 2024 की पहली छमाही में वैश्विक स्तर पर हुई कुल आईपीओ लिस्टिंग में भारतीय कंपनियों की हिस्सेदारी 25 फीसदी के करीब थी। वेल्थ मैनेजमेंट फर्म एंजेल वन वेल्थ की ओर से जारी की गई रिपोर्ट में कहा गया है कि साल 2024 की पहली छमाही में पूरी दुनिया में 5,450 से ज्यादा कंपनियां लिस्ट हुई हैं, इसमें भारत की हिस्सेदारी करीब 25 फीसदी थी।

रिपोर्ट के मुताबिक पिछले साल भी भारत में आईपीओ की लिस्टिंग देखने को मिली थी। इसकी वजह उभरती हुई कंपनियों और सेक्टरों में घरेलू निवेशकों द्वारा बड़ी संख्या में निवेश करना था। वैश्विक स्तर पर 2021 में आईपीओ मार्केट उच्चतम स्तर पर था। इस दौरान पूरी दुनिया में 2,388 कंपनियों की लिस्टिंग हुई और इन सभी ने मिलकर 453.3 अरब डॉलर की राशि जुटाई।

यह पिछले 20 सालों में आईपीओ के जरिए जुटाई गई सबसे बड़ी राशि थी। रिपोर्ट में आगे कहा गया है लिस्टिंग गेन के कारण बीएसई आईपीओ इंडेक्स ने बीएसई 500 इंडेक्स को 165 फीसदी के बड़े मार्जिन पछाड़ते हुए 348 फीसदी का कुल रिटर्न दिया है। स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइजेज आईपीओ का प्रदर्शन भी बीते कुछ सालों में अच्छा रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक 2019 में एसएमई आईपीओ की लिस्टिंग पर औसत लिस्टिंग गेन करीब दो फीसदी था, जोकि 2024 में बढ़कर 74 फीसदी हो गया है। 2020 में मेनबोर्ड आईपीओ के लिस्टिंग गेन अपने सबसे उच्च स्तर पर पहुंच गए। इसके बाद से औसतन करीब 30 फीसदी के लिस्टिंग गेन देखने को मिल रहे हैं। आईपीओ मार्केट में तेजी की वजह भारतीय शेयर बाजार का सकारात्मक रिटर्न है। इस साल की शुरुआत से अब तक निफ्टी करीब 17 फीसदी और सेंसेक्स करीब 16 फीसदी का रिटर्न दे चुका है।

विंडफॉल टैक्स जीरो....तेल उत्खनन कंपनियों के शेयरों में उछाल

मुंबई ।

तेल उत्खनन कंपनियों के शेयरों में बुधवार को शुरूआती कारोबार में जोरदार तेजी दिखी। दरअसल मोदी सरकार ने 18 सितंबर से घरेलू स्तर पर उत्पादित कच्चे तेल पर विंडफॉल टैक्स जीरो किया है। इसकारण तेल कंपनियों के शेयरों में उछाल देखने को मिल रहा है। व्यक्तिगत रूप से अबंस ऑफशोर के शेयर की कीमत में 2.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी दिखी गई। साथ ही हिंदुस्तान ऑयल एक्सप्लोरेशन और ऑयल इंडिया के शेयर की कीमत में 1.9 प्रतिशत तक की तेजी आई। ओएनजीसी के शेयर की कीमत में 1.2 प्रतिशत और सेलन एक्सप्लोरेशन के शेयर की कीमत में 1.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। तुलनात्मक रूप से बीएसई सेंसेक्स सुबह 9:55 बजे 26 अंक चढ़कर 83,100 के स्तर पर कारोबार कर रहा था। मोदी सरकार ने घरेलू स्तर पर उत्पादित क्रूड ऑइल के लिए अप्रत्याशित लाभ कर यानी विंडफॉल टैक्स को घटाकर शून्य प्रति टन कर दिया है। टैक्स की नई दर 18 सितंबर यानी बुधवार से प्रभावी होगी।

बता दें कि यह टैक्स विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क (एसएईडी) के रूप में लगाता है। दो सप्ताह में औसत तेल की कीमतों के आधार पर हर पखवाड़े इस अधिसूचित किया जाता है। इससे पहले, संशोधन 31 अगस्त से प्रभावी हुआ था। उस समय कच्चे पेट्रोलियम पर अप्रत्याशित लाभ कर 1,850 रुपये प्रति टन निर्धारित किया गया था। मंगलवार रात जारी आधिकारिक अधिसूचना में कहा गया है कि डीजल, पेट्रोल और विमान ईंधन (एटीएफ) के निर्यात पर विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क को शून्य कर दिया गया है। नई दरें 18 सितंबर से प्रभावी होंगी। इसके अलावा ब्रेंट क्रूड

ऑइल अपने हालिया शिखर 91 डॉलर प्रति बैरल से 20 प्रतिशत से अधिक गिरकर अब 73 डॉलर प्रति बैरल के आसपास कारोबार कर रहा है। सालाना आधार पर, ब्रेंट क्रूड ऑयल लगभग 5 प्रतिशत फिसल गया है। कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट हाल ही में और गहरी हो गई क्योंकि चीन में लगातार सुस्त मांग के साथ-साथ अमेरिकी अर्थव्यवस्था में मंदी की आशंकाएं सामने आई है।

मोदी 3.0 में सरपट दौड़ रहा सेंसेक्स, निवेशकों को कर दिया मालामाल

मुंबई ।

मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल में शेयर बाजार में जबरदस्त तेजी देखने को मिल रही है। मोदी सरकार 3.0 के पहले 100 दिन में सेंसेक्स 6,300 अंक या 8.2 प्रतिशत का रिटर्न दे चुका है। मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल के पहले 100 दिनों में लार्जकैप के साथ स्मॉलकैप में भी बंपर तेजी है। इस दौरान बीएसई स्मॉलकैप इंडेक्स में 18 प्रतिशत का रिटर्न दिया है। समीक्षा अवधि में बीएसई आईटी और बीएसई हेल्थकेयर इंडेक्स ने 22-22 प्रतिशत का रिटर्न दिया है। बीएसई कंज्यूमर ड्यूरेबल्स ने 17 प्रतिशत का रिटर्न दिया है। हालांकि, बीएसई मेटल इंडेक्स और बीएसई रियल्टी इंडेक्स में क्रमशः तीन और एक प्रतिशत की गिरावट हुई है। समीक्षा अवधि में रेफेक्स इंडस्ट्रीज, पीसी ज्वेलर्स, बालू फोर्ज इंडस्ट्रीज, ग्राविटा इंडिया, पीजी इलेक्ट्रोप्लास्ट, गॉडफे फिलिप्स इंडिया और न्यूलैंड लेबोरेटरीज ने 100 प्रतिशत से ज्यादा का रिटर्न दिया है। कुछ दिनों पहले वैश्विक ब्रोकरेज फर्म की ओर से जारी एक रिपोर्ट में कहा गया था कि वे लंबी अवधि के लिए भारतीय शेयर बाजार पर बुलिश हैं। इसकी वजह जीडीपी में तेज वृद्धि दर का होना है, जिसके कारण कॉरपोरेट आय में भी इजाफा हो रहा है। छोटी अवधि में घरेलू निवेशकों की ओर से किया जाने वाला निवेश भी जारी रहने की उम्मीद है। वहीं, विदेशी निवेशकों की भी वापसी हो सकती है। भारतीय शेयर बाजार में तेजी की वजह अर्थव्यवस्था का मजबूत होना है। भारत की जीडीपी वित्त वर्ष 2023-24 में 8.2 प्रतिशत की दर से बढ़ी थी। इसके वित्त वर्ष 2024-25 में 7.2 प्रतिशत की दर से बढ़ने की उम्मीद है। इस साल की शुरुआत से अब तक निफ्टी करीब 17 प्रतिशत और सेंसेक्स करीब 16 प्रतिशत का रिटर्न दे चुका है।

रुपया बढ़त के साथ बंद

मुंबई । अमेरिकी डॉलर के मुकाबले बाजार में भारतीय रुपया छह पैसे की बढ़त के साथ ही 83.70 पर बंद हुआ। इससे पहले आज सुबह रुपया 83.89 पर खुला। वहीं अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपया मंगलवार को 83.76 पर बंद हुआ था। गत दिवस प्रमुख विदेशी मुद्राओं के मुकाबले डॉलर के कमजोर रुख और वैश्विक बाजारों में कच्चे तेल की कीमतों में नरमी के बीच रुपया शुरुआती कारोबार में रुपया दो पैसे मजबूत होकर 83.84 प्रति डॉलर पर पहुंच गया था। विदेशी पूंजी की निकासी ने स्थानीय मुद्रा की तेजी को सीमित किया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया मामूली गिरावट के साथ 83.87 प्रति डॉलर पर खुला, हालांकि शुरुआती सौदों के बाद वापसी करते हुए 83.84 प्रति डॉलर पर पहुंच गया जो पिछले बंद भाव से दो पैसे की बढ़त दिखाता है।

स्पाइसजेट..... खा गई अपने कर्मचारियों का पैसा

नई दिल्ली । कभी भारतीय आसमान की क्लीन माने जाने वाली विमानन कंपनी स्पाइसजेट ने ऐसा काम किया है, जो कॉरपोरेट जगत में शर्मनाक है। पहले कंपनी ने अपनी गलतियों से कारोबार डुबाया और उसके विमान जमीन पर आ गए। कंपनी के पास पैसा नहीं बचा, तब कर्मचारियों का पैसा काटकर अपना खर्च चलाने लगी। खुलासा होने पर बेशर्मी से स्वीकार भी किया कि हां, हमने डिफॉल्ट किया है। इतना ही नहीं इस राशि को लौटाने के लिए लंबा वक्त चाहिए, क्योंकि कंपनी के पास फिलहाल इस संकट से जल्दी निकलने का कोई तय फॉर्मूला नहीं दिख रहा है। स्पाइसजेट ने बाजार नियामक सेबी को पेश किए प्रीलिमिनरी प्लेसमेंट डॉक्यूमेंट (पीपीडी) में इसका खुलासा किया है। कंपनी ने स्वीकार किया है कि उसने अप्रैल 2020 से अगस्त 2023 के बीच कर्मचारियों की सैलरी से काटे गए 220 करोड़ रुपये के टीडीएस यानी टैक्स को अथॉरिटी के पास जमा नहीं कराया। इस दौरान 135.3 करोड़ रुपये का पीएफ यानी भविष्य निधि का पैसा भी कर्मचारियों की सैलरी से काटा, लेकिन इस पैसे को भी भविष्य निधि संगठन यानी ईपीएफओ के पास जमा नहीं कराया। कंपनी की इस हरकत को कर्मचारियों के भविष्य के साथ बड़ा खिलवाड़ माना जा रहा है। कंपनी ने बताया है कि आकलन वर्ष 2009-10 से 2013-14 के बीच भी 72 करोड़ रुपये के टीडीएस को लेकर विवाद चल रहा है। इसका मतलब है कि कंपनी ने पहले भी अपने कर्मचारियों की सैलरी से टीडीएस काटा पर आयकर विभाग तक नहीं पहुंचाया। कंपनी ने सेबी को बताया है कि उसके ज्यादातर विमान जमीन पर खड़े हैं और कारोबार ठप हो गया है। एयरक्राफ्ट लीज पर देने वाली कंपनियों का भी बकाया है, जबकि मेंटेनेंस के पैसे नहीं होने से विमानों का संचालन भी नहीं हो पा रहा। लीज देने वाले और वेंडर्स के खिलाफ डिफॉल्ट होने से कानूनी प्रक्रिया का सामना करना पड़ रहा, जिसमें आईबीसी कानून के तहत दिवालिया कार्यवाही भी शामिल है। 30 जून, 2024 तक स्पाइसजेट के आधे से ज यादा विमान जमीन पर आ चुके हैं। कंपनी के पास 64 विमान हैं, जिसमें से 36 का परिचालन ठप है। कंपनी का घाटा भी 7,728 करोड़ रुपये पहुंच गया है, जबकि नेट वर्थ भी 5,022 करोड़ रुपये निगेटिव में पहुंच गई है।

बेहतर मानसून के कारण देश में बढ़ा दालों की बुआई का रकबा

धान की बुआई ने बीते पांच साल का रिकॉर्ड तोड़ा

नई दिल्ली । पूरे देश में सामान्य से अधिक मानसूनी बारिश के कारण दालों की बुआई का रकबा करीब 8 प्रतिशत बढ़कर 127.77 लाख हेक्टेयर (17 सितंबर तक) हो गया है, जो कि पिछले साल समान अवधि में 118.43 लाख हेक्टेयर था। केंद्र सरकार की ओर से इसकी जानकारी दी गई। जानकारी के मुताबिक, इस साल 2 सितंबर तक खरीफ की फसलों की बुआई 1,096 लाख हेक्टेयर में हुई है। पिछले साल समान अवधि में आंकड़ा 1,087.33 लाख हेक्टेयर था। इस साल धान की बुआई 410 लाख हेक्टेयर में हुई है, यह आंकड़ा पिछले साल समान अवधि में 393.57 लाख हेक्टेयर था। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी डेटा के मुताबिक, मोटे अनाज की बुआई 189.67 लाख हेक्टेयर में हुई है। पिछले साल समान अवधि में यह आंकड़ा 183.11 लाख हेक्टेयर था। इस साल तिलहन की बुआई का क्षेत्रफल 190.37 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 193.32 लाख हेक्टेयर हुआ है। वहीं, गन्ने की बुआई 57.68 लाख हेक्टेयर में हुई है, पिछले साल समान अवधि में गन्ने की बुआई 57.11 लाख हेक्टेयर में हुई थी। 2024 में अब तक अच्छे मानसून के कारण धान की बुआई पिछले पांच वर्ष के औसत को पार कर चुकी है। बुआई का क्षेत्रफल बढ़ने की मुख्य वजह देश में अच्छे मानसून का होना है, जिसके कारण देश के असिंचित इलाकों में बुआई क्षेत्रफल बढ़ा है। यह देश के कुल कृषि भूमि का 50 प्रतिशत है। कृषि और उससे जुड़े हुए सेक्टर पर केंद्र सरकार की ओर से लगातार ध्यान दिया जा रहा है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की ओर से वित्त वर्ष 2024-25 के बजट में 1.52 लाख करोड़ रुपये कृषि और उससे जुड़े सेक्टर में उत्पादन बढ़ाने के लिए आवंटित किए गए थे।

शेयर बाजार गिरावट पर बंद

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार बुधवार को गिरावट पर बंद हुआ। बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही मुनाफावसूली हावी रहने से आई है। अमेरिकी फेडरल रिजर्व के ब्याज दरों पर फैसले से पहले ही निवेशकों ने मुनाफावसूली शुरु कर दी और जिससे आईटी कंपनियों के शेयर टूट गये। दिन भर के करोबार के बाद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 131.43 अंक करीब 0.16 फीसदी नीचे आकर 82,948.23 पर बंद हुआ। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 41 अंक तकरीबन 0.16 फीसदी नीचे आकर 25,377.55 पर बंद हुआ। इंट्रा डे कारोबार में सेंसेक्स और निफ्टी दोनो ही ऊपर आये थे।

आज कारोबार के दौरान निफ्टी पर टीसीएस, इंफोसिस, एचसीएल टेक, टेक महिंद्रा और विप्रो सहित 33 शेयर गिरावट पर बंद हुए, वहीं श्रीराम फाइनेंस, बजाज फाइनेंस, बजाज फिनसर्व, नेस्ले इंडिया और एचडीएफसी बैंक के 19 शेयर बढ़त पर बंद हुए।

टीसीएस, इंफोसिस, टेक महिंद्रा, एचसीएल टेक और सन फार्मा के शेयरों में 3.46 फीसदी तक की गिरावट रही। इस बीच, बजाज फाइनेंस, बजाज फिनसर्व, नेस्ले इंडिया और एचडीएफसी बैंक के शेयर 3.36 फीसदी तक की बढ़त के साथबंद हुए। दुनिया भर के बाजारों की बात करें एशियाई बाजारों में टोक्यो और शंघाई के बाजार ऊपर आये हैं जबकि हांगकांग में अवकाश के कारण कारोबार बंद रहा। वहीं यूरोपीय बाजारों में गिरावट दर्ज की गई जबकि गत दिवस अमेरिकी बाजारों में मिश्रित कारोबार हुआ।

वहीं गत दिवस बाजार हल्की बढ़त पर बंद हुआ था। बाजार आज सुबह गिरावट पर खुले।बाजार में इस गिरावट का कारण दुनिया भर के बाजारों से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही

नीतिगत ब्याज दरों को लेकर अमेरिकी फेडरल रिजर्व के बयान के कारण निवेशकों का सतर्क रुख भी रहा है। आज सुबह सभी मुख्य सूचकांकों में एक सीमित दायरे में कारोबार होता दिखा। सुबह सेंसेक्स 85 अंक करीब 0.10 फीसदी नीचे आकर 82,990 और निफ्टी 21 अंक तकरीबन 0.09 फीसदी फिसलकर 25,393 पर था। शुरुआती कारोबार में बाजार में वित्तीय शेयरों में गिरावट रही। निफ्टी बैंक 55 अंक करी 0.11 फीसदी बढ़कर 52,224 पर था। वहीं ऑटो, पीएसयू बैंक, फिन सर्विस, एफएमसीजी, रियल्टी और मीडिया के शेयरों में तेजी रही जबकि आईटी, फार्मा और मेटल के शेयरों पर दबावा रहा। इसके अलावा मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में भी सपाट कारोबार हुआ।

निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 23 अंक करीब 0.04 फीसदी नीचे आकर 60,157 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 10 अंक तकरीबन 0.05 फीसदी बढ़कर 19,476 पर रहा है।

दिवालिया होने की कगार पर किचनवेयर कंपनी टप्परवेयर

मुंबई । अमेरिकी किचनवेयर कंपनी टप्परवेयर ब्रांड्स कॉर्प दिवालिया होने वाली है। वर्षों से घटती बिक्री और बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण कंपनी ने दिवालियापन संरक्षण के लिए चैप्टर 11 दायर किया है। रिपोर्ट के अनुसार, टप्परवेयर की संपत्तियां 500 मिलियन और 1 बिलियन के बीच है, जबकि देनदारियां 1 बिलियन और 10 बिलियन के बीच आंकी गई है। जून 2024 में टप्परवेयर ने अपना अंतिम अमेरिकी कारखाना बंद कर दिया। किचन और घर में इस्तेमाल के लिए कंटेनर बनाने वाली कंपनी ने लंबे समय तक बाजार पर राज किया है। इसके टिफिन ऑफिस जाने वाले लोगों के बीच बहुत मशहूर हैं। टप्परवेयर ब्रांड्स कॉर्प की स्थापना 1946 में अर्ल टुप्पर ने की थी। टुप्परवेयर अपने अभिनव प्लास्टिक उत्पादों, विशेषकर इसके पेटेंटेड एयरटाइट सील के कारण जल्द ही बहुत लोकप्रिय ब्रांड बन गया था। ब्रांड ने इन-होम बिक्री पार्टियों के माध्यम से लोकप्रियता हासिल। ये पार्टियां उपनगरीय अमेरिका में एक सांस्कृतिक घटना बन गई थीं। कोरोना महामारी के दौरान इसकी सेल्स में तेज इजाफा हुआ, जब लोग अपने घरों से बाहर नहीं निकल रहे थे और अधिक से अधिक कुकिंग हो रही थी और खाना बच भी रहा था। हालांकि जब स्थिति सामान्य हुई तब इसकी सेल्स में भरी गिरावट आई। रिपोर्ट के मुताबिक टप्परवेयर ने कर्ज की शर्तों का उल्लंघन किया है। इसके बाद कर्ज देने वाले कोर्ट पहुंच गए। कंपनी ने लीगल और फाइनेंशियल एडवाइजर्स चुन लिया है। रिपोर्ट के मुताबिक टप्परवेयर और इसके लेंडर्स के बीच इस लेकर बातचीत शुरू हो गई है कि 70 करोड़ डॉलर (5870.53 करोड़ रुपये) से अधिक के कर्ज को कैसे मैनेज किया जाए।

सिस्टमेटिक्स कॉर्पोरेट सर्विसेज लिमिटेड ने जुटाए 103.12 करोड़ रुपये

ऑल्टर्नेट इनवेस्टमेंट फंड्स (AIF) लॉन्च करने की तैयारी

मुंबई/इन्दौर ।

सिस्टमेटिक्स कॉर्पोरेट सर्विसेज लिमिटेड ने 1531 रुपये प्रति शेयर के मूल्य पर इक्विटी शेयरों के प्रेफेरेंशियल अलॉटमेंट के माध्यम से 103.12 करोड़ रुपये की फंड जुटाने की घोषणा की है। यह कंपनी की स्ट्रेटेजिक और ऑपरेशन में अपने इन्वेस्टर्स के विश्वास और भरोसे को मजबूत करता है। इस रकम का उपयोग सिस्टमेटिक्स के अलग अलग बिज़नेस वर्टिकल्स में स्ट्रेटेजिक इनिशियेटिव के लिए किया जाएगा, जिसमें केटेगरी I और केटेगरी III के दो ऑल्टर्नेट इनवेस्टमेंट फंड्स (AIFs) की शुरुआत, मार्जिन ट्रेडिंग बुक का विस्तार, वेल्थ मैनेजमेंट को मजबूत करने, इन्स्टिट्यूशन संस्थागत और एचएनआई/रिटेल ब्रोकिंग डिवीजन का विस्तार और आईबी एवं ईसीएम बिज़नेस की ग्रोथ को तेज करना शामिल है। बेलग्रेव इन्वेस्टमेंट फंड, श्री मधुकर चिमनलाल शेठ, ऑथम इन्वेस्टमेंट एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड, श्री सिद्धार्थ अय्यर, निखिल वोरा एचयूएफ, कैप्री ग्लोबल होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड, स्काई हॉक वेंचर्स, को प्रेफेरेंशियल शेयर अलॉट किए जाएंगे। सिस्टमेटिक्स कॉर्पोरेट सर्विसेज लिमिटेड (SCSL) के प्रबंध निदेशक श्री निखिल खंडेलवाल ने कहा, इस फंड का जुटाया जाना हमारे विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह हमें अपनी विकास पहलों को तेज करने और एक प्रशंसित भारतीय वित्तीय सेवा कंपनी बनाने के हमारे इरादे को और मजबूती देता है। सिस्टमेटिक्स ईसीएम और आईबी में अपनी क्षमताओं को बदलने के साथ ही पीएमएस और ब्रोकरेज व्यवसायों की वृद्धि को तेज कर रही है। ऑल्टर्नेट इनवेस्टमेंट फंड्स(AIFs) और वेल्थ मैनेजमेंट की नई विकास पहलों का फायदा मिलने में सक्षम है। यह हमारे कॉर्पोरेट क्लाइंट्स के लाइफसाइकल पार्टनर होने के हमारे प्रिंसिपल से मेल खाता है। सिस्टमेटिक्स ने मजबूत वित्तीय प्रदर्शन किया है, जिसमें कर-पश्चात लाभ वर्ष 2020 में 1.32 करोड़ रुपये था, जो वर्ष 2024 में 152% सीएजीआर के साथ बढ़कर 53.35 करोड़ रुपये हो गया है।

बजाज हाउसिंग फाइनेंस लि के आईपीओ ने निवेशकों का पैसा किया दोगुना

यूपीआई से पेमेंट करने वाले 14 लाख आवेदकों की एप्लिकेशन निरस्त

नई दिल्ली। 12 सितबंर को बीएसई और एनएससी पर लिस्ट हुए बजाज हाउसिंग फाइनेंस लिमिटड के आईपीओ ने निवेशकों के पैसे दोगुने से ज्यादा कर दिए है लेकिन इस मौके का फायदा उठाने में वह निवेशक पीछे रहे गए जिन्होंने आईपीओ अप्लाई करने के समय यूपीआई से पेमेंट किया था। यूपीआई से पेमेंट करने वाले 14 लाख आवेदकों के एप्लिकेशन निरस्त कर दिए गए है। ऐसा यूपीआई के जरिए से पेमेंट करने में आई तकनीकी गड़बड़ी के कारण हुआ जिन निवेशकों ने नेटबेकिंग के जरिए एप्लिकेशन लगाई थी उनमें एक भी एप्लिकेशन निरस्त नहीं हुई है। इस आईपीओ के लिए 89.07 लाख एप्लिकेशन लगाए गए थे जिनमें से 74.46 लाख आवेदन योग्य पाए गए। यह आईपीओ 9 सितंबर को खुला था और इस आईपीओ के तहत कंपनी ने 66 रुपए से लेकर 70 रुपए का प्राइज बैंड था 17 सितंबर को कंपनी की शेयर की कीमत 181.50 रूपए थी यानि लिस्टिंग के यह शेयर अपने प्राइज से 2 गुना बढ़ चुके हैं और यह शेयर लेने वाले छोटे निवेशकों के 15 हजार का निवेश दोगुना हो गया है। कंपनी का मार्केट कैप एक लाख 37 हज़ार 406 करोड़ हो गया है। यदि आप भी भविष्य में किसी आईपीओ के लिए अप्लाई करने जा रहे हैं तो आवेदन करते समय नेटबेकिंग के जरिए ही अपलाई करे इससे आपको आईपीओ अलॉट होने की संभवना बढ़ सकती है।

पटना में गंगा उफनाई, 76 स्कूल बंद

औरंगाबाद में 5 लोग नदी में बहे, बक्सर में कई एकड़ फसल डूबी

पटना। नेपाल और पड़ोसी राज्यों में हुई बारिश की वजह से बिहार की नदियां उफान पर हैं। पटना में गंगा का जलस्तर बढ़ने पर दियारा इलाके के 76 स्कूलों को 21 सितंबर तक बंद कर दिया है। वहीं औरंगाबाद में एक ही परिवार के 5 लोग बटाने नदी में बह गए। इनमें से तीन को बचा लिया गया जबकि मां और बेटे लापता हैं। बक्सर में गंगा के बढ़े जलस्तर ने परेशानी बढ़ा दी है। कई एकड़ में लगे फसल डूब गए हैं। वहीं नालंदा में भी जिरायन नदी का जलस्तर बढ़ा हुआ है। हालांकि, मौसम विभाग के मुताबिक, प्रदेश में अब मानसून कमजोर पड़ने लगेगा है। आज किसी भी जिले में बारिश की संभावना नहीं है। अधिकतम और न्यूनतम तापमान में इजाफा होगा। इससे लोगों को उमस भरी गर्मी महसूस होगा। मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार, झारखंड और उत्तरी छत्तीसगढ़ पर बना डिप्रेशन उत्तर पश्चिम दिशा की ओर बढ़ गया है। मानसून टर्फ लाइन देहरादून, पूर्वोत्तर छत्तीसगढ़, झारखंड से होते हुए बंगाल की खाड़ी की ओर जा रही है। इधर, बाढ़ अनुमंडल के बथोई पंचायत में सकरी नदी में पानी का जलस्तर बढ़ने के कारण बरुआने जमींदारी बांध का कटाव होने से ग्राम लालपुरा, चकजगमल में बाढ़ का पानी फैल गया है। इससे फसल भी प्रभावित भी हुई है। इसका जायजा लेने के लिए अनुमंडल पदाधिकारी, बाढ़, कार्यपालक अभियंता समेत कई अफसर वहां पहुंचे जायजा लिया। गंगा में फ्लड को देखते हुए पटना

जिले के स्कूल बंद किए गए है। उट ने पटना जिले के 76 स्कूलों को तत्काल प्रभाव से 21 सितंबर तक बंद करने का आदेश दिया है। गंगा नदी का जलस्तर खतरे के निशान को क्रॉस कर चुका है। इसके कारण आदेश जारी हुआ है। अथमलगोला, बाढ़, दानापुर, बख्तियारपुर, फतुहा , मनेर, मोकामा और पटना सदर प्रखंड के स्कूलों को बंद करने का आदेश है। केंद्रीय जल आयोग की रिपोर्ट के अनुसार पटना के मसौढ़ी में गंगा बेसिन में दरधा नदी में बाढ़ की स्थिति में बन रही है। जलस्तर बढ़ने की रफ्तार 10.0 मिमी/घंटा है। रात 12 बजे धारदा नदी खतरे के निशान (56.7) मीटर से 0.05 मीटर (56.75 मीटर) ऊपर बह रही है। 30 सितंबर 2019 के बाद दरधा नदी खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। वहीं पटना के बाढ़ अनुमंडल के बेलछी प्रखंड के जगजानपुर गांव में बाढ़ का पानी आने से ग्रामीणों का मुख्य मार्ग से संपर्क टूट गया है। ठल्ह-30अ के किनारे भी बाढ़ का पानी पहुंच गया है। गंगा के जलस्तर बढ़ने से दानापुर के दियारा इलाके में पानी घुस गया है। बुधवार को पूर्व सांसद रामकृपाल यादव नदी के जलस्तर को देखने नसरीगंज फक्कड़ महतो घाट पहुंचे। वहीं, पूर्व सांसद रामकृपाल यादव घाट पर पहुंचे तो घाट पर मौजूद खगौल दियारा में टीका देने जा रही पीएचसी की एएनएम, आशा और आंगनबाड़ी कर्मी उनसे मिलने पहुंची। उनसे मिलकर सभी कर्मियों ने कहा कि दियारा में बाढ़ का पानी घुस गया है। हमे नाव से जाने में डर लगता है। इसके बाद रामकृपाल यादव ने सिविल सर्जन से बात की और दियारा क्षेत्र की स्थिति से अवगत कराया। वहीं पटना के मनेर प्रखंड के दियारा क्षेत्र के 6 पंचायतों के निचले हिस्से में बाढ़ का पानी घुस गया है। सड़क से लेकर दियारा तक पानी लबालब दिखाई पड़ रहा है, जहां इन पंचायतों का शहर मुख्यालय से संपर्क टूट चुका है। सबसे अधिक मनेर प्रखंड के छिहंतर, महावीर टोला, हाथी टोला, हल्दीछपरा, दुधैला, रामपुर , इसलामगंज , के निचले हिस्से में बाढ़ का पानी घुस गया है। औरंगाबाद में मंगलवार रात करीब 8 बजे एक बाइक सवार परिवार के 5 लोग बटाने नदी में बह गए। सभी देव की ओर से कुटुंबा थाना क्षेत्र के महुआ धाम की ओर जा रहे थे। नदी के पुल के पास वैकल्पिक रास्ता है।

पूर्णिया में बंगाल के 100 युवाओं से ठगी, रेस्क्यू

अच्छी नौकरी के लालच में फंसे, फॉर्म और रजिस्ट्रेशन के नाम पर सभी से ऐंठे 20 हजार रुपए

पूर्णिया । बंगाल के 100 युवाओं के साथ ठगी हुई है। सभी को मंगलवार रात पुलिस ने रेस्क्यू किया। पुलिस ने रैकेट का खुलासा करने के लिए ठगों के 6 ठिकानों पर छापेमारी की। सभी युवाओं को पुलिस ने थाना लाया। ठगों ने इन्हें बंगाल की मेडिसिन कंपनी में काम का लालच दिया था। 17 हजार सैलरी और फ्री खाना-रहना का ऑफर दिया गया था। सॉफ्ट टारगेट पढ़े-लिखे युवा होते थे, जिन्हें नौकरी की तलाश होती थी। रजिस्ट्रेशन के नाम पर 85,00 और फॉर्म के नाम पर 11,600 फोन पे पर लिया गया। इसके बाद इन्हें 10 दिन के लिए ट्रेनिंग दी गई। एक कमरे में 10 लड़के रहते थे। एक-दूसरे से बात करने की इजाजत नहीं थी। सभी से एक ब्लैंक फॉर्म में पहचान के 100 लोगों के नंबर लिखवाया। सभी को फोन कर लालच देने को कहा गया। रामबाग के 6 किराए के मकान में 500 लड़कों को ट्रेनिंग दी जा रही थी। सदर थाना क्षेत्र के रामबाग के सरना चौक पर पुलिस ने छापेमारी की। गिरोह के लाइनर फरार हो गए हैं। ठगी का खेल तीन माह से चल रहा है। लोकल लाइनर की मदद से बंगाल का अंतरराज्यीय गिरोह रेकेट को ऑपरेट कर रहा है।

सीएम ने 211 करोड़ की योजनाओं का किया शिलान्यास

कैमूर में ग्रामीण बोले-हमें कई समस्या रखनी थी, सीएम के सामने नहीं जाने दिया

कैमूर । मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पहुंचे जहां 211 करोड़ रुपए की विभिन्न योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया। मां मुंडेश्वरी धाम परिसर स्थित बिहार के इकलौते वन्य प्राणी इको पार्क का उन्होंने उद्घाटन किया जो 14 एकड़ में 10 करोड़ रुपए की लागत से बना था। उसके बाद मुंडेश्वरी में दर्शन पूजन किया। मुख्यमंत्री हेलीकॉप्टर से रामगढ़ प्रखंड के तियरा पहुंचे, जहां विभिन्न विभागों द्वारा लगे स्टॉल का निरीक्षण किया। उन्होंने पूरे कार्यक्रम में मीडिया और जनता से दूरी बनाए रखी, लेकिन ग्रामीण काफी नाराज दिखे।इस कार्यक्रम में ग्रामीणों को जाने की इजाजत नहीं दी गई थी। सभी लोगों को घरों में प्रशासन ने कैद रखा। उनके जाने के बाद जनता ने काफी भड़ास निकाली। कहा कि हमारे गांव में आकर मुख्यमंत्री हम ही से नहीं मिले हमारी समस्याओं को नहीं सुने। तियरा गांव के महेंद्र कुमार और रवि कुमार बताते हैं कि मुख्यमंत्री हमारे गांव में आए थे हमने टीवी पर तो देखा है लेकिन उनको नजदीक से नहीं देखा। लेकिन प्रशासन के लोगों द्वारा हम लोगों को देखने तक नहीं दिया गया। हम लोगों की कई समस्याएं थी जिसमें नदी पर पुल बनाना, श्मशान के लिए भूमि, बच्चों के खेलने के लिए खेल मैदान लेकिन मिलने तक नहीं दिया गया कि हम लोग अपनी बातों को उन तक पहुंचा पाए। बेचनी कुंवर ने जानकारी देते हुए बताया कि नीतीश कुमार जब गांव में आए तो पुलिस वाले हम लोगों को भगा दिए हैं। ना हम लोग उनको देख भी नहीं पाए।

संक्षिप्त डायरी

200 साल बाद गया पहुंचा परिवार, पूर्वजों का किया पिंडदान

गया । पितृ पक्ष मेले के दूसरे दिन देश के विभिन्न राज्यों से तीर्थ यीत्री पहुंच रहे हैं। कोई दिल्ली से तो कोई एमपी से परिवार के साथ आया है। इनमें से कई ऐसे भी लोग हैं जो पहली बार गया आएं हैं और कई ऐसे हैं जिनके पूर्वज काफी साल पहले आ चुके हैं। जिला प्रशासन के अनुसार 1 लाख से अधिक श्रद्धालु पहुंच चुके हैं। जो अपने पितरों के श्राद्ध और पिंडदान में जुटे हैं। ओडिशा से आईं कंचन अग्रवाल ने कहा कि दो सौ साल हो गए हमारे परिवार ने यहां श्राद्ध नहीं किया। हम बहुत समय से कोशिश कर रहे थे, पूर्वजों की कृपा रही कि हम यहां आएं हैं। हमारे पिता जी, ससुर का श्राद्ध है। मुझे खुशी की अनुभूती हो रही है। लोगों ने कहा कि है कि पितृ पक्ष मेले में काफी अच्छी सुविधा की व्यवस्था की गई है। काफी अच्छा लग रहा है। विष्णुपद मंदिर से जुड़े सभी घाटों पर पुलिस फोर्स की तैनाती की गई है। सिविल वॉलंटियर्स तीर्थ यात्रियों की मदद के लिए तत्पर है। वही कंट्रोल रूम से तीर्थ यात्रियों की समस्याओं का हल निकाला जा रहा है। घाट पर एसडीआरएफ की टीम भी है। तीर्थ यात्रियों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है। फल्गु नदी में तीर्थ यात्रियों के नहाने और तर्पण के लिए बोर्ड लगा है। फल्गु नदी के जल से ही पितरों का तर्पण किया जाता है। असम डिब्रूगढ़ से नागालैंड यूनिवर्सिटी की एसोसिएट प्रोफेसर ललिता खादरियार ने कहा कि हम लोग असम से आएं हैं। हमारे पूर्वज 1979 में आएं थे। इसके बाद हमलोग आएं हैं। हमलोग चार पीढ़ियों का पिंडदान करने आएं हैं। आत्मा, परमात्मा पर हमें विश्वास है। पवन पाटीदार ने कहा कि बहुत अच्छा सहयोग लग रहा सरकार का। अच्छी सुविधा है। पिता जी का पिंडदान करने आए हैं। दर्शन सिंह तोमर ने कहा कि मध्यप्रदेश से आएं हैं। अंबा गांव के रहने वाले हैं। पहली बार मैं आया हूं। इनके बेटे धीरेंद्र सिंह तोमर ने बताया कि अभी यहां आएं हैं। अगले साल पापा को वैष्णो देवी ले जाएंगे। उज्जैन ले जाएंगे। केदार नाथ ले जाना चा रहे हैं। तीर्थ स्थान घुमाने हैं। दिल्ली से आईं विमला शर्मा ने कहा कि हम लोग दिल्ली से आए हैं। हमारे पूर्वज 10 साल पहले आए थे। पहले से बहुत अच्छी सुविधा है। पहले भी हमलोग यहां आ चुके हैं।

फिल्मी स्टाइल में एक्साइज पुलिस ने शराब तस्कर को दबोचा

औरंगाबाद । आबकारी महकमे की पुलिस ने बॉलीवुड स्टाइल का एक्शन दिखाया है। यह एक्शन एक्साइज पुलिस ने बुधवार को तब दिखाया जब वह छापेमारी करने औरंगाबाद के देव थाना क्षेत्र के गुजराया गांव के पास पहुंची। वहां एक्साइज डिपार्टमेंट के शराब विरोधी दस्ता को देखते ही शराब लेकर जा रहे बाइक सवार तस्कर भागने लगे। इस दौरान तस्कर की बाइक अनियंत्रित होकर बीच नहर में जा गिरी। इस बीच तस्करों का पीछा करने के दौरान उत्पाद विभाग की स्कॉर्पियो भी नहर में जा गिरी। पुलिस ने बाइक से एक बैग में रखी शराब की खेप बरामद कर ली। साथ ही दो शराब तस्करों को भी धर दबोचा। घटना के संबंध में पुलिस का कहना है कि उत्पाद विभाग की टीम देव मोड़ के पास केताकी नहर के रास्ते शराब की बड़ी खेप लाए जाने की सूचना पर नहर रोड पर ही वाहनों की सघन तलाशी शुरू कर दी। इसी बीच केताकी की ओर से आ रही एक अपाची बाइक को पुलिस ने रुकने का इशारा किया। पुलिस को देखते ही बाइक चालक बाइक मुड़ाकर तेजी से भागने लगा। बाइक को भागते देख पुलिस भी उसे खदेड़ने लगी। इस दौरान देव मोड़ से गजराया गांव तक करीब 5 किमी. दूर तक पुलिस ने शराब तस्करों का पीछा किया। पीछा करने के दौरान शराब तस्करों की बाईक के साथ ही एक्साइज पुलिस की टीम की स्कॉर्पियो भी नहर के बीच जा गिरी। इसके बावजूद पुलिस ने दो शराब तस्करों को पकड़ने के साथ ही शराब की खेप बरामद कर ली। घटना के बाद आबकारी पुलिस की नहर में गिरी गाड़ी को देखने के लिए आसपास के लोग जमा हो गये। घटना के संबंध में ग्रामीणों ने बताया कि आबकारी विभाग की पुलिस एक बाइक को पकड़ने के लिए तेजी से पीछा कर रही थी। वही भागने के दौरान शराब तस्कर बाइक के साथ ही आबकारी विभाग की स्कॉर्पियो भी बीच नहर में जा गिरी। इस दौरान ऐसा लगा कि तेजी से भाग रहे तस्करों एवं आबकारी विभाग की गाड़ी कितने लोगों को रौंद देगी।

चाकू गोद कर व्यक्ति का मर्डर, एक घायल

शराब तस्करी के विवाद में हमले का आरोप, गांव में तनाव का माहौल

छपरा । आपसी विवाद में मंगलवार देर रात अधेड़ की चाकू गोद कर हत्या कर दी गई है। घटना नगर थाना क्षेत्र के रौजा तेलपा की है। बताया जाता है कि शराब तस्करी के विवाद में नशे की हालत में आरोपी ने हमला कर दिया। इसमें भजन महतो (55) पिता देव कुमार महतो की मौत हो गई है। जबकि, मृतक के बड़े भाई घायल है। भजन महतो की चाकू घोंपने के बाद घटनास्थल पर ही मौत हो गई। हत्या के बाद गांव में तनाव की स्थिति है, जिसको लेकर पुलिस की तैनाती की गई है। आपसी मारपीट और चाकूबाजी में एक जख्मी है। जिनका सदर अस्पताल में इलाज चल रहा है।

भजन महतो को अस्पताल में डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। इसके बाद सदर अस्पताल में परिजनों ने हंगामा किया। घटना के बारे में जानकारी देते हुए मृतक के भाई जवाहर महतो ने बताया कि पड़ोस के एक व्यक्ति से दो दिन पहले विवाद हुआ था। आरोपी ने बार बार हत्या करने की धमकी दी थी। मंगलवार देर शाम वो मेरे घर के बाहर आकर बैठा हुआ था। मेरे बड़े भाई जब गए तो उनके ऊपर चाकू से हमला कर दिया। उनके चिल्लाने के बाद सभी लोग बाहर निकले, तो आरोपी ने शराब के नशे में चाकू घोंप दिया। वो जमीन पर गिर कर अचेत हो गए। अस्पताल में आने के बाद डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। शराब के कारोबार को रोकने को लेकर विवाद हुआ था। घटना में बारे में नगर थानाध्यक्ष संजीव कुमार ने बताया कि थाना क्षेत्र के रौजा तेलपा में चाकू घोंप कर एक व्यक्ति की हत्या हुई है। फिलहाल, शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए छपरा सदर अस्पताल में भेज दिया है। परिजनों के दिए गए आवेदन के आधार पर कार्रवाई की जा रही है।

औरंगाबाद में बाइक समेत परिवार के 5 लोग डूबे

औरंगाबाद । एक बाइक सवार परिवार के 5 लोग बटाने नदी में बह गए। सभी देव की ओर से कुटुंबा थाना क्षेत्र के महुआ धाम की ओर जा रहे थे। नदी के पुल के पास वैकल्पिक रास्ता है। वहां से गुजरने के दौरान सभी नदीं में डूब गए। पांच लोगों में तीन को स्थानीय गोताखोरों और ग्रामीणों की सहायता से निकाल लिया गया। तीनों की स्थिति गंभीर है। मां-बेटे लापता हैं। गंभीर लोगों का इलाज रेफरल अस्पताल में चल रहा है। घटना अंबा देव पथ की है। ग्रामीणों ने कासमा थाना क्षेत्र के पखनोउर निवासी शीला देवी (45), गोह थाना क्षेत्र के दधपी गांव निवासी संतोष पाल और सत्यम कुमार (2) को बचा लिया। वहीं, संतोष पाल की पत्नी प्रियंका देवी और एक साल का बेटा अभ्यम कुमार लापता है। सभी एक ही परिवार के हैं। घटना की जानकारी मिलते ही अंबा अंचलाधिकारी चंद्रप्रकाश, प्रखंड विकास पदाधिकारी मनोज कुमार, अंबा थाना अध्यक्ष राहुल कुमार, एसआई पंकज झा, एसआई सत्येंद्र झा, एसआई औरंगजेब खां सहित अन्य अधिकारी मौके पर पहुंचे। स्थानीय गोताखोरों के सहयोग से खोजबीन में लग गए। स्थानीय रमेश कुमार पाल ने बताया कि हमलोगों ने तीन लोगों को निकाला। जिनका इलाज कुटुंबा रेफरल अस्पताल में किया जा रहा है। यह सभी एक ही बाइक पर सवार होकर महुआ धाम की ओर जा रहे थे। एसडीआरएफ की टीम पहुंच रही है। लापता प्रियंका देवी और पुत्र अभ्यम कुमार की खोजबीन की जा रही है। रात साढ़े 11 बजे खोजबीन की गई।

बागेश्वर धाम सरकार धीरेंद्र शास्त्री 26 को आएंगे गया

गया। पितृपक्ष के दौरान बागेश्वर धाम सरकार धीरेन्द्र शास्त्री 26 सितंबर को गयाजी धाम पहुंचेंगे। वे यहां अपने भक्तों के पूर्वजों का पिंडदान कराएंगे। साथ ही उन्हें भागवत कथा भी सुनाएंगे। इसकी तैयारी शुरू हो गई है। वे बोधगया के सम्बोधि रिसोर्ट में ठहरेंगे और वहीं विधि-विधान से भक्तों के पूर्वजों का पिंडदान कराया जाएगा। साथ ही उसी रिसोर्ट परिसर में वे भागवत कथा भी सुनाएंगे। इस बात की पुष्टि डीएम डॉ. त्यागराजन ने की है। डीएम ने कहा कि पंडित धीरेन्द्र शास्त्री के गया आने की औपचारिक सूचना मिली है। इसके अलावा शेष जानकारी उनके पंडा को ही है। इधर, बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र शास्त्री के तीर्थ पुरोहित गजाधर लाल कटरियार धेड़ी ने बताया कि पंडित धीरेंद्र शास्त्री और उनके भक्त बड़ी संख्या में गया जी धाम में पिंडदान के लिए पधार रहे हैं। वे हमसे गुरु आज्ञा लेकर भक्तों का पिंडदान कराएंगे। गजाधर लाल कटरियार धेड़ी ने बताया कि पंडित धीरेन्द्र शास्त्री के भक्तों के पूर्वजों का अर्पण, तर्पण, पूजा-पाठ, पिंडदान की क्रिया को देव घाट स्थित ओडिशा भवन परिसर में एक साथ कराया जाएगा। इसके बाद वे भगवान श्री हरि विष्णुचरण का दर्शन मंदिर के गर्भ गृह में करेंगे और वहां पिंड अर्पित करेंगे। इसके बाद उनके द्वारा विभिन्न प्रमुख स्थानों पर पिंडदान किया जाएगा। यह सब पूरा करने के बाद वे बोध गया रिसोर्ट चले जाएंगे।

हत्या की, टॉयलेट में दफनाया ऊपर से प्लास्टर किया

आरोपी ने पुलिस से बचने के लिए कपड़े उतारकर किया मर्डर, डेकोरेशन के बहाने घर बुलाया था

नालंदा । एक व्यक्ति की लोढ़े से सिर कूचला, फिर कुदाल से गर्दन काटकर हत्या कर दी गई। फिर उसके शव को शौचालय में दफनाया। इसके बाद शव के ऊपर सीमेंट से प्लास्टर कर दिया। वारदात के दो दिन बाद पुलिस ने शव को बरामद किया है। मृतक की पहचान चिकसौरा थाना क्षेत्र के दामोदर गांव के रहने वाले संतोष कुमार (40) के रूप में हुई है। हिलसा डीएसपी सुमित कुमार ने बताया कि घटना के समय आरोपी अपने कपड़े उतार दिया, ताकि खून के धब्बे और निशान उसके कपड़ों पर न लग जाए। डीएसपी ने बताया कि17 सितंबर को संतोष कुमार की पत्नी सुजाता देवी ने हिलसा थाने में शिकायत दर्ज करवाई थी। जांच के दौरान आरोपी विक्कू को हिरासत में लेकर पूछताछ की। इसके बाद मामले का खुलासा हुआ। बुधवार को शव बरामद कर लिया है। मृतक संतोष कुमार नालंदा में ही डेकोरेशन का काम करता है। तीन दिन पहले (15 सितंबर) को वह अपने बेटे रोहित के साथ गांव से तीन किलोमीटर दूर आरोपी विक्कू चौधरी के घर मरांची गांव गया था। विक्कू ने उसे डेकोरेशन के लिए बुलाया था। यहां से विक्कू दोनों को 13 किमी दूर हिलसा ले गया। मृतक के बेटे का कहना है कि आरोपी अपने मौसा के घर ले गया। रात हो जाने की वजह से तीनों वहीं रुक गए। हत्या से पहले विक्कू ने दोनों को चिकन चावल खिलाया। फिर सोने के कुछ देर बाद विक्कू ने संतोष की हत्या कर दी और घर के शौचालय में चार फीट गड्ढा खोदकर दफना दिया। आरोपी ने वारदात के अगले दिन मृतक के बेटे की भी पिटाई की और उसे बेहोशी की हालत में झाड़ियों में फेंक दिया। फिलहाल पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। हालांकि, उसने हत्या क्यों की इसका पता अभी नहीं चल पाया है। घटना

हिलसा थाना क्षेत्र अंतर्गत इंदौत गांव की है। मामले को लेकर मृतक के बेटे रोहित ने बताया, मैं अपने पिता के साथ डेकोरेशन का सामान लेकर आरोपी के घर गया था। वह हम दोनों को हिलसा ले गया। कहा- वहां मेरे मौसा का घर है। डेकोरेशन का सामान भी वहीं रख देंगे। वहां पहुंचने के बाद रात हो गई। हमलोग चिकन चावल खाने के बाद सो गए। रोहित ने बताया कि मैं किसी तरह गांव से बाहर आया और एक व्यक्ति से मदद मांगकर डायल-112 पुलिस की मदद से हिलसा थाने पहुंचा और आरोपी के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। मृतक के भाई राकेश पटेल ने बताया कि विक्कू चौधरी कुछ दिन पहले संतोष कुमार के पास आया था। उसने कहा कि घर में पूजा और

शादी है। उससे डेकोरेशन को लेकर बातचीत तय हुई थी। जिसके बाद संतोष डेकोरेशन के सामान के साथ विक्कू के घर गया था। संतोष का शव जगलाल चौधरी के घर से बुधवार की सुबह मिली। संतोष की डेड बॉडी आरोपी के निशानदेह पर बरामद की गई है। मृतक के परिवार वाले आशंका जता रहे कि डेकोरेशन का सामान हथियाने के लिए उसने मर्डर किया है। सामान करीब 3 लाख रुपए का है, जिसे पुलिस ने बरामद कर लिया है। हिलसा डीएसपी सुमित कुमार ने बताया कि मामले की जांच के दौरान पता चला कि विक्कू चौधरी से संतोष 50 हजार रुपया लिया था। लेकिन रुपया नहीं दे रहा था। फिर विक्कू को हिरासत में लेकर पूछताछ की। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि कुदाल से काटकर हत्या की है। आरोपी की निशानदेही पर शव को बरामद कर लिया है। पुलिस ने आरोपी विक्कू को गिरफ्तार कर लिया है। साथ ही डेकोरेशन का सामान भी बरामद कर लिया है। पुलिस ने सामने आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। उसने लोढ़ी से सिर कूच कर हत्या की है। पूछताछ के दौरान उसने बताया कि हत्या के बाद लाश को शौचालय में छिपाया है। जिसके बाद पुलिस ने शव को बरामद किया। पुलिस ने लाश को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

पार्वती घाटी में घूमने की हैं कई बेहतरीन जगहें

पार्वती घाटी के दूर के छोर पर स्थित, तोश को सुंदर घाटी का अंतिम गाँव माना जाता है जो हिप्पी और साहसिक उत्साही लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय है। तोश की सड़क लंबी और घुमावदार है। तोश अन्य शहरों के विपरीत है जो मणिकरण या कसोल जैसे पार्वती नदी के साथ स्थित हैं।

भारत अपनी भौगोलिक विविधता के लिए जाना जाता है और यही कारण है कि यहां के हर राज्य में आपको प्रकृति का एक अलग सौंदर्य देखने को मिलेगा। ऐसा ही एक स्थान हिमाचल प्रदेश में भी स्थित है। भुंतर से स्पीति तक फैली, पार्वती घाटी हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में स्थित है। घाटी के पास घूमने के लिए कई आकर्षक स्थान हैं। रुद्र-नाग, सर्प के आकार का झरना, खिरगंगा के देवदार के जंगल जहाँ भगवान शिव का ध्यान किया जाता है, पांडु पुल का चट्टान का निर्माण और पिन-पार्वती दर्रा कुछ लोकप्रिय पर्यटन आकर्षण हैं। पिन वैली नेशनल पार्क एक अन्य पर्यटक आकर्षण है और यह हिम तेंदुए सहित वन्यजीवों की आबादी के लिए जाना जाता है। तो चलिए आज हम आपको पार्वती घाटी के आसपास घूमने की कुछ बेहतरीन जगहों के बारे में बता रहे हैं-

कसोल

हिमाचल प्रदेश में मिनी इज़राइल के रूप में जाना जाता है, कसोल पार्वती घाटी में एक हिल स्टेशन है। यह कुल्लू से 42 किमी पूर्व में 1640 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। कसोल अपनी सुंदर घाटी, पहाड़ों और महान जलवायु के कारण पूरे वर्ष बैकपैकर्स, ट्रेकर्स और प्रकृति के प्रति उत्साही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहां पर मौजूद कैफे और रेस्तरां स्थानीय व्यंजनों के साथ इजरायल के व्यंजन परोसते हैं। कसोल में पार्वती नदी सफेद पानी राफ्टिंग के लिए आदर्श है। कसोल में पूरे साल सुखद मौसम रहता है। कसोल घूमने का सबसे अच्छा समय मार्च से मई तक है।

तोश

पार्वती घाटी के दूर के छोर पर स्थित, तोश को सुंदर घाटी का अंतिम गाँव माना जाता है जो हिप्पी और साहसिक उत्साही लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय है। तोश की सड़क लंबी और घुमावदार है। तोश अन्य शहरों के विपरीत है जो मणिकरण या कसोल जैसे पार्वती नदी के साथ स्थित हैं। हालाँकि कुछ हद तक इसका व्यवसायीकरण हो गया है, फिर भी सड़कें, दुकानें और घर समान हैं। आप दिन में अपने चारों ओर बर्फ से ढके पहाड़ों और ग्लेशियरों को देख सकते हैं और रात में आकाश में फैले मिल्की वे को देख सकते हैं। या आप पास के ट्रेकिंग ट्रेल्स पर घूमने जा सकते हैं।

रसोल

पार्वती घाटी के लोकप्रिय शहर कसोल से लगभग 4 किमी की दूरी पर स्थित, रशोल या रसोल एक गाँव है जो तेजी से लोकप्रियता हासिल कर रहा है। पार्वती नदी की भीड़ से दूर, रसोल पहाड़ों में ऊंचे स्थान पर स्थित है, जो समुद्र तल से लगभग 3,000 मीटर की ऊंचाई पर है।

एडवेंचर्स प्लेसेस पर घूमना लगता है अच्छा तो शादी से पहले एक बार इन जगहों पर जरूर जाएं

भारत एक टूरिस्ट फेंडली देश है। यहां अंतरराष्ट्रीय से लेकर घरेलू पर्यटकों के देखने व घूमने के लिए काफी कुछ है। फिर भले ही आप प्रकृति प्रेमी हों या कुछ वक्त शांत माहौल में खुद के साथ बिताना चाहते हैं। आपको बीचेस पर घूमना पसंद हो या फिर कुछ रोमांचक करना, भारत में आपको हर तरह की एक्टिविटी करने का मौका मिलेगा। आज इस लेख में हम आपको भारत की कुछ एडवेंचर्स जगहों के बारे में बता रहे हैं, जहां पर आप भरपूर मौज-मस्ती करके एक नया एक्सपीरियंस ले सकते हैं। तो चलिए जानते हैं भारत की कुछ एडवेंचर्स प्लेसेस के बारे में-

ऋषिकेश

ऋषिकेश उत्तरी राज्य उत्तराखंड में गंगा नदी के तट पर स्थित है। यह शहर ज्यादातर तीर्थस्थल है और इसे भारत की योग राजधानी के रूप में भी जाना जाता है। हालांकि, रोमांच चाहने वाले पर्यटकों के लिए यहाँ कुछ साहसिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। आप गंगा नदी में राफ्टिंग, रॉक एंड क्लिफ चढ़ाई जैसी गतिविधियां कर सकते हैं, पास के जंगल में एक सर्वाइवल कैंप में भाग ले सकते हैं या बंजी जंपिंग भी कर सकते हैं।

लद्दाख

लद्दाख को कई मठों की भूमि के रूप में जाना जाता है। यह शहर भारत में सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित है। यहां के आसपास की भूमि की स्थलाकृति, ट्रेकिंग और राफ्टिंग के लिए एक आदर्श स्थान है। लद्दाख की प्रसिद्ध चदर ट्रेक, जो एक जमी हुई नदी पर एक ट्रेक है, यहाँ होता है। इसके अलावा, आप खूबसूरत ज़ांस्कर घाटी में राफ्टिंग कर सकते हैं।

गुलमर्ग

गुलमर्ग जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले में स्थित है। यहां पर आने के बाद आपको स्विट्जरलैंड के एक विशिष्ट गांव की याद जरूर आएगी। पूरा शहर एक उच्च ऊँचाई पर स्थित है और भारी बर्फबारी का सामना करता है। यहां प्राप्त बर्फबारी होने के कारण, हेलि-स्कीइंग यहां का एक लोकप्रिय रोमांचक खेल है। हेलि-स्कीइंग में स्की पर हेलीकॉप्टर से कूदना और कठोर ठंडी हवाओं का सामना करना शामिल है।

मनाली

मनाली उत्तरी राज्य हिमाचल प्रदेश में स्थित एक टाउनशिप है और एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल भी है। मनाली में आपको कई एडवेंचर्स एक्टिविटी जैसे पार्वती घाटी में ट्रैकिंग आदि करने का मौका मिलेगा। हालांकि, यहां सबसे प्रसिद्ध रोमांचक गतिविधियों में से एक बाइकिंग करना है। मार्ग आपको मनाली में स्थित विभिन्न गाँवों और इसके आसपास के इलाकों में ले जाएंगे। इस दौरान आपको कुछ सुंदर परिदृश्यों से गुज़रना होगा और वास्तव में आप इस जगह का अनुभव कर सकते हैं।

ऋषिकेश उत्तरी राज्य उत्तराखंड में गंगा नदी के तट पर स्थित है। यह शहर ज्यादातर तीर्थस्थल है और इसे भारत की योग राजधानी के रूप में भी जाना जाता है। हालांकि, रोमांच चाहने वाले पर्यटकों के लिए यहाँ कुछ साहसिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं।

पुदुचेरी में यह जगह करवाएंगी आपको एक अलग अनुभव

तमिलनाडु राज्य का पुदुचेरी शहर कई मायनों में देश के अन्य शहरों से काफी अलग है। दरअसल, तमिलनाडु के पुदुचेरी में करीबन 300 साल तक फ्रांसीसी अधिकार रहा, जिसका व्यापक प्रभाव इस शहर पर पड़ा। आज भी पुदुचेरी में आपको फ्रांसीसी वास्तुशिल्प और संस्कृति की छटा दिखेगी। इतना ही नहीं, यहां का प्राकृतिक सौंदर्य तो अनुपम है ही, साथ ही इसका अपना एक ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व भी है। घुमक्कड़ी के शौकीन लोगों को एक बार इस शहर का भी दौरा करना चाहिए। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको पुदुचेरी में घूमने लायक कुछ अच्छी जगहों के बारे में बता रहे हैं-

गिंगी किला

पुदुचेरी में घूमने के लिए गिंगी किला सबसे अच्छे स्थानों में से एक है। किले को 1921 में एक राष्ट्रीय स्मारक के रूप में घोषित किया गया है। एक अद्वितीय वास्तुशिल्प उपलब्धि होने के अलावा यह राज्य के कुछ महत्वपूर्ण किलों में से एक है। इतिहास और वास्तुकला प्रेमियों को पुदुचेरी में छुट्टियों में इस जगह पर एक बार जरूर जाना चाहिए।

श्री गोकिलम्बल थिरुक्मेश्वर मंदिर

पुदुचेरी में देखने के लिए अद्वितीय स्थानों में से एक, मंदिर में एक विशाल 15 मीटर लंबा मंदिर रथ है जो आम तौर पर ब्रह्मोत्सवम के दौरान एक जुलूस पर निकाला जाता है, जो मूल रूप से पुदुचेरी का वार्षिक उत्सव है। यह 2 दिनों में पुदुचेरी में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है।

जवाहर टॉय म्यूजियम

पुदुचेरी में देखने के लिए अद्वितीय स्थानों में से एक, जवाहर टॉय म्यूजियम एक डॉल हाउस है, जिसमें विभिन्न भारतीय राज्यों से लाए गए 140 से अधिक डॉल हैं। जवाहर टॉय म्यूजियम मुख्य शहर में, पुराने प्रकाश स्तंभ पर स्थित है, जो गांधी मैदान के पास है। इस संग्रहालय में कुछ दुर्लभ सजावटी गुड़िया और खिलौने हैं। यह केवल बच्चों और स्कूल के छात्रों को ही नहीं, बल्कि हर आंगतुक को एक आनंदमय अनुभव प्रदान करते हैं।

चुन्नमबार बोट हाउस

पुदुचेरी के प्राचीन बैकवाटर पर नाव की सवारी करके आप यकीनन खुद को प्रकृति के करीब पाएंगे। चुन्नमबार बोट हाउस प्रकृति प्रेमियों के लिए यकीनन एक बेहतरीन जगह है, जहां पर आप न केवल नाव की सवारी कर सकते हैं, बल्कि आश्चर्यजनक प्राकृतिक स्थानों का भी लुत्फ उठा सकते हैं।

सीता कल्चरल सेंटर

पुदुचेरी में सीता कल्चरल सेंटर एक बहुत प्रसिद्ध फ्रेंको-भारतीय सांस्कृतिक केंद्र है और पुदुचेरी में घूमने के लिए कई स्थानों में से एक है। कैंडप्पा मुदलियार स्ट्रीट पर स्थित, यह पुदुचेरी के सबसे बेहतरीन पर्यटक आकर्षणों में से एक है। यहां पर इंडियन कुकिंग, कोलम लर्निंग, आयुर्वेदिक मेडिसिन, योगा, पिलेट्स, और तमिल भाषा से, विभिन्न दिलचस्प मल्टीपल और सिंगल सेशन क्लास हैं।

क्रिकेट जगत में रिटायरमेंट को मजाक बना रखा है, मैं नहीं बनाऊंगा: रोहित शर्मा

चेन्नई (एजेंसी)। टीम इंडिया के टेस्ट और वनडे कप्तान रोहित शर्मा ने साफ कर दिया है कि टी-20 फॉर्मेट छोड़ने के अपने फैसले पर उनका यू-टर्न लेने का कोई विचार नहीं है। संन्यास की घोषणा के बाद वापसी करने वाले खिलाड़ियों पर चुटीला कटाक्ष करते हुए रोहित ने कहा कि उन्होंने बिल्कुल सही समय पर टी-20 से संन्यास लिया है। रोहित ने बतौर कप्तान टीम इंडिया को टी20 विश्व कप 2024 का खिताब दिलाकर संन्यास लिया था। इसी मैच के बाद विराट कोहली और रविंद्र जडेजा ने भी संन्यास की घोषणा कर दी थी।

रोहित ने भारतीय टी20 टीम में वापसी पर कहा कि इन दिनों विश्व क्रिकेट में संन्यास एक मजाक बन गया है, लोग संन्यास की घोषणा करते हैं लेकिन फिर खेलने के लिए लौट आते हैं, भारत में ऐसा नहीं हुआ है - हालांकि मैं अन्य देशों के खिलाड़ियों को देख रहा हूं, वे संन्यास की घोषणा करते हैं लेकिन फिर यू-टर्न लेते हैं। इसलिए आप वास्तव में कभी नहीं जानते कि कोई वास्तव में सेवानिवृत्त हुआ है या नहीं। मेरा निर्णय अंतिम है और मैं बहुत स्पष्ट हूं। यह टी20ई को अलविदा कहने का सही समय था।

बता दें कि पाकिस्तान के तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर भी अंतरराष्ट्रीय संन्यास से वापस आ चुके हैं। वह टी20 विश्व कप में पाकिस्तान की ओर से खेले थे। इसी तरह बेन स्टोक्स भी वनडे से संन्यास लेने के बाद 2023 वनडे विश्व कप में बतौर इंग्लैंड का कप्तान मैदान पर उतरे थे।

बहरहाल रोहित टी20 विश्व कप में टीम इंडिया के लिए स्टार बनकर उभरे थे। उन्होंने 8 पारियों में 36.71 की औसत और 156.71 की स्ट्राइक रेट से 257 रन बनाए। उन्होंने आयरलैंड के खिलाफ 52, ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सुपर 8 मैच में 47 गेंदों पर 92 तो इंग्लैंड के खिलाफ सेमीफाइनल में 57 रन बनाए थे। रोहित वैसे भी टी20 प्रारूप में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं। उन्होंने 159 मैचों में 32.05 के औसत और 140.89 के स्ट्राइक रेट से 4,231 रनों पर अपना करियर खत्म किया। उनके नाम पर पांच शतक और 32 अर्द्धशतक दर्ज हैं।

चैंपियंस लीग: हैरी केन ने चार गोल करके वायने रूनी का रिकॉर्ड तोड़ा

म्यूनिख (एजेंसी)। हैरी केन ने बायर्न म्यूनिख की डिनामो जाग्रेब पर धमाकेदार जीत में चार गोल किए जिससे वह वायने रूनी का रिकॉर्ड तोड़कर चैंपियंस लीग फुटबाल प्रतियोगिता में सर्वाधिक गोल करने वाले इंग्लिश खिलाड़ी बन गए। केन के शानदार प्रदर्शन से बायर्न ने डिनामो ज़ाग्रेब को 9-2 से करारी शिकस्त दी।

यह 2016 के बाद पहला अवसर है जबकि चैंपियंस लीग के किसी एक मैच में इतने अधिक गोल दागे गए। इससे बायर्न के नए कोच विंसेंट कोम्पनी ने यूरोपीय प्रतियोगिता में अपने अभियान की शानदार शुरुआत भी की। केन ने 19वें, 53वें, 73वें और 78वें मिनट में गोल करके प्रतियोगिता में अपने कुल गोल की संख्या को 33 तक पहुंचा दिया जो इंग्लैंड के किसी खिलाड़ी का नया रिकॉर्ड है।

उन्होंने रूनी के 30 गोल के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ा। केन ने तीन गोल पेनल्टी पर किए। उन्होंने मैच के बाद कहा, 'ईमानदारी से कहूं तो दूसरी पेनल्टी के बाद मुझे पता नहीं था की तीसरी पेनल्टी पर क्या करना है लेकिन मुझे खुशी है कि मैं इस पर भी गोल करने में सफल रहा।% बोरुसिया डॉर्टमुंड की 2016 में लेगिया वारसॉ पर 8-4 की जीत के बाद यह चैंपियंस लीग में सर्वाधिक गोल वाला मैच था।

टी20 विश्व कप में खिताब जीतने मानसिक मजबूती बढ़ाने में लगी है भारतीय टीम : हरमनप्रीत

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने कहा है कि टी20 विश्व कप में जीत के लिए टीम को मानसिक मजबूती पर भी ध्यान देना होगा। जिससे दबाव के क्षणों में टीम न बिखरे। हरमनप्रीत ने कहा कि इसी कारण खिलाड़ी मानसिक सेहत को बेहतर बनाने पर ध्यान दे रहे हैं। इसका परिणाम विश्वकप में देखने को मिलेगा। भारतीय महिला टीम 2020 में टी20 विश्व कप के फाइनल में उपविजेता रही थी। इस बार उसे ग्रुप ए में छह बार की विजेता और मौजूदा चैंपियन ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, श्रीलंका और न्यूजीलैंड के साथ शामिल किया गया है।

हरमनप्रीत ने कहा, हम लंबे समय से मानसिक मजबूती पर काम कर रहे हैं। मैच के अंतिम 3-4 ओवर बेहद अहम होते हैं। कप्तान के अनुसार अंतिम 4-5 ओवर में मानसिक रूप से मजबूत टीम ही जीत जीती है। इसी को देखते हुए भारतीय टीम ने हाल ही में इस पर ध्यान केंद्रित दिया है ताकि वे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर पायें।

हरमनप्रीत ने फाइनल में भारतीय टीम के कमजोर प्रदर्शन को लेकर कहा कि उनकी टीम को साल 2020 के फाइनल में ऑस्ट्रेलिया से 85 रन से हार का सामना करना पड़ा था। वहीं 2017 वनडे विश्व कप के फाइनल में इंग्लैंड से केवल नौ रन से वह जीत नहीं पायी। राष्ट्रमंडल खेल 2022 के फाइनल में भी ऑस्ट्रेलिया के हाथों उसे नौ रन से हार का सामना करना पड़ा। उन्होंने कहा, हम इन कमजोरियों पर काम कर रहे हैं और उम्मीद है कि टूर्नामेंट में इस बार हम इन बाधाओं को पार करने में सफल रहेंगे। टी20 विश्वकप अक्टूबर में यूएई में खेला जाएगा। इसमें भारतीय टीम 4 अक्टूबर को न्यूजीलैंड के खिलाफ अपना पहला मैच खेलेगी।

दलीप ट्रॉफी : अय्यर, सैमसन, पराग को मिलेगा खुद को साबित करने का एक और मौका

अनंतपुर (एजेंसी)। श्रेयस अय्यर, संजू सैमसन, रियान पराग और रिंकू सिंह जैसे खिलाड़ियों को गुरुवार से यहां शुरू होने वाले दलीप ट्रॉफी क्रिकेट टूर्नामेंट के अंतिम दौर के मैचों में लंबी अवधि के प्रारूप में खुद को साबित करने का एक और मौका मिलेगा।

सत्र की शुरुआत में खेले जा रहे इस टूर्नामेंट में कोई नॉकआउट मैच नहीं होगा तथा सर्वाधिक अंक हासिल करने वाली टीम विजेता बनेगी। अभी दो मैचों में नौ अंकों के साथ भारत सी अंक तालिका में शीर्ष पर है। उसके बाद भारत बी (07), भारत ए (06) और भारत डी (00) का नंबर आता है। रुतुराज गायकवाड की अगुवाई वाली भारत सी टीम अंतिम दौर के मैच में मयंक अग्रवाल की कप्तानी वाली भारत ए की टीम का सामना करेगी जबकि अभिमन्यु ईश्वरन के नेतृत्व वाली भारत बी की टीम भारत डी से भिड़ेगी जिसके कप्तान श्रेयस अय्यर हैं। बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला के लिए नजरअंदाज किए गए अय्यर को खुद को साबित करना पड़ेगा क्योंकि अभी तक वह प्रतियोगिता में आगे बढ़कर नेतृत्व नहीं कर पाए हैं। उनकी टीम अभी तक खाता भी नहीं खोल पाई है और ऐसे में अय्यर की जिम्मेदारी काफी बढ़ जाती है। भारत डी के बल्लेबाज संजू सैमसन और तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह के प्रदर्शन पर भी चयनकर्ताओं की निगाह टिकी रहेगी।

भारत बी की टीम में शामिल रिंकू सिंह पिछले मैचों में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाए थे और उनका लक्ष्य यहां बड़ी पारी खेलना होगा। जहां तक भारत ए और भारत सी के बीच मुकाबले की बात है तो इसमें अग्रवाल, पराग और साई सुदर्शन से बड़ी पारियों की उम्मीद है। पराग ने अभी तक आत्मविश्वास के साथ बल्लेबाजी की है लेकिन उन्हें क्रीज पर अधिक समय बिताने की जरूरत है।

चोट से उबर कर वापसी करने वाले तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा अधिक ओवर करने पर ध्यान देंगे जबकि शम्स मुलानी एक और मैच विजेता प्रदर्शन करना चाहेंगे। इशान किशन ने भारत सी की तरफ से शतक जड़कर लंबी अवधि के प्रारूप में यादगार वापसी की लेकिन चयनकर्ताओं का ध्यान खींचने के लिए उन्हें ऐसा प्रदर्शन जारी रखना होगा।

टीमें इस प्रकार हैं

भारत ए = मयंक अग्रवाल (कप्तान), रियान पराग, तिलक वर्मा, शिवम दुबे, तनुश कोटियन, प्रसिद्ध कृष्णा, खलील अहमद, अवेश खान, कुमार कुशाग्र, शास्वत रावत, प्रथम सिंह, अक्षय वाडकर, एसके रशीद, शम्स मुलानी, आकिब खान।

भारत बी = अभिमन्यु ईश्वरन (कप्तान), मुशीर खान, नितीश कुमार रेड्डी, वाशिंगटन सुंदर, नवदीप सैनी, मुकेश कुमार, राहुल चाहर, आर साई किशोर, मोहित अवस्थी, एन जगदीसन (विकेटकीपर), सुयश प्रभुदेसाई, रिंकू सिंह, हिमांशु मंत्री।

भारत सी = रुतुराज गायकवाड़ (कप्तान), साई सुदर्शन, रजत पाटीदार, अभिषेक पोरेल (विकेटकीपर), ईशान किशन, बी इंद्रजीत, रितिक शौकीन, मानव सुथार, गौरव यादव, विशाक विजयकुमार, अंशुल खंबोज, हिमांशु चौहान, मयंक मारकंडे, आर्यन जुयाल (विकेटकीपर), संदीप वारियर।

भारत डी = श्रेयस अय्यर (कप्तान), अथर्व तायडे, यश दुबे, देवदत्त पडिक्कल, रिकी भुई, सारांश जैन, अर्शदीप सिंह, आदित्य ठाकरे, हर्षित राणा, आकाश सेनगुप्ता, केएस भरत (विकेटकीपर), सौरभ कुमार, संजू सैमसन (विकेटकीपर)), निशांत सिंधु, विदवथ कावेरप्पा।

एलएलसी का तीसरा सत्र 20 सितंबर से

नई दिल्ली । लीजैंड्स लीग क्रिकेट (एलएलसी) का तीसरा सत्र 20 सितंबर से खेला जाएगा। इस लीग में केवल पूर्व क्रिकेटर ही खेल सकते हैं। ये लीग 16 अक्टूबर तक खेली जाएगी, जिसमें कुल 6 टीमें हिस्सा लेंगी। जिसमें, इंडिया कैपिटल्स, गुजरात जायंट्स, कोणार्क सूर्यास, मणिपाल टाइगर्स, सदर्न सुपरस्टार और अर्बनराइजर्स हैदराबाद शामिल हैं। इस लीग के सभी मैच जोधपुर, जम्मू और कश्मीर व सूरत में खेले जाएंगे। इस बार इसमें क्रिस गेल, हरभजन सिंह, सुरेश रैना, शिखर धवन, मोहम्मद कैफ और दिनेश कार्तिक जैसे स्टार क्रिकेटर भी शामिल हैं। हाल ही में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने वाले शिखर धवन के अलावा दिनेश कार्तिक भी इसमें खेलेंगे दिखेंगे। इसमें छह टीमें के बीच 25 मैच खेले जाएंगे। खिताबी मुकाबला 16 अक्टूबर को श्रीनगर के बख्शी स्टेडियम खेला जाएगा। फ्रेंचाइजी आधारित इस टूर्नामेंट में 200 खिलाड़ियों का एक पूल बनाया गया है। एलएलसी के सह संस्थापक रमन रहेजा ने कहा, 'लीजैंड्स लीग क्रिकेट का अगला सत्र शुरू होने वाला है। हमें खुशी है कि इस बार कश्मीर में भी मैच खेल जाएंगे। इससे कश्मीर के लोगों को भी स्टेडियम में मैच देखने का अवसर मिलेगा। आयोजकों ने कहा कि पिछले सत्र में इस लीग को देश में 18 करोड़ लोगों ने देखा था। पिछली बार इसमें सुरेश रैना, आरोन फिंच, मार्टिन गुप्टिल, गौतम गंभीर, क्रिस गेल, हाशिम अमला, रोस टेलर जैसे दिग्गजों ने खेला था।

हेड तोड़ सकते हैं सूर्यकुमार रिकॉर्ड

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज ट्रैविस हेड एकदिवसीय विश्वकप से ही जबरदस्त फार्म में हैं और अपनी आक्रामक बल्लेबाजी जारी रखे हुए हैं। इस बल्लेबाज ने इस साल कई रिकार्ड बनाये है। अब उनके निशाने पर भारतीय टीम के आक्रामक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव का एक रिकार्ड है। जिससे वह आने वाले दिनों में तोड़ सकते हैं। ये रिकार्ड है कैलेंडर ईयर में टी20 फॉर्मेट में 175 के स्ट्राइक रेट और 40 से अधिक की औसत से 1000 रन बनाने का। टी20 फॉर्मेट में अब तक सिर्फ दो बल्लेबाज ऐसे हुए हैं जिन्होंने एक कैलेंडर ईयर में 40 से अधिक की औसत से 1000 से ज्यादा रन बनाए हैं। इसमें सूर्यकुमार यादव ने पहली बार 2022 में यह उपलब्धि हासिल की थी।सूर्या ने तब 41 पारियों में 45.54 की औसत से 1503 रन बनाए थे। सूर्या का स्ट्राइक रेट इस दौरान 175.99 रहा। ऑस्ट्रेलिया के हेड ने इस साल अब तक 39 पारियों में 1442 रन बना दिये हैं। इस दौरान उनका औसत 41.20 रहा। हेड इस साल अब तक 1 शतक और 13 अर्धशतक लगा चुके हैं। ट्रैविस हेड अब सूर्या के रिकॉर्ड से 61 रन ही पीछे हैं। जैसे ही वे 62वां रन लेंगे तो एक कैलेंडर ईयर में 40 से अधिक की औसत से सबसे अधिक रन बनाने वाले बैटर बन जाएंगे. हेड को यह रिकॉर्ड बनाने का मौका इस साल नवंबर में मिलेगा। नवंबर में ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के बीच 3 मैचों की टी20 सीरीज खेली जाएगी। उसमें हेड इस दौरान सूर्या को पीछे छोड़ सकते हैं। हेड ने ऑस्ट्रेलिया के लिए अब तक 49 टेस्ट, 65 वनडे और 38 टी20 मैच खेले हैं। उन्हें जितने मौके वनडे और टेस्ट मैचों में मिले हैं, उतने टी20 में नहीं मिले पर इस उनका प्रदर्शन तूफानी रहा है। जिससे हालात बदल गये हैं।

ऋषभ पंत 632 दिन बाद टेस्ट क्रिकेट में वापसी को तैयार, बांग्लादेश के खिलाफ ही खेला था आखिरी मैच

चेन्नई (एजेंसी)। स्टार विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत दो साल में अपना पहला टेस्ट खेलने के लिए तैयार हैं और बुधवार को नेट अभ्यास के दौरान उन्होंने अपने पुराने खेल की झलक पेश की। भयावह कार दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल होने के बाद क्रिकेट के मैदान पर शीर्ष स्तर पर वापसी करना साधारण बात नहीं है। इस बात पर विश्वास करना मुश्किल है कि पंत को पिछला टेस्ट मैच खेले हुए 632 दिन बीत चुके हैं।

संयोग ने उन्होंने अपना पिछला टेस्ट भी बांग्लादेश के खिलाफ ही 2022 में खेला था। पंत अब इसी टीम के खिलाफ बृहस्पतिवार को एमए चिदंबरम स्टेडियम में वापसी करने को तैयार हैं। इस बीच टीम के क्रिकेट परिदृश्य में तो अधिक बदलाव नहीं आाय लेकिन टीम में जगह बनाने के कुछ मजबूत दावेदार सामने आए। इस साल की शुरुआत में इंग्लैंड के खिलाफ श्रृंखला में ध्रुव जुरेल ने अपनी विकेटकीपिंग और बल्लेबाजी से प्रभावित किया। अगर टीम प्रबंधन इस मैच के लिए जुरेल को ही खिलाने का फैसला करता तो कोई भी टीम को दोष नहीं दे सकता था लेकिन मुख्य कोच गौतम गंभीर ने पंत की अहमियत

के बारे में बताया। गंभीर ने मैच पूर्व प्रेस कांफ्रेंस में कहा, 'हम सभी जानते हैं कि वह (बल्लेबाज के तौर पर) कितना विध्वंसक हो सकता है और टेस्ट क्रिकेट में वह क्या कर सकता है। उसने दुनिया भर में हर जगह रन बनाए हैं।' उन्होंने कहा, 'हमेशा अच्छा होता है कि उसके जैसा कोई ऐसा खिलाड़ी हो जो हमारे लिए मैच में जीत की राह तैयार कर सके और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह बहुत प्रभाव भी डाल सके।' पंत ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी सफेद गेंद के प्रारूप के साथ की और वह टी20 विश्व कप जीतने वाली भारतीय टीम का भी हिस्सा थे लेकिन लंबे प्रारूप में कौशल और एकाग्रता को लेकर अलग तरह की चुनौती होती है। पंत ने हाल ही में बेंगलुरू में दलीप ट्रॉफी मैच में भारत बी के लिए खेलते हुए लाल गेंद के क्रिकेट के लिए तैयार होने की झलक पेश की। भारत ए के खिलाफ पहली पारी में 10 गेंदों पर सात रन बनाने के बाद पंत ने दूसरी पारी में 47 गेंद में नौ चौकों और दो छक्कों से 61 रन बनाकर अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया। पंत ने उस मैच में दूसरी पारी में पांच कैच सहित कुल सात कैच भी लपके। जुरेल इस दौरान भारत ए के लिए खेले लेकिन यह स्पष्ट था कि इस मुकाबले में नजरें पंत पर ही रहेंगी।

संभावित प्लेइंग 11

भारत- रोहित शर्मा (कप्तान), यशस्वी जयसवाल, शुबमन गिल, विराट कोहली, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रविचंद्रन अश्विन, रवींद्र जड़ेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव/आकाश यादव, मोहम्मद सिराज, जसप्रित बुमरा

बांग्लादेश- जाकिर हसन, शादमान इस्लाम, नजमुल हुसैन शान्तो (कप्तान), मोमिनुल हक, मुशिफकुर रहीम, शाकिब अल-हसन, लिटन दास (विकेटकीपर), मेहदी हसन मिराज, तस्कीन अहमद, हसन महमूद, नाहिद राणा

आईसीसी ने जारी की टी20 रैंकिंग, इंग्लैंड के लियाम लिविंगस्टोन बने नंबर-1 ऑलराउंडर

स्पोर्ट्स डेस्क - आईसीसी ने बुधवार को टी20 खिलाड़ियों की रैंकिंट जारी की। इंग्लैंड के हरफनमौला खिलाड़ी लियाम लिविंगस्टोन ने अपने शानदार प्रदर्शन की बदौलत रैंकिंग में लंबी छलांग लगाई और नंबर वन ऑलराउंडर बन गए हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हाल ही में समाप्त तीन मैचों की टी20 सीरीज में लियाम ने बैट और गेंद दोनों से बेहतरीन प्रदर्शन किया। उन्होंने दो मैचों में 124 रन और 5 विकेट अपने नाम किए। लियाम ने 47 गेंद में 87 रन की शानदार पारी खेली, इस दौरान उन्होंने 6 चौके और पांच छक्के भी जड़े। उनकी इस पारी की बदौलत इंग्लैंड ने दूसरे टी20 मैच में 194 रनों के लक्ष्य का पीछा कर लिया था। दो मैचों में कमाल का प्रदर्शन कर लियाम ने सात पायदान की बड़ी छलांग लगाई और नंबर वन ऑलराउंडर बन गए हैं। इस दौरान उन्होंने मार्कस स्टोयिस को पीछे छोड़ा है। मार्कस को दो स्थान का नुकसान हुआ है। वहीं टॉप-10 में हार्दिक पंड्या एकलौते भारतीय खिलाड़ी हैं। हार्दिक 199 अंक के साथ सातवें नंबर पर हैं। जबकि अक्षर पटेल 149 अंक के साथ 11वें स्थान पर हैं।

बांग्लादेश ने महिला टी20 विश्व कप 2024 के लिए टीम की घोषणा की, इसे मिली कप्तानी

ढाका। संयुक्त अरब अमीरात में आईसीसी महिला टी20 विश्व कप 2024 के लिए बांग्लादेश ने टीम का ऐलान कर दिया है और निगार सुल्ताना जोटी को कप्तानी सौंपी गई है। जोटी स्पिन विकल्पों से भरपूर टीम की अगुआई करेंगी जिसमें उनके 15 खिलाड़ियों की टीम में कई बाएं और दाएं हाथ के साथ-साथ ऑफ-ब्रेक और लेग-ब्रेक विकल्प भी शामिल हैं। नाहिदा अख्तर, शोरना अख्तर, राबेया, सुल्ताना खातून और फहीमा खातून टीम में स्पिन गेंदबाजी की रीढ़ हैं। दूसरी ओर, युवा मारुफा अख्तर, जहांआरा आलम, सुश्री रितु मोनी और सोभना मोस्टरी से तेज गेंदबाजी की जिम्मेदारी संभालने की उम्मीद है। आईसीसी की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि बांग्लादेश इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, वेस्टइंडीज और स्कॉटलैंड के साथ महिला टी20 विश्व कप 2024 के ग्रुप बी का हिस्सा है। महिला टी20 विश्व कप में बांग्लादेश का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 2014 में आया जब उन्होंने आयरलैंड और श्रीलंका के खिलाफ जीत हासिल की। इस साल के आयोजन में उनका पहला मैच 3 अक्टूबर को शारजाह में स्कॉटलैंड के खिलाफ टूर्नामेंट का उद्घाटन मैच होगा।

महिला टी20 विश्व कप के लिए बांग्लादेश की टीम

निगार सुल्ताना जोटी (कप्तान), नाहिदा अख्तर, मुर्शिदा खातून, शोर्ना अख्तर, मारुफा अख्तर, राबेया, रितु मोनी, शोभना मोस्टोरी, दिलारा अख्तर (विकेटकीपर), सुल्ताना खातून, जहांआरा आलम, फाहिमा खातून, ताज नेहर, दिशा बिस्वास, शांति रानी

पंजाब किंग्स के मुख्य कोच बने रिकी पोंटिंग, चार साल के लिए टीम ने किया अनुबंध

नयी दिल्ली । ऑस्ट्रेलिया के पूर्व महान बल्लेबाज और कप्तान रिकी पोंटिंग को पंजाब किंग्स का मुख्य कोच नियुक्त किया गया है। वह इस आईपीएल टीम में अपने हमवतन ट्रेवर बेलिस की जगह लेंगे। पोंटिंग सात साल तक दिल्ली कैपिटल्स का हिस्सा रहने के बाद पंजाब किंग्स से जुड़े हैं। आईपीएल के एक सूत्र ने पीटीआई को बताया, ''पोंटिंग ने कल अनुबंध पर हस्ताक्षर किए और यह चार साल का है। उसे टीम तैयार करने के लिए इतने समय की जरूरत पड़ेगी। बाकी के सहयोगी स्टाफ को लेकर फैसला पोंटिंग करेंगे।'' पोंटिंग के मार्गदर्शन में दिल्ली कैपिटल्स ने प्रभावी प्रदर्शन किया था लेकिन आईपीएल खिताब नहीं जीत पाई। टीम इस दौरान 2020 में फाइनल में भी पहुंची। वह इससे पहले मुंबई इंडियन्स के भी कोच रह चुके हैं। पंजाब की टीम भी 2008 में लीग की शुरुआत से आईपीएल खिताब नहीं जीत पाई है और टीम के चार सह मालिकों को उम्मीद होगी कि पोंटिंग इस कमी को पूरा करेंगे। पंजाब की टीम 2014 में फाइनल में पहुंची थी और उसे टीम में लगातार बदलाव करने के लिए आलोचनाओं का सामना करना पड़ता रहा है। टीम पिछले सात सत्र में शीर्ष पांच में भी जगह बनाने में नाकाम रही है और इस साल हुए पिछले सत्र में 10 टीमों के बीच नौवें स्थान पर रही। बेलिस पिछले दो सत्र में टीम के कोच रहे जबकि अब संन्यास ले चुके शिखर धवन ने कप्तान की भूमिका निभाई। संजय बांगड़ टीम के क्रिकेट विकास प्रमुख थे जबकि तेज गेंदबाजी और स्पिन कोच की भूमिका क्रमश- चार्ल्स लेंगवेल्ट और सुनील जोशी निभा रहे थे।

'फाइनल वास्तव में तनावपूर्ण था', एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी जीतने के बाद बोले हरमनप्रीत सिंह

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय हॉकी टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने कहा कि खिलाड़ियों के बीच आपसी एकजुटता और एक दूसरे का साथ देने की अदम्य इच्छा से भारत को रिकॉर्ड पांचवीं बार एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी जीतने में मदद मिली। भारत ने मंगलवार को हुलुनबिर में फाइनल में जुगराज सिंह के अंतिम क्षणों में किए गए गोल की मदद से चीन को 1-0 से हराया। पाकिस्तान ने दक्षिण कोरिया पर 5-2 से जीत के साथ कांस्य पदक जीता।

हॉकी इंडिया की विज्ञप्ति के अनुसार हरमनप्रीत ने कहा, 'फाइनल वास्तव में तनावपूर्ण था। चीन की टीम ने पूरे मैच के दौरान हमारे सामने कड़ी चुनौती पेश की जिससे गोल करने के लिए मौका बनाना आसान नहीं था।' उन्होंने कहा, 'लेकिन पिछले कुछ वर्षों में खिलाड़ियों का एक दूसरे पर भरोसा काफी बढ़ा है। हम एक दूसरे के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहते हैं। इस तरह की एकजुटता से हमें मैच जीतने में मदद मिलती है।'

भारतीय कप्तान ने कहा, 'पिछले साल चेन्नई में एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में स्वर्ण पदक, हांगझोउ एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक और पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने से टीम के अंदर गहरा सौहार्द पैदा हुआ है।' हरमनप्रीत ने इन प्रतियोगिताओं में आगे बढ़कर नेतृत्व किया। उन्होंने पेरिस ओलंपिक में 10 गोल किए। भारत ने एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में कुल 26 गोल किए जिनमें सात गोल हरमनप्रीत ने दागे। उन्होंने अपने सभी गोल पेनल्टी कार्नर पर किये। हरमनप्रीत ने कहा कि आगे भी इस सफलता को बरकरार रखना महत्वपूर्ण होगा।

उन्होंने कहा, 'हमें गर्व है कि हम अपना खिताब बचाने में सफल रहे लेकिन काम यहीं पर समाप्त नहीं हुआ है। अभी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें सुधार की जरूरत है। हमें एक टीम के रूप में मजबूत बनना होगा।' उप-कप्तान विवेक सागर ने कहा कि ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने के बाद प्रत्येक टीम का लक्ष्य भारत को हराना था। उन्होंने कहा, 'ग्रुप चरण में किसी भी टीम के खिलाफ खेलना आसान नहीं था। ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने के बाद प्रत्येक टीम ने भारत को हराना अपना लक्ष्य बनाया था। लेकिन हमारे प्रत्येक खिलाड़ी ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।'

भारत का ऑपरेशन सद्भाव... म्यांमार को 32 टन राहत सामग्री भेजी

नई दिल्ली । भारत ने एक सैन्य परिवहन विमान से म्यांमार को 32 टन राहत सामग्री भेजी है। यह राहत सामग्री तूफान से प्रभावित दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों की सहायता के लिए दो दिन पहले शुरू किए गए ऑपरेशन सद्भाव के तहत भेजी गई। तूफान यागी से म्यांमार, लाओस और वियतनाम के विभिन्न हिस्से भयंकर बाढ़ की चपेट में हैं। भारत पहले ही वियतनाम और लाओस को राहत सामग्री भेज चुका है। भारत ने आईएनएस सतपुड़ा के द्वारा म्यांमार को राशन, कपड़े और दवाइयों सहित 10 टन सहायता भेजी थी। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने बताया कि ऑपरेशन सद्भाव जारी है, भारत ने म्यांमार को सहायता की दूसरी खेप भेजी है। उन्होंने कहा कि वायुसेना का विमान म्यांमार के लोगों के लिए स्वच्छता किट व दवाओं सहित 32 टन राहत सामग्री ले जा रहा है। जायसवाल ने कहा कि नौसेना म्यांमार के लिए अतिरिक्त 10 टन राशन ले जा रही है। ऑपरेशन सद्भाव आसियान (दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्रों के संघ) क्षेत्र में मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचएडीआर) में योगदान के भारत के व्यापक प्रयास का हिस्सा है। इसके अलावा, भारत ने हाल में पड़े सूखे से निपटने में मदद के लिए नामीबिया को आज 1000 मीट्रिक टन चावल भेजा।

पंजाब में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर घुसपैठिए को बीएसएफ जवानों ने किया ढेर

अमृतसर। पंजाब में भारत-पाकिस्तान सीमा पर घुसपैठ कर रहे घुसपैठिए को सुरक्षा बल के जवानों ने ढेर कर दिया। बीएसएफ प्रवक्ता ने बताया कि जवानों ने विगत रात करीब 9.15 बजे अमृतसर जिले के रतनखुर्द गांव इलाके में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर भारत में घुसने वाले घुसपैठिए को देखा गया। इसके बाद जवानों ने उसे चुनौती दी, लेकिन इसके बाद भी घुसपैठिए आगे बढ़ता गया और आक्रामक होता दिखा। बीएसएफ प्रवक्ता ने बताया कि ड्यूटी पर तैनात जवानों ने आगे बढ़ रहे घुसपैठिए पर गोली चलाई और उसे मौके पर ही ढेर कर दिया। बीएसएफ के मुताबिक उसके पास 270 रुपए की पाकिस्तानी मुद्रा और 10 रुपए का आधा फटा हुआ नोट भी बरामद किया गया है। सुरक्षा बल ने बताया कि बाद में उसकी लाश घरिंडा पुलिस थाने को सौंप दी गई। बता दें बीएसएफ पंजाब में पाकिस्तान के साथ 553 किलोमीटर लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा की सुरक्षा करती है।

सेना का वाहन फिसलकर खाई में गिरा, एक कमांडो की मौत, 3 घायल

राजौरी। जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले में एक सेना का वाहन सड़क से फिसलकर गहरी खाई में जा गिरा। इस हादसे में चार जवान घायल हो गए। सूचना मिलते ही स्थानीय लोगों व बचावकर्मियों ने घायल जवानों को बाहर निकाला और अस्पताल में भर्ती कराया, जिसमें इलाज के दौरान लांसनायक बलजीत सिंह की मौत हो गई। वहीं तीन घायलों का इलाज जारी है। सेना के अधिकारी ने बताया कि जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले में मंगलवार रात गहरी खाई में सेना का वाहन गिरने से चार कमांडो घायल हो गए। उन्होंने बताया कि यह दुर्घटना सीमावर्ती जिले के मंजाकोट इलाके में हुई, वाहन भी क्षतिग्रहण हो गया है। उन्होंने बताया कि स्थानीय लोगों व बचावकर्मियों ने घायलो को बाहर निकाला और और अस्पताल पहुंचाया उनमें से दो की हालत गंभीर बताई थी। जिसमें लांसनायक बलजीत सिंह की मौत हो गई है। बता दें कि 9 सितंबर को जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले के नौशेरा सेक्टर में नियंत्रण रेखा पर भारतीय जवानों ने घुसपैठ की साजिश को नाकाम कर दिया है। घुसपैठ कर रहे दो आतंकियों को जवानों ने मार गिराया। जानकारी के मुताबिक खुफिया एजेंसियों और जम्मू-कश्मीर पुलिस को घुसपैठ का इनपुट मिला था, जिसके बाद एलओसी पर अलर्ट था। जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव के मद्देनजर सुरक्षा एजेंसियां हाई अलर्ट पर है। इससे पहले 30 अगस्त को भारतीय सेना के जवानों ने चुनाव से पहले एक बड़ी आतंकी साजिश को नाकाम किया था।

गणेश विसर्जन के दौरान कहीं पत्थरबाजी, तो कहीं छेड़छाड़ को लेकर चली लाठियां

नई दिल्ली। महाराष्ट्र के भिवंडी में गणेश प्रतिमा विसर्जन के दौरान पत्थर फेंके गए इस दौरान दो गुटों में टकराव की स्थित पैदा हो गई लेकिन पुलिस प्रशासन की सतर्कता से इस कंट्रोल कर लिया गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर घटना में शामिल असामाजिक तत्वों के खिलाफ कार्रवाई शुरु कर दी है। आरोपियों की शिनाख्त कर उनकी गिरफ्तारी की जाएगी। जॉइंट सीपी ज्ञानेश्वर चव्हाण ने कहा कि अतिरिक्त पुलिस इलाके में तैनात है। घटना स्थल से कई लोगों के हिरासत में लिया गया है जिनकी जांच पड़ताल पुलिस कर रही है। वहीं राजस्थान के बारां में गणेश प्रतिमा विसर्जन के दौरान दो पक्षों में मामूली विवाद ने हिंसा का रूप ले लिया। बच्चों के बीच हुए विवाद के बाद बंजारा और गुर्जर समाज के लोग आपस में भिड़ गए। इस लड़ाई में दोनों पक्षों के कुल 13 लोग घायल हुए हैं। इस दौरान गुस्साई भीड़ ने दो बाइकों में आग लगा दी। सीसवाली के थाना प्रभारी छोटूलाल ने बताया कि गणेश प्रतिमा विसर्जन किया जा रहा था। इस दौरान लड़की से छेड़छाड़ के आरोप पर एक पक्ष के युवकों की दूसरे पक्ष के युवकों से विवाद हो गया। इस विवाद को देखकर एक समाज के लोग आक्रोशित हो गए। वहीं दूसरे पक्ष के लोगों ने लाठियों से हमला कर दिया। पुलिया पर एक पक्ष के लोग अपनी बाइक छोड़ कर भाग गए। दोनों बाइकों को भीड़ ने आग लगा दी। पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच में जुट गई है।

'मैं दिल तुम धड़कन' के प्रमुख अभिनेता जोहैब अशरफ सिद्दीकी ने अपने किरदार के लिए ली अपने पिता से प्रेरणा

मुंबई : शेमारू उमंग अपने नए शो 'मैं दिल तुम धड़कन' के प्रीमियर के लिए पूरी तरह तैयार है, जिसे लेकर दर्शकों में भारी उत्साह है। यह नई और अनोखी कहानी एक आधुनिक ट्विस्ट के साथ यशोदा की कहानी को प्रस्तुत करती है। इस शो में राधिका मुथुकुमार वृंदा के किरदार में नजर आएंगी, जो आज के युग की यशोदा का प्रतिनिधित्व करती हैं, वहीं अनुभवी नीलू वाघेला, राजेश्वरी अग्रवाल के रूप में दिखाई देंगी। इस भावनात्मक यात्रा का हिस्सा बनें, इस 16 सितंबर से, हर सोमवार से शनिवार, रात 8 :30 बजे, सिर्फ शेमारू उमंग पर। इन सशक्त महिला किरदारों के साथ जोहैब अशरफ सिद्दीक ी भी केशव अग्रवाल की मुख्य भूमिका निभाते नजर आएंगे। केशव को एक मेहनती, भावुक और परिवार के प्रति समर्पित व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है, जो घर में शांति बनाए रखने को लेकर तत्पर रहता है और बच्चों से बहुत प्यार करता है। अपने किरदार को लेकर उत्साहित अभिनेता जोहैब अशरफ सिद्दीक ी ने बताया, ₹अक्सर बच्चे के जीवन में माँ की भूमिका को प्राथमिकता दी जाती है, लेकिन पिता की भूमिका को भी मान्यता देना जरूरी है। मेरे किरदार, केशव को जब सात साल बाद अपने बेटे के अस्तित्व के बारे में पता चलता है तो वह सबसे अच्छा पिता बनने की श्रेणी में शामिल हो जाते हैं और अपने बेटे के लिए सब कुछ कर गुजरने को तैयार है। यह पहली बार है जब मैं ऑनस्क्रीन पिता का किरदार निभा रहा हूं और यह मेरे लिए एक नया अनुभव है। मेरे अपने पिता ने मेरे जीवन पर जो सकारात्मक प्रभाव डाला, उससे मुझे बहुत प्रेरणा मिलती है। मुझे उम्मीद है कि मेरा यह किरदार दर्शकों से जुड़ पाएगा और दर्शकों को वास्तविक लगेगा। शो का नया प्रोमो एक नाटकीय मोड़ की झलक प्रस्तुत करता है, जिसमें वृंदा ने सात साल तक एक बच्चे को अपना मानकर पाला, जबकि वास्तव में वह केशव का बच्चा है ऐसे में वृंदा को कई भावनात्मक और कानूनी संघर्ष का सामना करना पड़ता है। इस खुलासे से कहानी में एक दिलचस्प मोड़ आता है। देखिए 'मैं दिल तुम धड़कन' शो इस 16 सितंबर से, हर सोमवार से शनिवार, रात 8 :30 बजे, सिर्फ शेमारू उमंग पर।

बेटियों के साथ दरिंदगी करने वालों का गैंग बन चुकी है सपा: सीएम योगी

लखनऊ/गाजियाबाद। (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सपा बेटियों के साथ दरिंदगी करने वालों का गैंग बन चुकी है। पिछले कुछ दिनों में बेटियों की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ करने वाले जितने भी दरिंदे पकड़े गए हैं, उन सबके संबंध समाजवादी पार्टी से हैं। उन्होंने कहा कि अपने संस्कार के अनुरूप सपा के नेता भारत की धर्म और संस्कृति के प्रतीक धर्माचार्यों को माफिया बोल रहे हैं। इनके अंदर औरंगजेब की आत्मा घुस चुकी है। सीएम योगी ने कहा कि कांग्रेस और सपा भस्मासुर हैं, जब भी जनता ने इन्हें शक्ति प्रदान की इन्होंने उसी शक्ति का दुरुपयोग जनता की आस्था पर प्रहार करने के लिए किया।

सीएम योगी बुधवार को गाजियाबाद के रामलीला ग्राउंड घंटाघर में आयोजित वृहद रोजगार मेला के कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने 10,000 से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र, 632 लाभार्थियों को ?327 करोड़ से अधिक का ऋण एवं 6,000 से अधिक युवाओं को टैबलेट/स्मार्टफोन का वितरण किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि प्रदेश में आयोजित हो रहे रोजगार मेला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मिशन रोजगार को एक नई ऊंचाई प्रदान कर रहा है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की जनता को आज भी 2017 के पहले की सरकारों की कारगुजारियां याद आती हैं।

सीएम योगी ने कहा कि माफिया और दंगाई विपक्षियों की कमाई का जरिया थे, जब किसी की कमाई पर हमला होता है तो उसका गैंग लीडर उग्र हो जाता है। फिर वह सामान्य शिष्टाचार को भूलकर अनर्गल प्रलाप करने लगता है। माफिया और दंगाई के गायब होने से आज उनके आका परेशान हो गए हैं। उन्होंने कहा कि सपा और कांग्रेस जाति के नाम पर वर्ग संघर्ष कराकर दंगाइयों को लूटपाट करने की छूट देंगे। सीएम योगी ने कहा कि डबल इंजन की सरकार समाजवादी पार्टी के इस मॉडल को ध्वस्त करने का कार्य करेगी। उन्होंने कहा कि आने वाले तीन वर्ष उत्तर प्रदेश के लिए महत्वपूर्ण हैं। तीन वर्ष में उत्तर प्रदेश को देश में नंबर एक की अर्थव्यवस्था बनाना है।

सीएम योगी ने कहा कि 2014 के पहले केंद्र की कांग्रेस सरकार हिंदुओं को दबाने के लिए कानून बना रही थी। रामसेतु को तोड़ने की योजना पर कार्य कर रही थी। अयोध्या में राम मंदिर बनने के मार्ग में बाधक बन रही थी। कश्मीर में उग्रवाद को पनपा रही थी। देश की सुरक्षा में सेंध लगा रही थी। वहीं 2017 के पहले उत्तर प्रदेश में सपा भी कांग्रेस के नक्शेकदम पर चल रही थी। गुंडागर्दी और अराजकता चरम पर थी। हर दूसरे दिन प्रदेश में कहीं न कहीं दंगे होते थे। उन्होंने कहा कि दुर्दांत अपराधी, वन माफिया, पशु माफिया और भू-माफिया के सामने सपा के नेता घुटने टेककर नाक रगड़ते थे।

सीएम योगी ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकारें प्रदेश के युवाओं का शोषण करती थीं। उनके कार्यकाल में किसान आत्महत्या के लिए मजबूर थे और व्यापारियों को पलायन करना पड़ता था। सपा के कारण ही कैराना और कांधला से हिंदू व्यापारियों को पलायन करना पड़ा था। बेटी की सुरक्षा खतरे में पड़ गई थी। उन्होंने कहा कि आज नए भारत के नए उत्तर प्रदेश में बेटी भी सुरक्षित है और व्यापारी का सम्मान होता है। युवाओं के लिए रोजगार है तो किसान भी आत्मसम्मान के साथ आगे बढ़ रहा है। सीएम योगी ने कहा कि अगर किसी ने युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया तो उसके भविष्य के साथ सरकार खिलवाड़ करेगी।

राहुल गांधी को जान से मारने की धमकी... कांग्रेस ने दर्ज कराया केस

नई दिल्ली। कांग्रेस ने बुधवार को तुगलक रोड थाने में एक शिकायत दर्ज कराई है, इसमें 4 भाजपा नेताओं पर राहुल गांधी के खिलाफ आपत्तिजनक और धमकी भरे बयान देने का आरोप लगा है। कांग्रेस के कोषाध्यक्ष और पूर्व केंद्रीय मंत्री अजय माकन ने शिकायत में रेल राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू के अलावा दिल्ली के पूर्व भाजपा विधायक, महाराष्ट्र के शिवसेना विधायक, और उत्तर प्रदेश के एक मंत्री का नाम लिया है। कांग्रेस नेता माकन ने कहा कि पिछले सप्ताह एक भाजपा नेता ने राहुल गांधी को जान से मारने की धमकी दी थी। उनके अनुसार, भाजपा नेता ने बयान दिया था कि राहुल गांधी संभल जाओ नहीं तुम्हारा वही हाल होगा जो तुम्हारी दादी का हुआ था। माकन ने बताया कि इस बयान का संदर्भ इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की शहादत से है। माकन ने कहा कि यह बयान राजनीति के न्यूनतम मानकों को भी पार कर गया है। उन्होंने भाजपा के वरिष्ठ नेताओं की आलोचना की, जिन्होंने न इस बयान की निंदा की और न ही इसके खिलाफ कोई कार्रवाई की। माकन ने आरोप लगाया कि भाजपा के एक सहयोगी ने राहुल गांधी की जुबान काटने पर 11 लाख रुपये देने का ऐलान किया है, जो उनके अनुसार, राजनीतिक असहिष्णुता का प्रतीक है। मानक ने कहा कि इतना ही नहीं भारत सरकार के एक मंत्री ने राहुल गांधी को आतंकवादी कहकर उन्हें निशाना बनाया है, क्योंकि राहुल गांधी द्वारा किए गए बयान और कार्य भाजपा नेताओं को पसंद नहीं आ रहे हैं। माकन ने इस गंभीर मुद्दे पर पुलिस से सख्त कार्रवाई की मांग कर कहा कि यह सीधे तौर पर जान से मारने की धमकी है। माकन ने स्पष्ट किया कि कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी धमकियों से डरने वाले नहीं हैं और गरीबों, पिछड़ों, और दलितों के हितों की आवाज उठाते रहने वाले है।

'क्या हिंसा और नफरत को ही लोकतंत्र का मूलमंत्र बनाना चाहते हैं आरएसएस-बीजेपी के लोग', राहुल के खिलाफ बयान पर बोलीं प्रियंका

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ भाजपा और एनडीए नेताओं द्वारा दिए जा रहे बयान को लेकर राजनीति तेज हो गई है। कांग्रेस जबरदस्त तरीके से पलटवार कर रही है। इन सब के बीच प्रियंका गांधी ने भी ट्वीट कर भाई का समर्थन किया है। प्रियंका ने एक्स पर लिखा कि नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी जी जैसे-जैसे मजबूती से जनता की आवाज उठा रहे हैं, वैसे-वैसे उनके खिलाफ जुबानी और वैचारिक हिंसा बढ़ रही है। उन्होंने पूछा कि क्या देश के करोड़ों दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों और गरीबों की आवाज उठाना इतना बड़ा अपराध है कि भाजपा, नेता प्रतिपक्ष को ÷उनकी दादी जैसा हाल÷ बना देने की धमकियां देने लगी?

कांग्रेस नेता ने कहा कि लगातार एक के बाद एक हिंसक, अभद्र और अमानवीय बयानों से यह साबित होता है कि यह एक संगठित-सुनियोजित अभियान है जो देश के लोकतंत्र के लिए बेहद खतरनाक है। उससे भी ज्यादा खतरनाक है प्रधानमंत्री, गृहमंत्री समेत समूचे आरएसएस-बीजेपी नेतृत्व का इसे शह देना और कोई कार्रवाई न करना। उन्होंने सवाल किया कि आरएसएस-बीजेपी के लोग क्या अब हिंसा और नफरत को ही लोकतंत्र का मूलमंत्र बनाना चाहते हैं? कांग्रेस नेता मनीष तिवारी ने कहा कि राहुल गांधी जी के परिवार ने इस देश के लिए जान न्योछावर की है। देश की एकता और अखंडता के लिए पूर्व पीएम इंदिरा गांधी जी, राजीव गांधी जी ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया है।

उन्होंने कहा कि राहुल गांधी के लिए की गई टिप्पणियां अभद्र और निंदनीय हैं। मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से कहना चाहता हूं कि ऐसे तत्वों और राजनेताओं के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें। सचिन पायलट ने कहा कि नेता विपक्ष राहुल गांधी पर सरकार के मंत्री और बीजेपी के सहयोगी दलों के नेताओं द्वारा की गई ओछी टिप्पणी सही नहीं है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि रवनीत बिट्टू बीजेपी में अपनी वफादारी साबित करने के लिए ऐसे बयान दे रहे हैं। ये सब जानबूझकर किया गया है। इस मामले में सरकार और बीजेपी को तत्काल माफी मांगनी चाहिए।

कांग्रेस ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ विवादित बयान और 'जान से मारने की धमकी देने'' देने के लिए बुधवार को यहां केन्द्रीय मंत्री रवनीत बिट्टू समेत भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और शिवसेना के चार नेताओं के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई तथा प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की। पार्टी के कोषाध्यक्ष अजय माकन ने यहां तुगलक रोड थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। कांग्रेस ने बिट्टू, भाजपा नेता तरविंदर मारवाह, उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री रघुराज सिंह तथा शिवसेना के विधायक संजय गायकवाड़ के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 351, 352, 353, 61 के तहत प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की है।

महाराष्ट्र मंत्रिमंडल में आरपीआई-ए को जगह नहीं मिलने के लिए अजित पवार जिम्मेदार : आठवले

पालघर (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले ने दावा किया कि अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के महायुति सरकार में शामिल होने के कारण उनकी रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया-आठवले (आरपीआई-ए) को वादे के बावजूद राज्य में कोई मंत्री पद नहीं मिला। आठवले ने यह भी विश्वास जताया कि सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन आगामी चुनावों में राज्य की 288 विधानसभा सीट में से 150-160 पर जीत दर्ज करेगा।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री आठवले ने मंगलवार को पालघर के दहानू में पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा, ''अजित पवार के महायुति सरकार में शामिल होने के बाद आरपीआई-ए को महाराष्ट्र मंत्रिमंडल में मंत्री पद नहीं मिल सका। हमारी पार्टी को मंत्रिमंडल में पद, दो निगमों की अध्यक्षता और जिला स्तरीय समितियों में भूमिका देने का वादा किया गया था, लेकिन अजित पवार के शामिल होने के कारण यह संभव नहीं हो सका।'' उन्होंने कहा, ''महाराष्ट्र में आगामी विधानसभा चुनावों में आरपीआई-ए को 12 सीट पर लड़ने का मौका दिया जाना चाहिए। हमें राज्य मंत्रिमंडल में भी प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए।''

अजित पवार नीत राकांपा पिछले साल जुलाई में महाराष्ट्र में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली सरकार में शामिल हो गई थी। आरपीआई-ए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का हिस्सा है। मराठा आरक्षण पर आठवले ने दावा किया कि उनकी पार्टी इस मुद्दे को उठाने वाली पहली पार्टी थी। उन्होंने कहा कि मराठों को एक अलग श्रेणी के तहत आरक्षण प्रदान किया जाना चाहिए, क्योंकि उन्हें अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) में शामिल करने पर समूह के विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

आठवले ने कहा, ''महाराष्ट्र सरकार को तमिलनाडु की आरक्षण प्रणाली का अध्ययन करना चाहिए और हर साल आठ लाख रुपये से कम कमाने वाले आर्थिक रूप से कमजोर मराठा समुदाय के लोगों को आरक्षण दिया जाना चाहिए।'' आठवले ने वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024 को अपना समर्थन दिया। अपने मंत्रालय की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि इसकी कल्याणकारी पहलों से भारत की 45 प्रतिशत आबादी को लाभ मिलता है। आठवले ने कहा कि मंत्रालय ने युवाओं में मादक पदार्थों के सेवन की प्रवृत्ति को रोकने के उद्देश्य से राष्ट्रव्यापी नशामुक्ति अभियान शुरू किया है। उन्होंने कहा कि मंत्रालय ने 51 करोड़ बैंक खाते खोले हैं और मुद्रा योजना तथा उज्ज्वला गैस योजना जैसी पहल के माध्यम से 46 करोड़ व्यक्तियों को लाभ पहुंचाया है।

अभिषेक बनर्जी की हड़ताली चिकित्सकों से अपील, काम पर लौटें

कोलकाता । पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज की घटना के बाद चिकित्सकों की हड़ताल बीतेएक माह से जारी है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के साथ बैठक के बाद भी चिकित्सकों का धरना-प्रदर्शन जारी है। अब, तृणमूल कांग्रेस के सांसद और महासचिव अभिषेक बनर्जी ने धरना दे रहे चिकित्सकों से हड़ताल वापस लेने की अपील की है। उन्होंने पोस्ट कर चिकित्सकों से खास अपील की। उन्होंने कहा कि ममता सरकार ने हड़ताली चिकित्सकों की मांगें मान ली है, इसकारण अब उन्हें हड़ताल वापस लेने पर विचार करना चाहिए। उन्होंने लिखा, मैंने पहले दिन से ही चिकित्सकों की सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं का समर्थन किया है। मैंने हमेशा यह माना है कि प्रदर्शनकारियों की कुछ मांगों को छोड़कर उनकी अधिकांश चिंता सही और न्यायोचित हैं। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के बाद ममता सरकार द्वारा प्रस्तुत किए गए कागजातों के अनुसार, चिकित्सकों की सुरक्षा में सुधार के लिए अधिकांश उपाय प्रगति पर हैं। इन उपायों में पूरे पश्चिम बंगाल के मेडिकल कॉलेजों और अस्पतालों में सीसीटीवी कैमरे लगाना और बुनियादी ढांचागत विकास शामिल हैं। यह कार्य 14 दिनों के भीतर पूरा होने की उम्मीद है। उन्होंने चिकित्सकों से हड़ताल वापस लेने की अपील करते हुए कहा, चिकित्सकों को अब सद्भावना के तहत हड़ताल वापस लेकर लोगों की सेवा करने के लिए, जुट जाना चाहिए। अंत में इतना ही कहूंगा कि सीबीआई को जवाबदेह ठहराना और यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि कोई भी अपराधी बच नहीं सके। उन्हें जल्दी से जल्दी सजा दी जाए। सीबीआई का रिकॉर्ड खुद ही सब कुछ बताता है। पिछले 10 सालों में, उन्होंने अपनी एक भी जांच पूरी नहीं की है। न्याय में देरी न्याय नहीं मिलने के बराबर है।

केरल सरकार ने चार अक्टूबर से विधानसभा का सत्र आहूत करने का निर्णय लिया

तिरुवनंतपुरम । (एजेंसी)। केरल सरकार ने 15वीं विधानसभा का 12वां सत्र चार अक्टूबर से आहूत करने का बुधवार को निर्णय लिया। मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) के अनुसार, मुख्यमंत्री पिनराई विजयन की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान से उक्त तिथि पर सत्र आहूत करने का अनुरोध करने का निर्णय लिया गया। मंत्रिमंडल ने राज्य में छह अस्थायी अदालतों को नियमित न्यायिक प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट अदालतों में परिवर्तित करने समेत कई निर्णय लिए।

एक बयान में कहा गया है कि तिरुवनंतपुरम, अलप्पुझा, कोट्टायम, एर्नाकुलम, कोझीकोड और कन्नूर में अस्थायी अदालतों को नियमित न्यायिक प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट अदालतों में परिवर्तित किया जाएगा। इसके लिए 21 नए पद सृजित किए जाएंगे। सीएमओ ने एक बयान में कहा कि न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948 के तहत आने वाले श्रमिकों के वेतन में संशोधन के संबंध में एक नया उपभोक्ता मूल्य सूचकांक तैयार करने के लिए एक पारिवारिक बजट सर्वेक्षण किया जाएगा और मंत्रिमंडल ने इस संबंध में निर्णय लिया है।

बयान में कहा गया है कि अर्थशास्त्र और सांख्यिकी विभाग की सिफारिशों के अनुसार 2023-24 को आधार वर्ष मानते हुए प्रस्तावित सर्वेक्षण किया जाएगा। बयान के अनुसार इस संबंध में मुद्दों पर गौर करने के लिए एक राज्य स्तरीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक संशोधन समिति गठित की जाएगी। मंत्रिमंडल ने कोझीकोड में साइबर पार्क के विस्तार तहत उसके निकट स्थित 20 सेंट भूमि को अपने कब्जे में लेने की प्रशासनिक मंजूरी भी दी।

बंगाल के कई इलाकों में भारी बारिश, डीवीसी से पानी छोड़े जाने के कारण बाढ़ का खतरा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल और झारखंड में भारी बारिश के बाद बांधों से पानी छोड़े जाने के बाद पश्चिम बंगाल के हावड़ा, हुगली, बीरभूम, पश्चिम मिदनापुर, पूर्वी मिदनापुर, झारग्राम, बांकुरा, पुरुलिया, पश्चिम बर्दवान और पूर्वी बर्दवान जिलों में बाढ़ जैसी स्थिति पैदा हो गई है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के सलाहकार अलपन बंद्योपाध्याय ने कहा कि भारी बारिश हुई है और डीवीसी दामोदर नदी पर पंचेत बांध और बराकर नदी पर मैथन बांध से पानी छोड़ रहा है। पश्चिम बंगाल के गंगा तट पर बने गहरे दबाव के कारण सप्ताहांत और सोमवार को दक्षिण बंगाल में भारी बारिश हुई। मौसम प्रणाली सोमवार को झारखंड की ओर बढ़ गई। हिमाचल प्रदेश में बारिश के कारण कुल 54 सड़कों पर आवाजाही बंद है और बिजली आपूर्ति बाधित है। राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र (एसईओसी) ने यह जानकारी दी। स्थानीय मौसम विज्ञान केंद्र ने बुधवार को राज्य के छह जिलों के अलग-अलग इलाकों में आंधी और आकाशीय बिजली गिरने का 'येलो' अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के आंकड़ों के अनुसार, सोमवार शाम से राज्य में मौसम काफी हद तक शुष्क रहा हालांकि बैजनाथ और डलहौजी जैसे कुछ स्थानों को छोड़कर, जहां क्रमशः चार मिलीमीटर (मिमी) और एक मिमी बारिश हुई।

उत्तर प्रदेश में पिछले 24 घंटों के दौरान बारिश से जुड़ी घटनाओं में दो लोगों की मौत हो गयी और राज्य के 24 जिले बाढ़ से प्रभावित हैं। राहत आयुक्त कार्यालय द्वारा मंगलवार को जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले 24 घंटों (रविवार शाम छह बजे से सोमवार शाम छह बजे तक) के दौरान फतेहपुर और रायबरेली में डूबने से दो लोगों की मौत हो गई। रिपोर्ट के अनुसार, गंगा नदी कछला ब्रिज (बदायूं), गाजीपुर, बलिया व फतेहगढ़ में खतरे के निशान से ऊपर बह रही है जबकि घाघरा नदी का जलस्तर एल्गिन ब्रिज (बाराबंकी), (तुर्तीपार), बलिया और अयोध्या में खतरे के निशान को पार कर गया है।

रुस में फंसे भारतीयों में से एक वापस लौटा, पीएम मोदी का माना आभार

- बोला-अकल्पनीय कठिनाइयों का किया सामना, गोली लगने से हो गया था घायल

अवंतीपोरा (एजेंसी)। मोदी सरकार की पहल के बाद रूस में फंसे 45 भारतीयों को छुड़ाकर वापस देश लाया गया है। वहीं विदेश मंत्रालय ने कहा है कि जल्द ही 50 और लोगों को वापस लाने की कोशिश की जा रही है। इन भारतीय नागरिकों को रूसी सेना में शामिल कर लिया गया था। ये लोग अपनी मर्जी से यूक्रेन के साथ युद्ध में रूस की तरफ से लड़ने सेना में शामिल हुए थे लेकिन अब वह वापस लौटना चाह रहे हैं। पीएम मोदी ने रूसी राष्ट्रपति पुतिन से इस मुद्दे पर बातचीत की थी। पुतिन ने उन्हें वापस भारत भेजने का आश्वासन भी दिया था।

रुप से रिहा होने वाले भारतीयों में दक्षिण कश्मीर के अवंतीपोरा जिले के रहना वाला आजाद यूसुफ भी शामिल है, जिसने युद्धग्रस्त क्षेत्र में फ्रंटलाइन युद्ध प्रशिक्षण के दौरान गोली लगने से गंभीर रुप से घायल हो गया था। मोदी सरकार की पहल के बाद वह वापस अपने घर लौट रहा है और इस बात से खुश है कि वह करीब दो साल बाद अपने परिवार से मिल पाएगा।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक आजाद ने बताया कि रूसी कमांडर ने रुसी और टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में कुछ नाम पढ़े और फिर हमसे कहा भारतीय वापस जाओ। हमें यकीन ही नहीं हुआ कि वह वास्तव में हमारी आजादी के बारे में बात कर रहा था। रूसी अधिकारी ने पुतिन और पीएम नरेंद्र मोदी के बीच एक बैठक का जिक्र किया, जिसमें कहा गया कि इससे उनकी यात्रा की स्थिति प्रभावित हुई है। आज़ाद ने कहा कि उसने कुछ ऐसा कहा कि राष्ट्रपति पुतिन ने मोदी से मुलाकात की और अब आपका अनुबंध रद्द हो रहा है। पीएम मोदी के प्रति अपनी गहरी प्रशंसा व्यक्त करते हुए उसने कहा कि मुझे लगता है कि यह पीएम मोदी की रूस यात्रा थी जिसने उसे सुरक्षित घर पहुंचने में मदद की।

आजाद ने बताया कि छह अन्य भारतीय रंगरूटों के साथ अकल्पनीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। हम भाषा नहीं बोल सकते थे और मदद के लिए कोई नहीं था. अपने प्रशिक्षण के कुछ ही दिनों बाद मेरे पैर में गोली लग गई और मुझे 18 दिन तक अस्पताल में बिताने पड़े। यह एक कयामत की तरह था। मुझे बंदूक चलाना नहीं आता था और इसी वजह से मैं घायल हो गया। मैंने गुजरात के अपने करीबी दोस्त और साथी भारतीय रंगरूटों की मौत भी देखी। गोली लगने के बाद अस्पताल ले जाते समय, मेरी आंखें बंद हो रही थीं लेकिन मेरे साथ मौजूद डॉक्टर ने मुझे थप्पड़ मारा और कहा कि आंखें बंद न करो मेरा बहुत खून बह गया था। मैंने भी हिम्मत नहीं हारी और ठीक होकर अपने वतन वापस आ गया हूं।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रधान संपादक-देवेंद्र सिंह*** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**